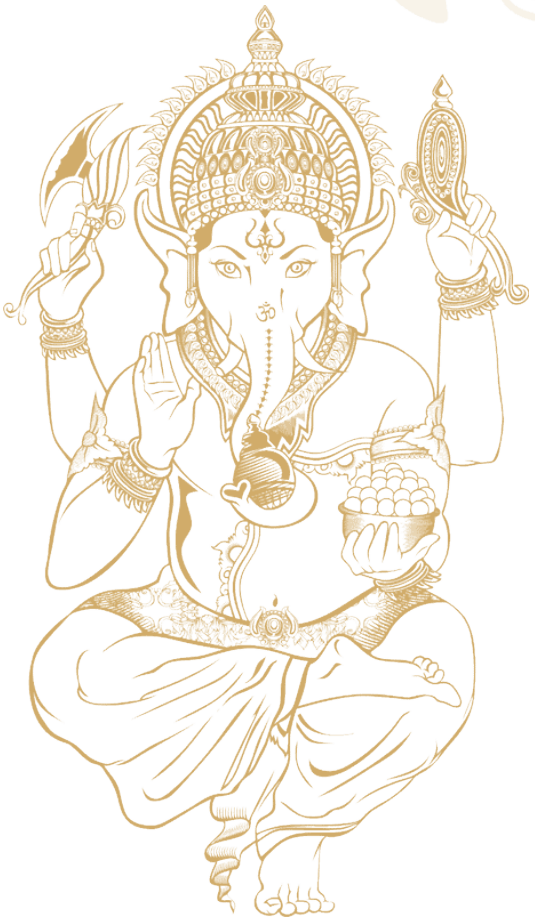

Mr. Pravin Sonawane

02 Apr 1992

09:12 PM

Bir

Model: Web-BhriguPatrika **Order No: 120752801**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/04/1992**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**21:12:00 घंटे**
इष्ट	37:09:40 घटी
स्थान	**Bir**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:59:00 उत्तर
रेखांश	75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	20:45:20 घंटे
वेलान्तर	-00:03:32 घंटे
साम्पातिक काल	09:30:15 घंटे
सूर्योदय	06:20:08 घंटे
सूर्यास्त	18:40:37 घंटे
दिनमान	12:20:29 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	19:23:47 मीन
लग्न के अंश	25:04:25 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 3**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	ब्रह्म
करण	चतुष्पाद
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	झ-झूलेलाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	चैत्र	13
पंजाबी	संवत : 2048	चैत्र	20
बंगाली	सन् : 1398	चैत्र	19
तमिल	संवत : 2048	पंगुनी	20
केरल	कोल्लम : 1167	मीनम	20
नेपाली	संवत : 2048	चैत्र	20
चैत्रादि	संवत : 2048	चैत्र	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2048	फाल्गुन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 09:52:22
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: उ०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:21:32 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____: 23:03:27 घंटे
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण _____: शकुनि
करण समाप्ति काल _____: 09:52:22 घंटे
जन्म करण _____: चतुष्पाद
भयात _____: 45:33:42
भभोग _____: 63:27:31
भोग्य दशा काल _____: शनि 5 वर्ष 4 मा 22 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

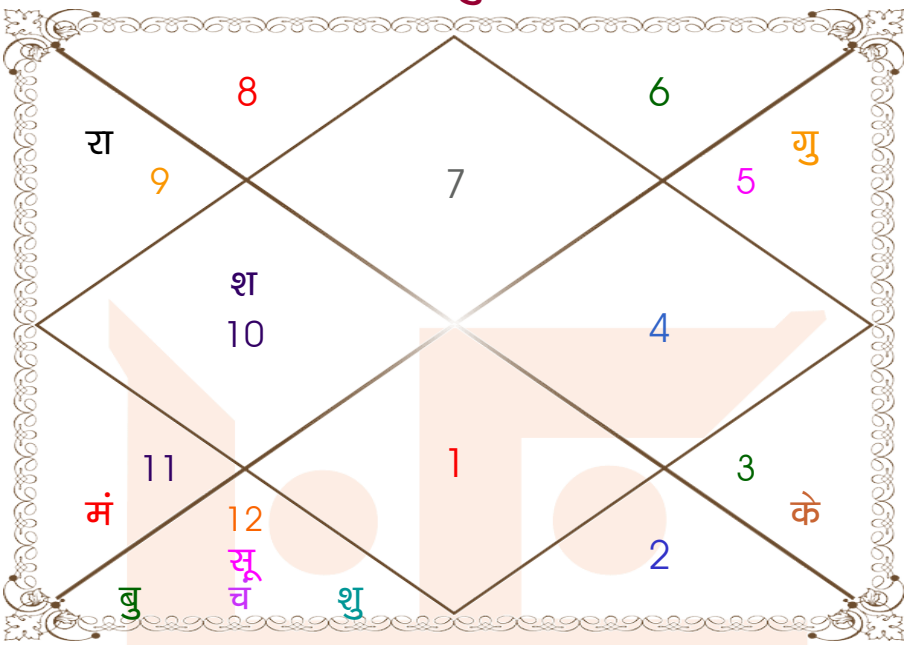

चन्द्र कुंडली

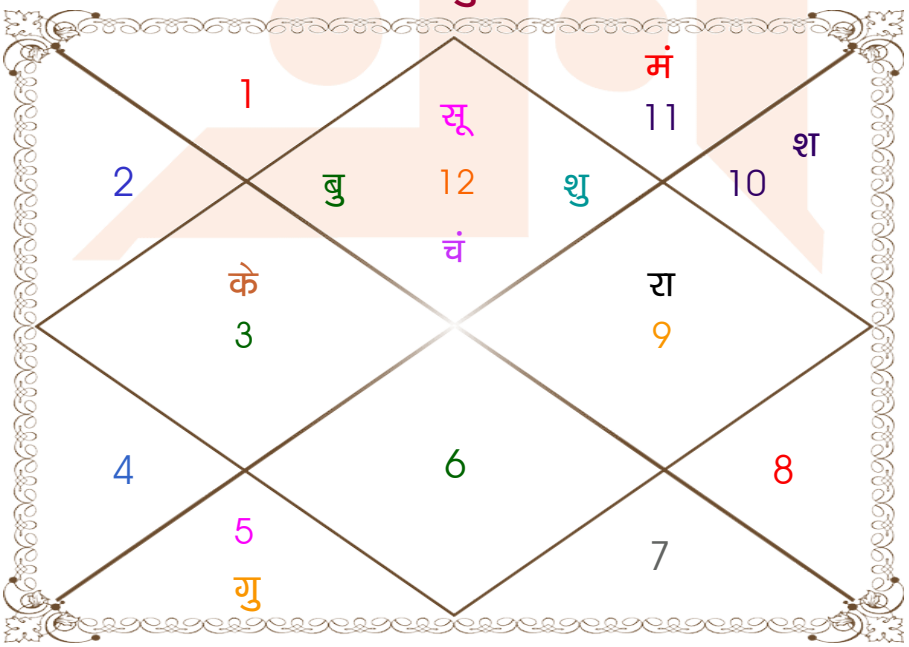

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

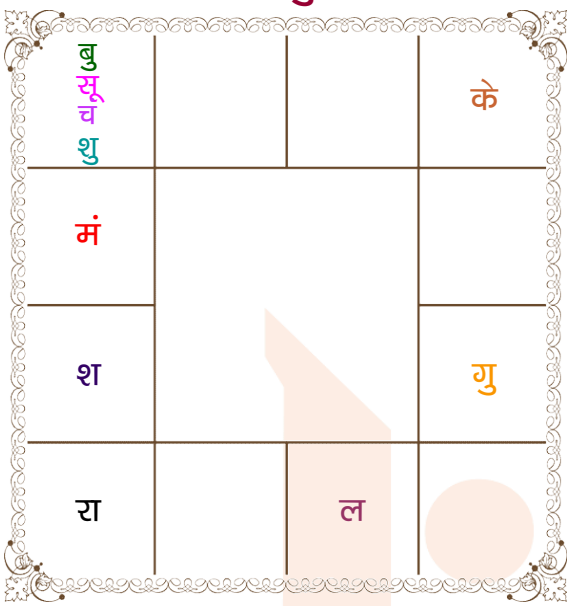

लग्न कुंडली

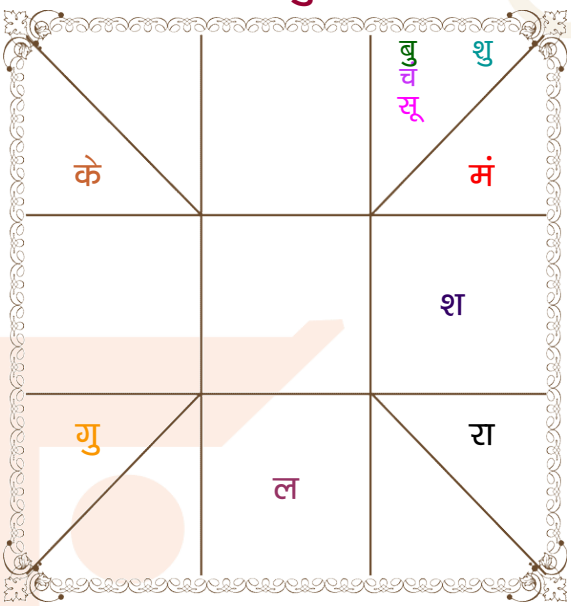

विंशोत्तरी
शनि 5वर्ष 4मा 22दि

शनि

02/04/1992

25/08/2098

शनि	25/08/1997
बुध	25/08/2014
केतु	25/08/2021
शुक्र	25/08/2041
सूर्य	26/08/2047
चन्द्र	25/08/2057
मंगल	25/08/2064
राहु	25/08/2082
गुरु	25/08/2098

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 5मा 1दि

भद्रिका

03/09/2024

03/09/2029

भद्रिका	14/05/2025
उल्का	15/03/2026
सिद्धा	05/03/2027
संकटा	14/04/2028
मंगला	03/06/2028
पिंगला	13/09/2028
धान्या	12/02/2029
भ्रामरी	03/09/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	25:04:25	324:30:39	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
सूर्य			मीन	19:23:47	00:59:10	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			मीन	12:52:49	12:39:36	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	सम राशि
मंगल			कुंभ	10:33:49	00:46:31	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
बुध	व	अ	मीन	06:57:40	00:35:16	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	नीच राशि
गुरु	व		सिंह	12:04:41	00:04:59	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मित्र राशि
शुक्र			मीन	00:30:41	01:14:03	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	उच्च राशि
शनि			मक	22:18:20	00:04:56	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
राहु	व		धनु	10:36:35	00:13:22	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	नीच राशि
केतु	व		मिथु	10:36:35	00:13:22	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	नीच राशि
हर्ष			धनु	24:06:18	00:00:59	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
नेप			धनु	25:07:01	00:00:35	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	28:48:31	00:01:11	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	---
दशम भाव			कर्क	26:24:30	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:12

लग्न-चलित

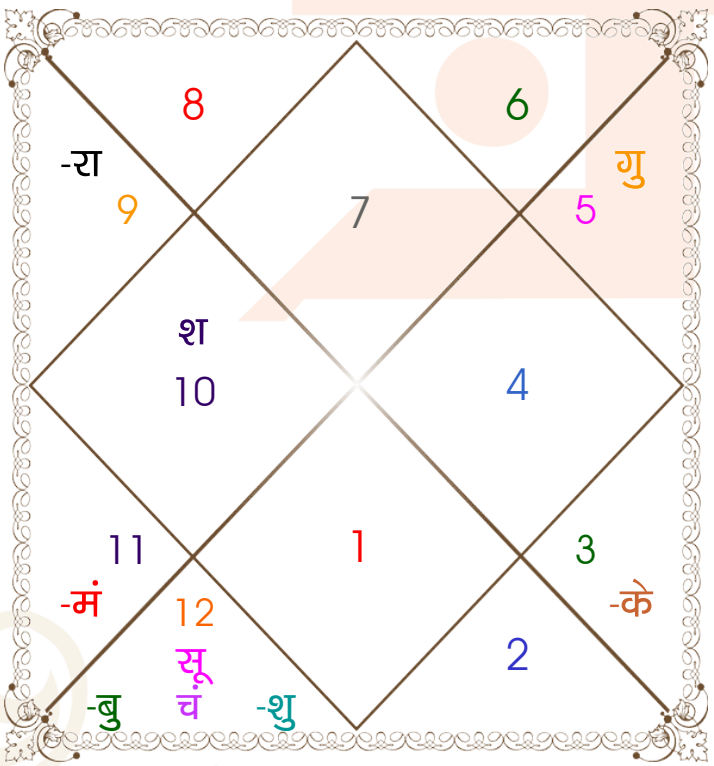

चन्द्र कुंडली

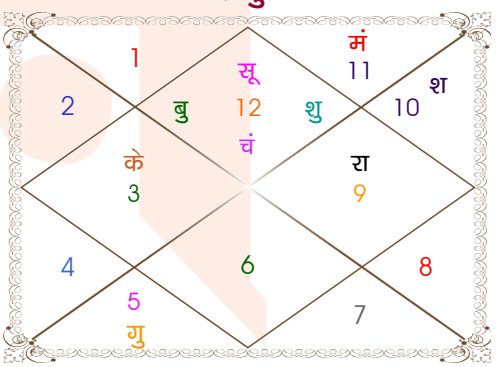

नवमांश कुंडली

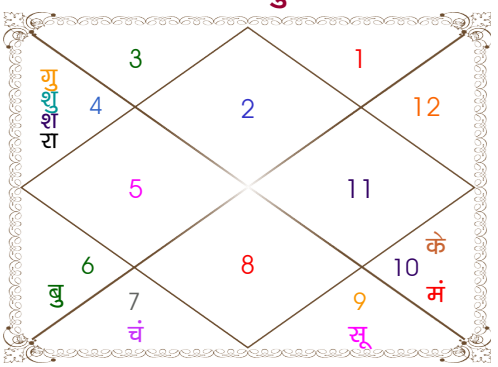

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	10:17:46	तुला	25:04:25
2	वृश्चिक	10:17:46	वृश्चिक	25:31:06
3	धनु	10:44:27	धनु	25:57:48
4	मकर	11:11:09	मकर	26:24:30
5	कुम्भ	11:11:09	कुम्भ	25:57:48
6	मीन	10:44:27	मीन	25:31:06
7	मेष	10:17:46	मेष	25:04:25
8	वृष	10:17:46	वृष	25:31:06
9	मिथुन	10:44:27	मिथुन	25:57:48
10	कर्क	11:11:09	कर्क	26:24:30
11	सिंह	11:11:09	सिंह	25:57:48
12	कन्या	10:44:27	कन्या	25:31:06

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	25:04:25
2	वृश्चिक	24:17:04
3	धनु	24:36:01
4	मकर	26:24:30
5	कुम्भ	28:32:10
6	मीन	28:29:19
7	मेष	25:04:25
8	वृष	24:17:04
9	मिथुन	24:36:01
10	कर्क	26:24:30
11	सिंह	28:32:10
12	कन्या	28:29:19

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

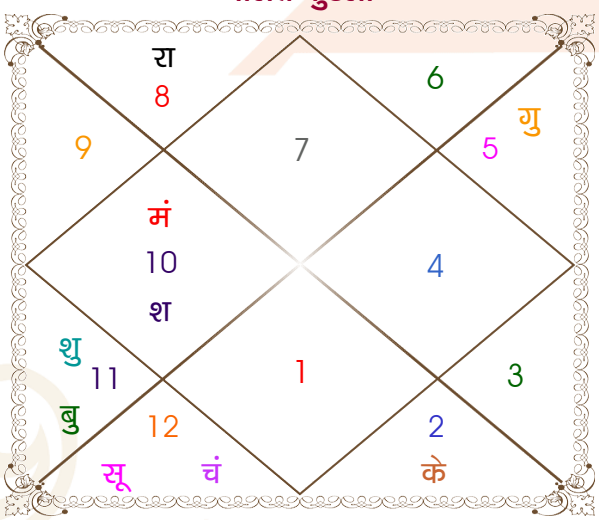

भाव कुंडली

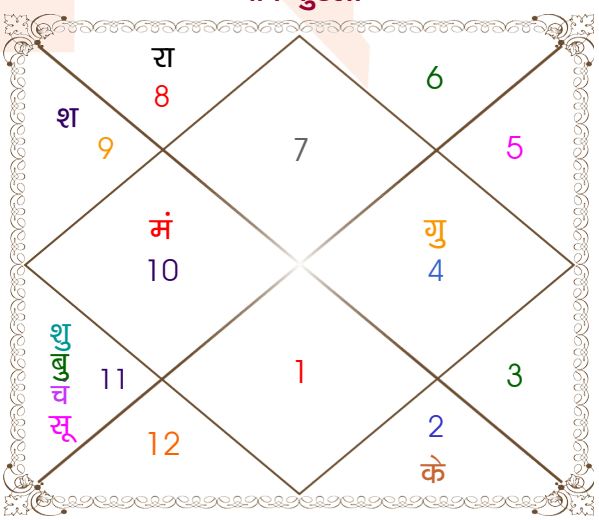

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	कुमार	मुदित	प्रकाश	8.86	42 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	शक्त	उपवेशन	3.25	79 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	कुमार	शक्त	नृत्यलिप्सा	5.58	20 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	नृत्यलिप्सा	0.00	28 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	मुदित	आगमन	5.56	86 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	दीप्त	प्रकाश	20.47	43 %
शनि	आत्मा	आयु	कुमार	स्वस्थ	आगम	3.65	43 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	भीत	आगमन	0.00	0 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.00	0 %
कुल						47.36	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

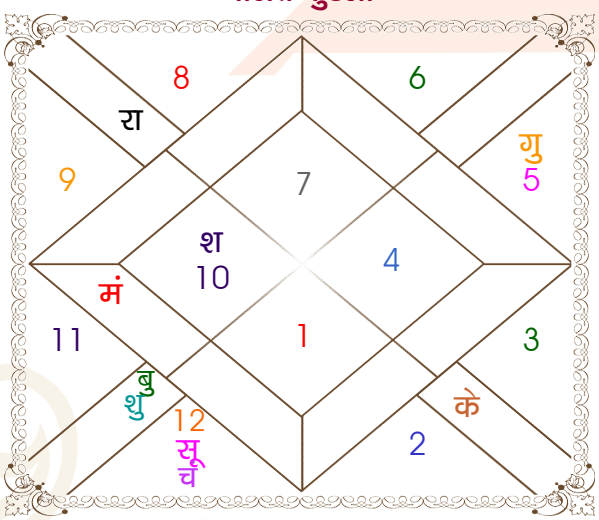

लग्न-चलित

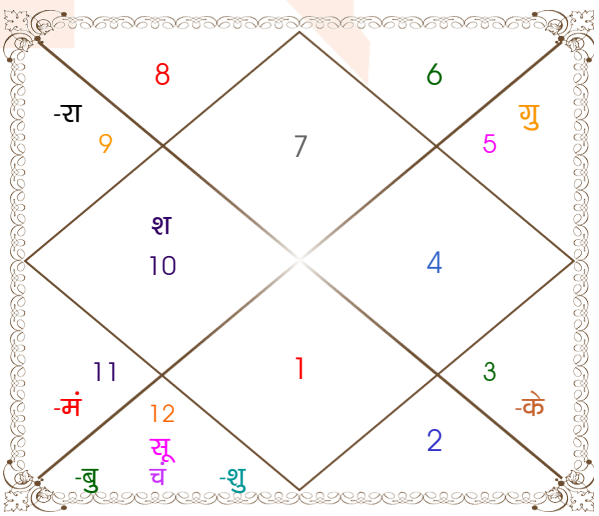

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

सुदर्शन चक्र

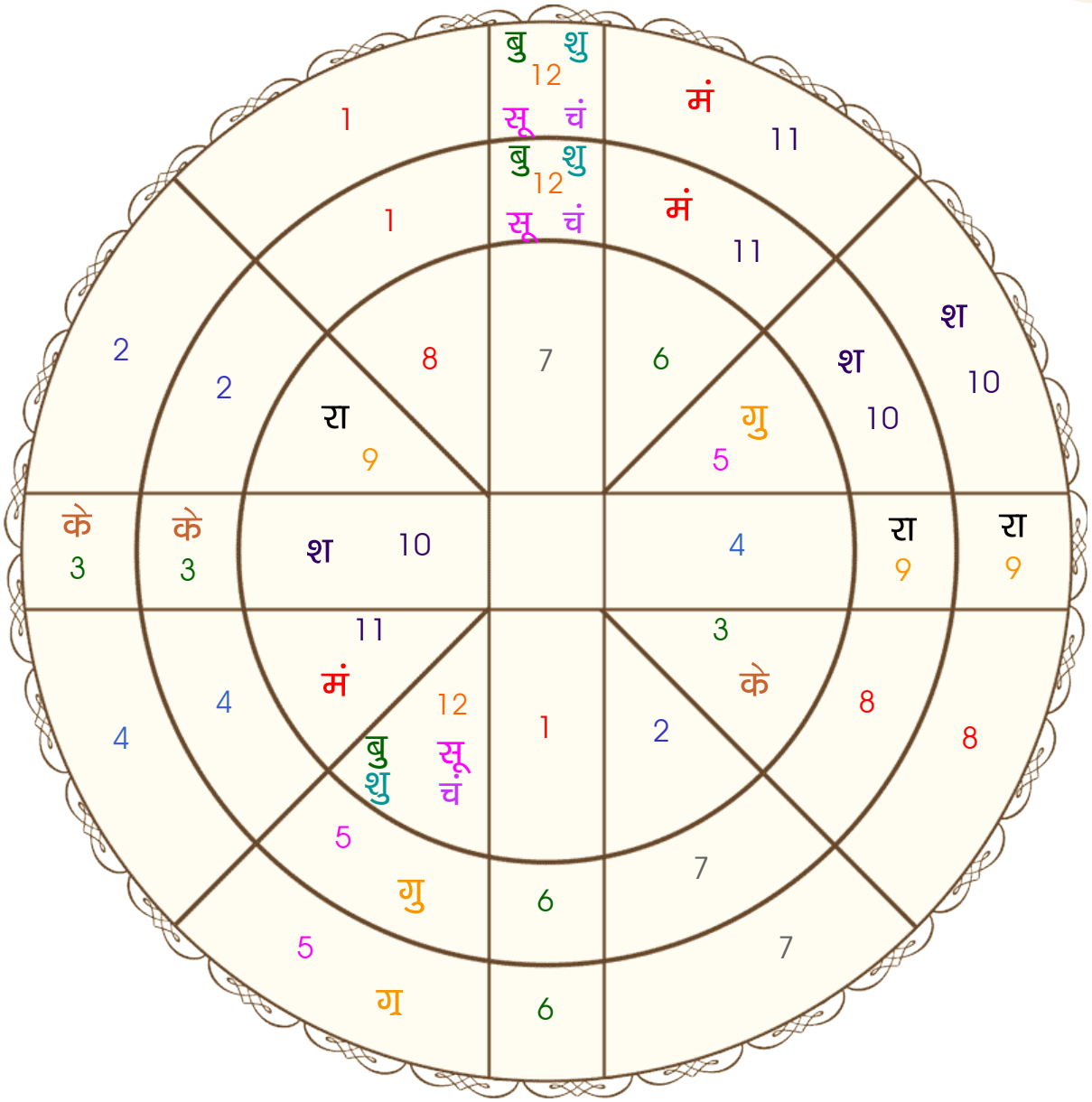

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 5 वर्ष 2 मास 27 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	19:30:16	गुरु	बुध	शुक्र	शुक्र
चंद्र		मीन	12:59:18	गुरु	शनि	राहु	राहु
मंगल		कुंभ	10:40:19	शनि	राहु	शनि	शनि
बुध	व	मीन	07:04:10	गुरु	शनि	बुध	शनि
गुरु	व	सिंह	12:11:10	सूर्य	केतु	बुध	सूर्य
शुक्र		मीन	00:37:11	गुरु	गुरु	मंगल	राहु
शनि		मक	22:24:49	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
राहु	व	धनु	10:43:05	गुरु	केतु	शनि	चंद्र
केतु	व	मिथु	10:43:05	बुध	राहु	शनि	शनि
हर्ष		धनु	24:12:48	गुरु	शुक्र	बुध	बुध
नेप		धनु	25:13:30	गुरु	शुक्र	बुध	राहु
प्लूटो	व	तुला	28:55:01	शुक्र	गुरु	सूर्य	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	25:10:54	शुक्र	गुरु	बुध	राहु
2	वृश्चि	24:23:33	मंगल	बुध	राहु	राहु
3	धनु	24:42:30	गुरु	शुक्र	बुध	सूर्य
4	मक	26:30:59	शनि	मंगल	गुरु	शनि
5	कुंभ	28:38:40	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
6	मीन	28:35:49	गुरु	बुध	शनि	केतु
7	मेष	25:10:54	मंगल	शुक्र	बुध	राहु
8	वृष	24:23:33	शुक्र	मंगल	राहु	राहु
9	मिथु	24:42:30	बुध	गुरु	बुध	चंद्र
10	कर्क	26:30:59	चंद्र	बुध	गुरु	शनि
11	सिंह	28:38:40	सूर्य	सूर्य	मंगल	गुरु
12	कन्या	28:35:49	बुध	मंगल	शनि	केतु

के.पी. अयनांश : 23:38:43

फॉरच्युना : तुला 18:39:56

लग्न कुंडली

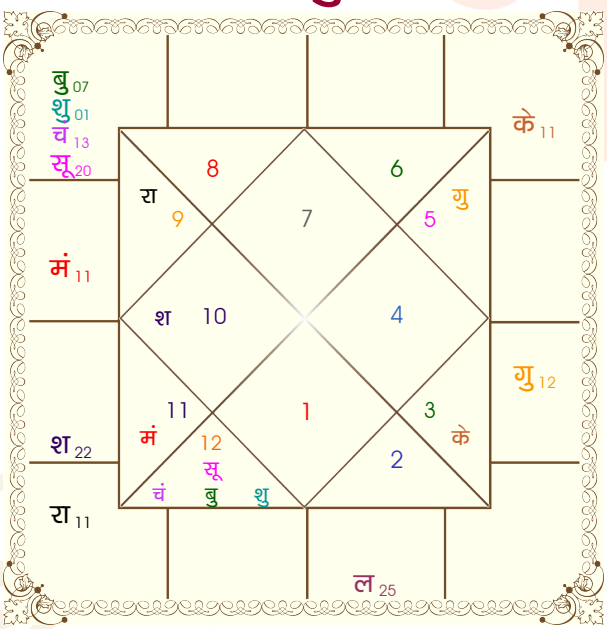

भाव कुंडली

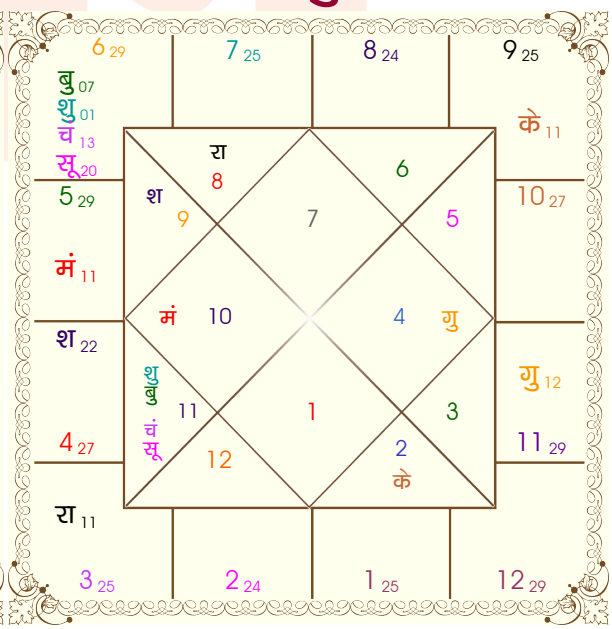

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र-
2	मंगल+ राहु, केतु,
3	चंद्र, बुध, गुरु- शुक्र- शनि,
4	चंद्र- मंगल, बुध- शनि-
5	सूर्य+ चंद्र+ बुध+ शुक्र, शनि+
6	गुरु- शुक्र-
7	मंगल-
8	गुरु, शुक्र- राहु, केतु,
9	सूर्य- बुध-
10	चंद्र- गुरु, शुक्र, शनि-
11	सूर्य-
12	सूर्य- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5+ 9- 11- 12-
चंद्र	3, 4- 5+ 10-
मंगल	2+ 4, 7-
बुध	3, 4- 5+ 9- 12-
गुरु	3- 6- 8, 10,
शुक्र	1- 3- 5, 6- 8- 10,
शनि	3, 4- 5+ 10-
राहु	2, 8,
केतु	2, 8,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	शु
2	मं के	रा	--	मं
3	चं बु	श	शु	गु
4	--	मं	चं बु	श
5	सू श	सू चं बु शु	चं बु	श
6	--	--	शु	गु
7	--	--	--	मं
8	गु रा	के	--	शु
9	--	--	सू	बु
10	शु	गु	श	चं
11	--	--	--	सू
12	--	--	सू	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	11	मीन	5
चंद्र	10	---	मीन	5
मंगल	2,7	4,8,12	कुम्भ	4
बुध	9,12	2,6,10	मीन	5
गुरु	3,6	1,5,9	सिंह	10
शुक्र	1,8	3,7	मीन	5
शनि	4,5	---	मकर	3
राहु	---	---	धनु	2
केतु	---	---	मिथुन	8

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	9,12	2,6,10	5	1,8	3,7	5
चंद्र	4,5	---	3	---	---	2
मंगल	---	---	2	4,5	---	3
बुध	4,5	---	3	9,12	2,6,10	5
गुरु	---	---	8	9,12	2,6,10	5
शुक्र	3,6	1,5,9	10	2,7	4,8,12	4
शनि	10	---	5	1,8	3,7	5
राहु	---	---	8	4,5	---	3
केतु	---	---	2	4,5	---	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	349.40	342.88	310.56	336.96	132.08	330.51	292.31	250.61	70.61	264.11	265.12	208.81
सूर्य	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--
349.40	0.00	7.76	0.00	2.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	--	युति	षष्ठ	युति	--	--	चतु	--	--	--
342.88	7.76	0.00	0.00	8.14	0.31	2.72	0.00	0.00	2.49	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	पंच	--	--	--
310.56	0.00	0.00	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	युति	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	--
336.96	2.65	8.14	0.00	0.00	0.00	7.80	0.00	0.00	1.73	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	सप्त	--	--	--	--	5वां	--	5वां	5वां	--
132.08	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00	0.00	9.88	0.00	3.06	2.04	0.00
शुक्र	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--
330.51	0.00	2.72	0.00	7.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	3रा	3रा	--	अष्ट	--	--	--	--	--	--	--	10वा
292.31	9.54	5.51	0.00	0.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.77
राहु	--	चतु	तृती	चतु	--	--	--	--	सप्त	युति	युति	--
250.61	0.00	2.49	3.00	1.73	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	1.57	0.52	0.00
केतु	--	--	--	--	तृती	--	--	सप्त	--	सप्त	सप्त	--
70.61	0.00	0.00	0.00	0.00	2.78	0.00	0.00	10.00	0.00	1.57	0.52	0.00
हर्ष	चतु	--	--	पंचा	--	--	--	युति	सप्त	--	युति	--
264.11	0.99	0.00	0.00	0.22	0.00	0.00	0.00	1.57	1.57	0.00	9.94	0.00
नेप	चतु	--	अष्ट	पंचा	--	तृती	--	युति	सप्त	युति	--	--
265.12	0.22	0.00	0.76	0.97	0.00	0.47	0.00	0.52	0.52	9.94	0.00	0.00
प्लूटो	--	अष्टां	--	--	--	पंच	--	--	--	तृती	तृती	--
208.81	0.00	0.11	0.00	0.00	0.00	2.71	0.00	0.00	0.00	1.00	1.70	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	205.07	235.52	265.96	296.41	325.96	355.52	25.07	55.52	85.96	116.41	145.96	175.52
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
349.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.01
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त
342.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.45	0.00	0.54	0.00	0.00	0.00	2.45
मंगल	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	4था	अष्टां	सप्त	8वां	8वां
310.56	0.00	0.00	0.00	0.88	0.00	1.00	0.00	0.05	0.81	0.88	0.42	0.05
बुध	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
336.96	0.00	0.00	0.00	0.00	4.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.07	0.00
गुरु	पंचा	--	5वां	--	--	--	9वां	--	--	--	युति	--
132.08	0.01	0.00	1.16	0.00	0.00	0.00	2.08	0.00	0.00	0.00	1.16	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--
330.51	0.00	0.00	0.00	0.00	8.89	0.00	0.44	0.78	1.11	0.00	8.89	0.00
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--
292.31	9.58	0.00	0.00	9.09	0.00	9.44	0.00	2.00	0.00	9.09	0.00	0.00
राहु	--	--	--	अष्ट	--	--	अष्टां	--	--	--	--	--
250.61	0.00	0.00	0.00	0.31	0.00	0.00	0.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	अष्टां	--	--	--	--	--	--	--	--	अष्ट	--	--
70.61	0.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.31	0.00	0.00
हर्ष	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
264.11	0.00	0.00	9.81	0.00	2.65	2.80	2.90	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
265.12	0.00	0.00	9.96	0.00	2.93	2.98	3.00	0.81	9.96	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
208.81	9.24	0.00	2.21	2.43	2.21	0.00	9.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	205.07	234.28	264.60	296.41	328.54	358.49	25.07	54.28	84.60	116.41	148.54	178.49
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त
349.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.80	0.00	0.86	0.62	0.00	0.00	5.80
चंद्र	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--	सप्त	--
342.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.69	0.00	0.00	0.59	0.00	0.00	0.69	0.00
मंगल	--	--	--	युति	--	--	--	4था	अष्टां	सप्त	8वां	--
310.56	0.00	0.00	0.00	0.88	0.00	0.00	0.00	1.34	0.06	0.88	3.06	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
336.96	0.00	0.00	0.00	0.00	6.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.35	0.00
गुरु	पंचा	--	5वां	--	--	9वां	9वां	--	--	--	--	--
132.08	0.01	0.00	2.57	0.00	0.00	1.47	2.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--
330.51	0.00	0.00	0.00	0.00	9.79	0.00	0.44	0.00	0.07	0.00	9.79	0.00
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--
292.31	9.58	0.00	0.00	9.09	0.00	7.98	0.00	2.61	0.00	9.09	0.00	0.00
राहु	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--
250.61	0.00	0.00	1.06	0.31	0.00	0.00	0.67	0.00	1.06	0.00	0.00	0.00
केतु	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	अष्ट	--	--
70.61	0.67	0.00	1.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.31	0.00	0.00
हर्ष	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
264.11	0.00	0.00	9.99	0.00	1.20	1.23	2.90	0.96	9.99	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
265.12	0.00	0.00	9.99	0.00	1.88	1.91	3.00	0.26	9.99	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--
208.81	9.24	0.00	1.36	2.43	2.99	0.88	9.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

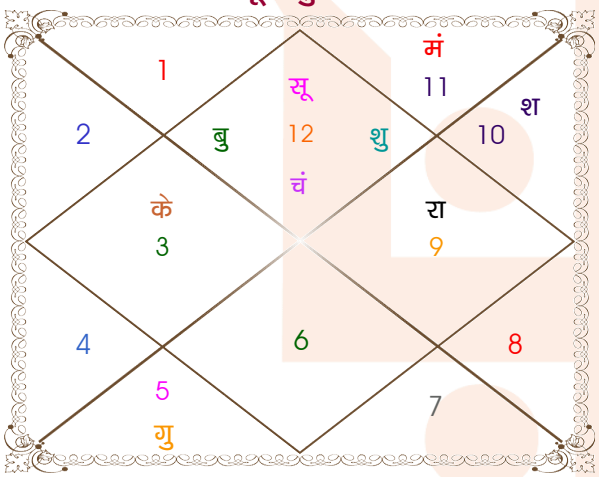

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

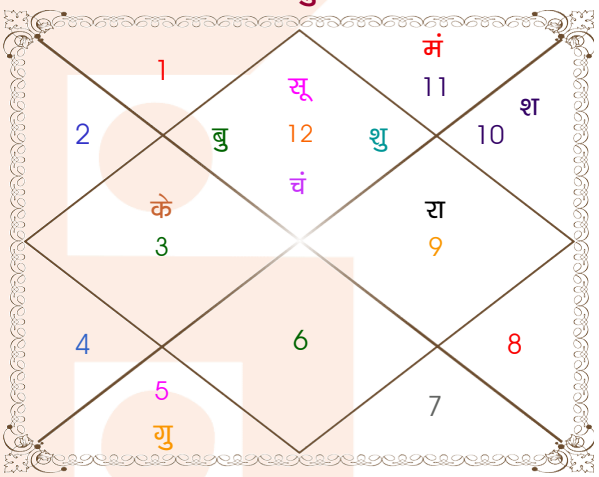

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

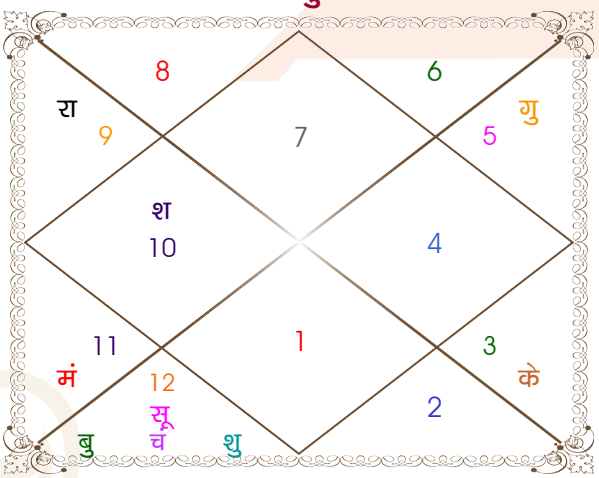

देह विचारः

होरा कुंडली

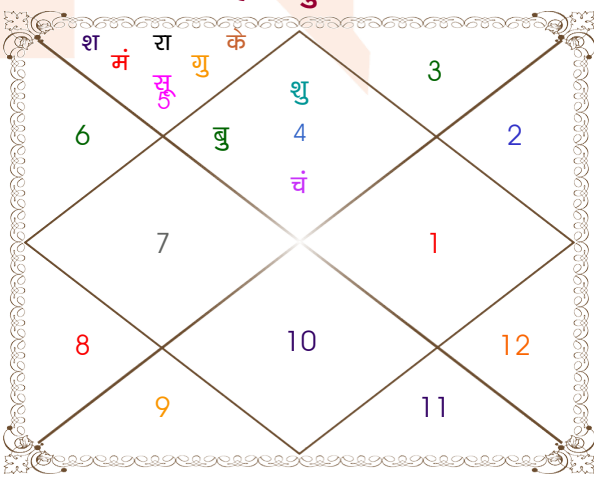

सम्पदाविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

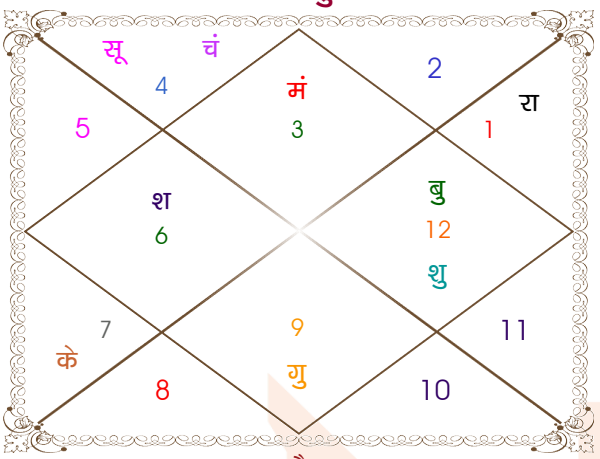

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

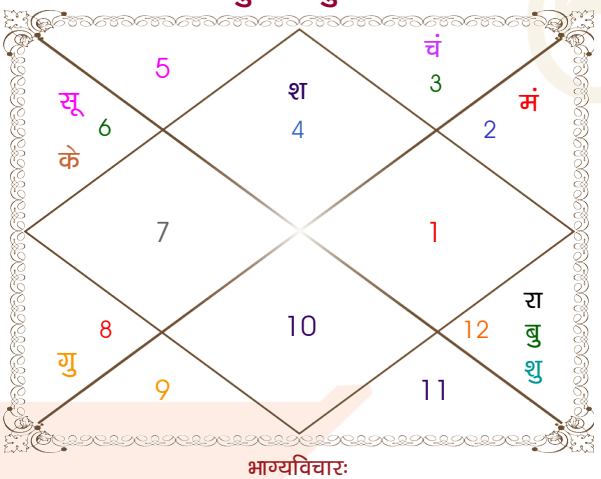

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

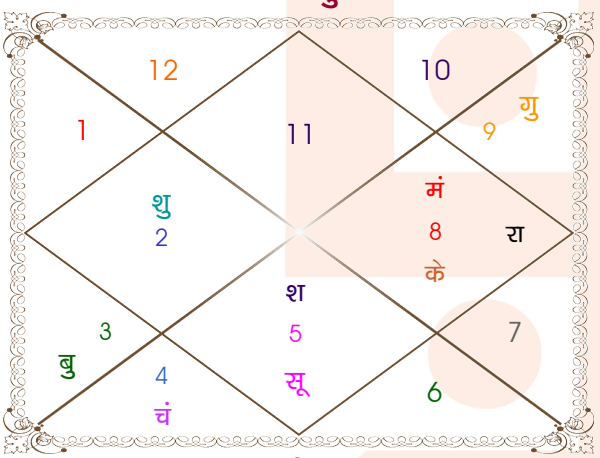

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

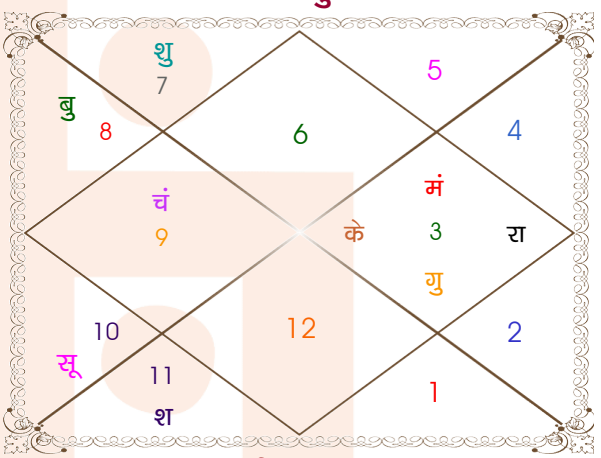

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

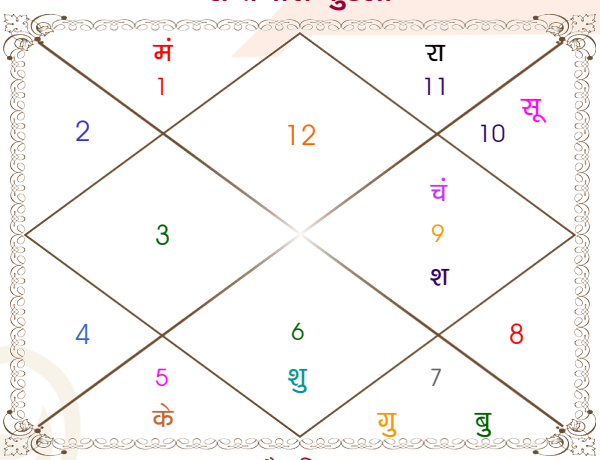

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

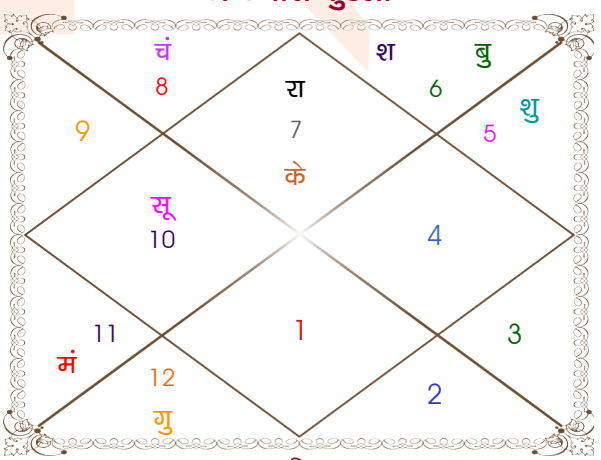

आयुविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

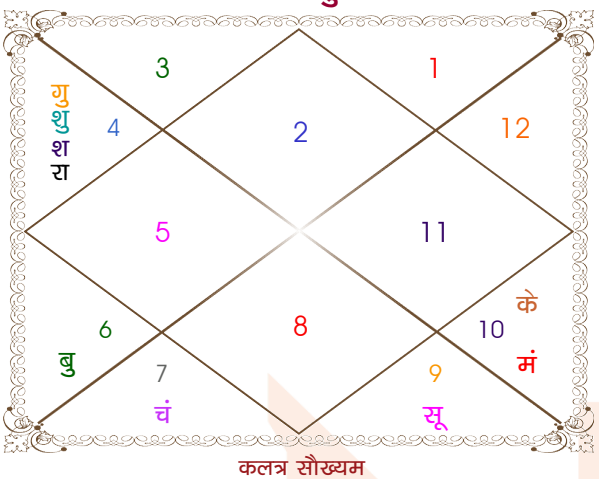

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

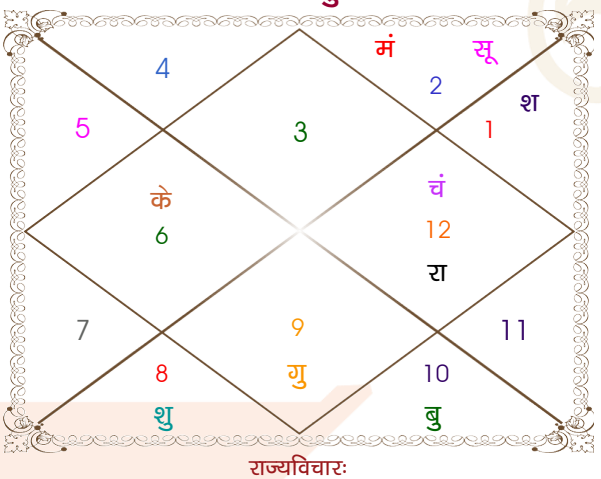

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

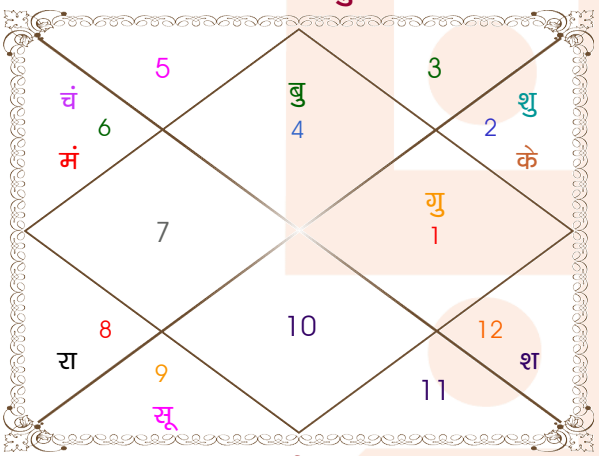

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

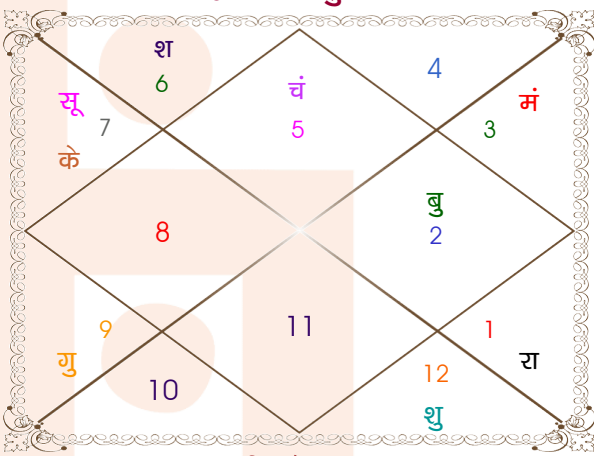

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

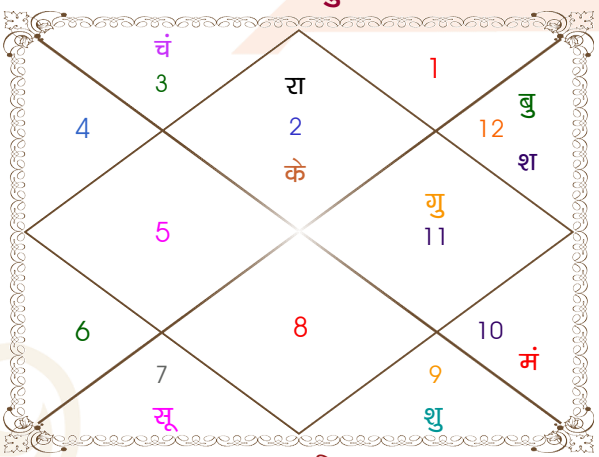

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

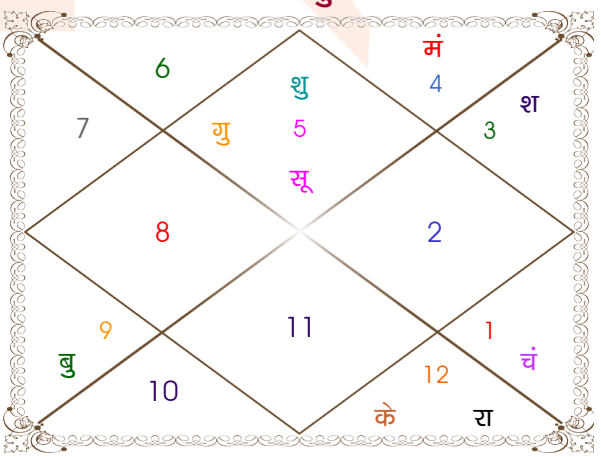

उपासनाज्ञानम्

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

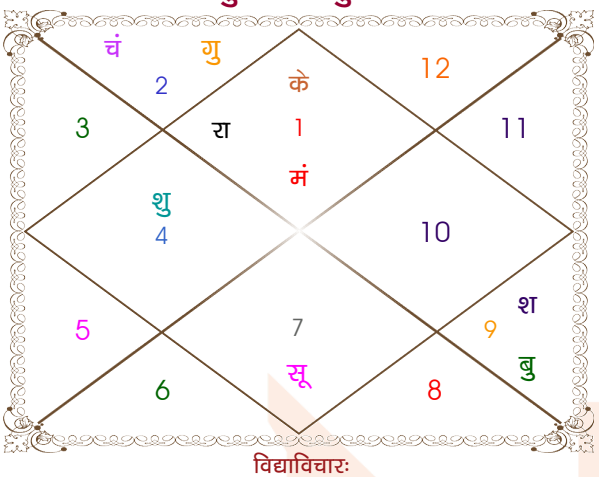

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

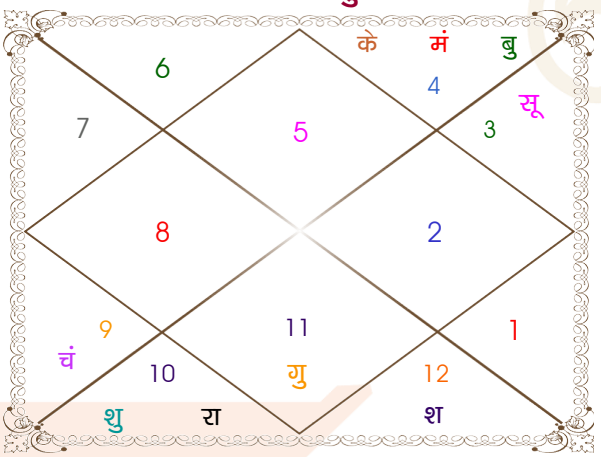

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

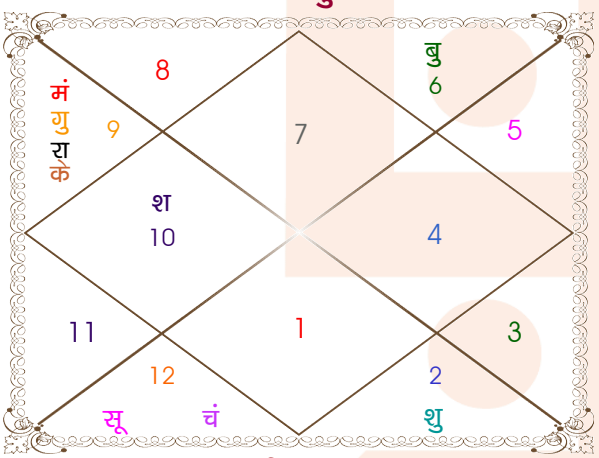

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

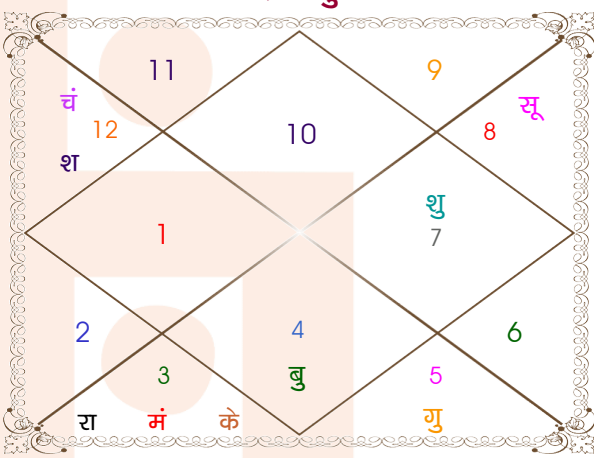

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

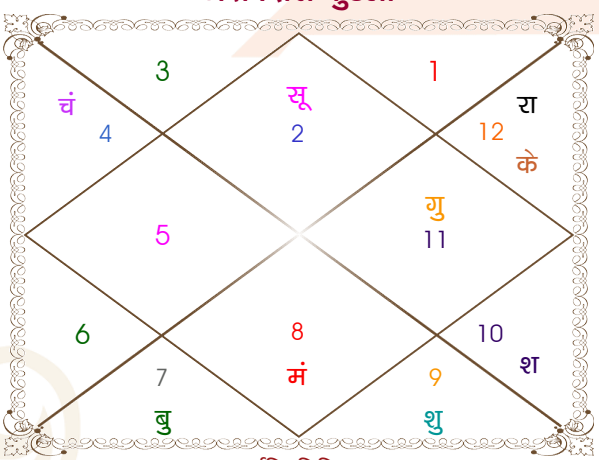

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

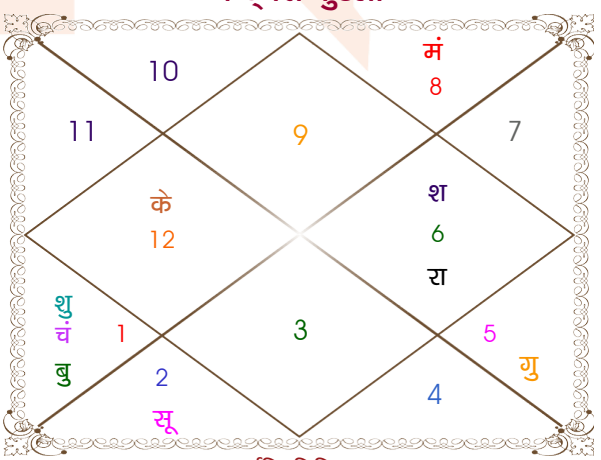

सर्वास्थितिविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	मीन	मीन	कुंभ	मीन	सिंह	मीन	मक	धनु	मिथु
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मिथु	कर्क	कर्क	मिथु	मीन	धनु	मीन	कन्या	मेष	तुला
चतुर्थांश	कर्क	कन्या	मिथु	वृष	मीन	वृश्चि	मीन	कर्क	मीन	कन्या
सप्तमांश	मीन	मक	धनु	मेष	तुला	तुला	कन्या	धनु	कुंभ	सिंह
नवमांश	वृष	धनु	तुला	मक	कन्या	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	मक
दशमांश	मिथु	वृष	मीन	वृष	मक	धनु	वृश्चि	मेष	मीन	कन्या
द्वादशांश	सिंह	तुला	सिंह	मिथु	वृष	धनु	मीन	कन्या	मेष	तुला
षोडशांश	वृष	तुला	मिथु	मक	मीन	कुंभ	धनु	मीन	वृष	वृष
विंशांश	सिंह	सिंह	मेष	कर्क	धनु	सिंह	सिंह	मिथु	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	मेष	तुला	वृष	मेष	धनु	वृष	कर्क	धनु	मेष	मेष
सप्तविंशांश	सिंह	मिथु	धनु	कर्क	कर्क	कुंभ	मक	मीन	मक	कर्क
त्रिंशांश	तुला	मीन	मीन	धनु	कन्या	धनु	वृष	मक	धनु	धनु
खवेदांश	मक	वृश्चि	मीन	मिथु	कर्क	सिंह	तुला	मीन	मिथु	मिथु
अक्षवेदांश	वृष	वृष	कर्क	वृश्चि	तुला	कुंभ	धनु	मक	मीन	मीन
षष्ट्यंश	धनु	वृष	मेष	वृश्चि	मेष	सिंह	मेष	कन्या	कन्या	मीन

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	6 केरल
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	4 चामर	4 चामर	5 सिंहान	5 कन्दुक
शुक्र	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	6 केरल
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.50	11.20	13.55	11.00	13.50	6.95	15.90	8.95	12.90
सप्तवर्ग	10.50	10.55	14.43	11.05	12.38	7.38	14.63	10.10	12.38
दशवर्ग	8.38	11.40	15.73	11.85	12.40	10.50	15.00	11.55	14.18
षोडशवर्ग	8.80	10.88	15.93	11.43	10.80	9.63	14.30	11.35	13.40

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	53	43	56	3	48	51	29
सप्तवर्गज बल	69	83	105	84	114	53	124
ओजयुग्मक बल	15	15	15	0	15	30	0
केन्द्र बल	15	15	30	15	30	15	60
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	153	156	206	102	207	149	213
कुल दिग्बल	18	45	5	16	36	49	29
नतोन्नत बल	17	43	43	60	17	17	43
पक्ष बल	58	116	58	58	2	2	58
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	74	27	17	30	42	27	51
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	163	246	118	148	226	46	182
कुल चेष्टाबल	0	0	16	53	49	11	19
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	6	8	14	10	-26	12	5
कुल षट्बल	399	506	377	356	526	308	457
रूप षट्बल	6.7	8.4	6.3	5.9	8.8	5.1	7.6
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.4	1.3	0.8	1.3	0.9	1.5
संबंधित पद	4	2	5	7	3	6	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	42.74	9.70	30.21	11.97	48.26	23.50	23.60
कष्ट फल	13.26	31.08	13.52	19.36	11.72	20.84	35.49

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	308	377	526	457	457	526	377	308	356	506	399	356
भावदिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	32	49	47	29	53	21	45	20	18	-21	17	21
कुल भाव बल	400	435	583	546	530	586	452	368	394	485	466	427
रूप भाव बल	6.7	7.3	9.7	9.1	8.8	9.8	7.5	6.1	6.6	8.1	7.8	7.1
संबंधित पद	10	8	2	3	4	1	7	12	11	5	6	9

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

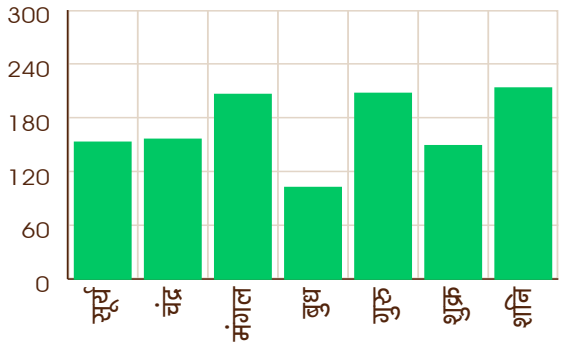

दिग्बल

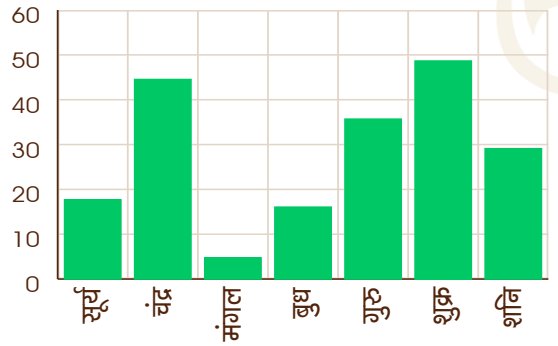

कालबल

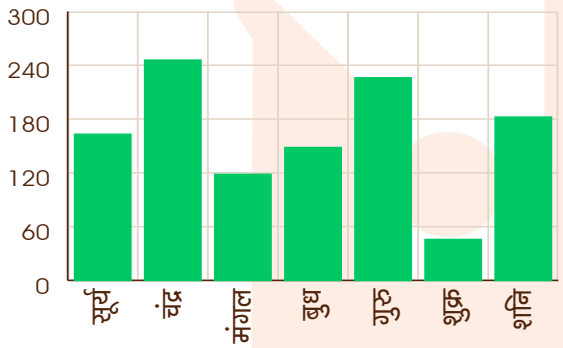

चेष्टाबल

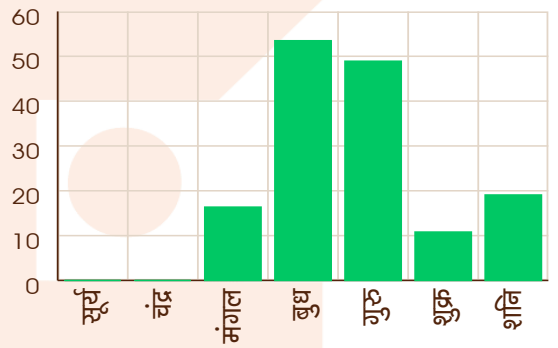

नैसर्गिक बल

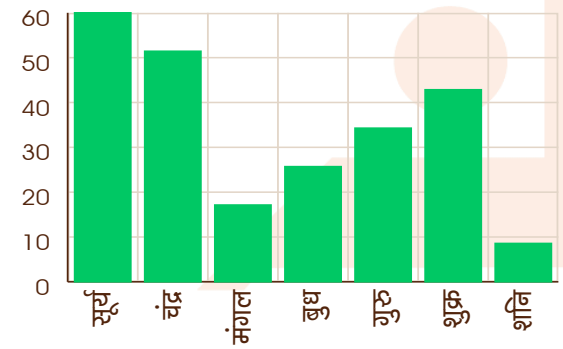

दृग्बल

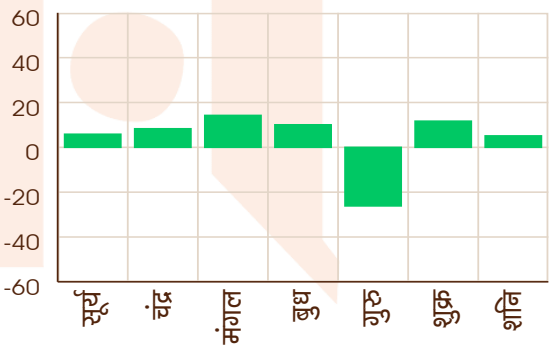

रूप षट्बल

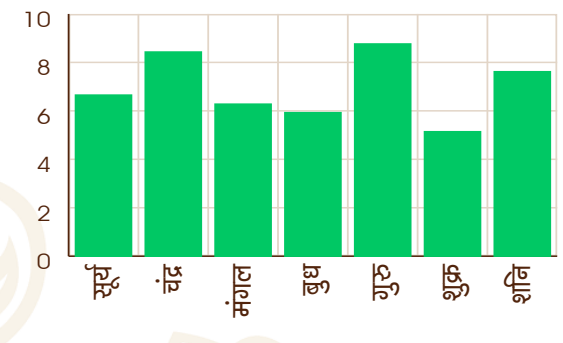

न्यूनतम षट्बल

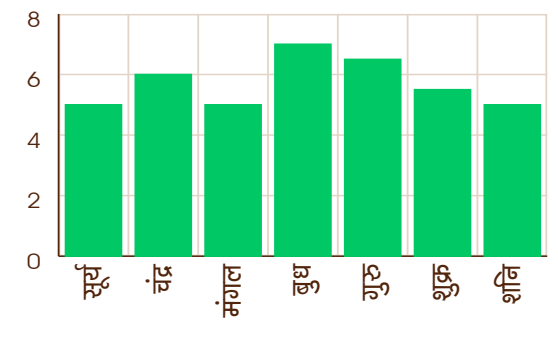

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

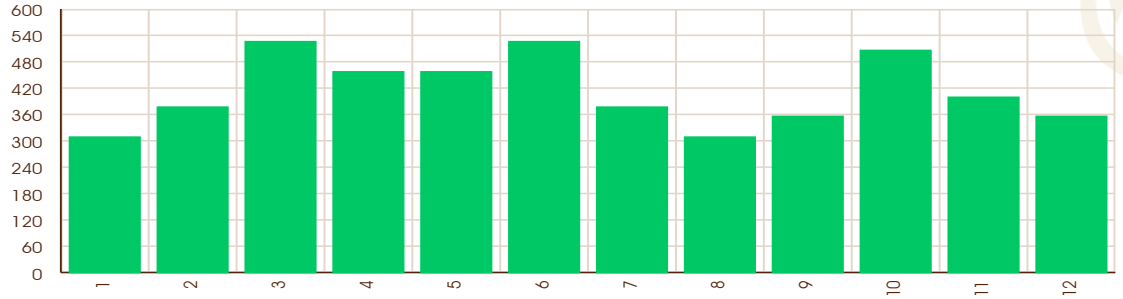

भावदिग्बल

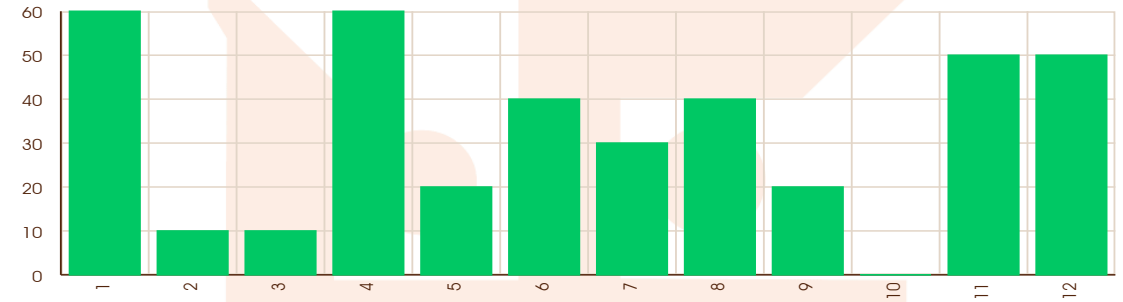

भावदृष्टि बल

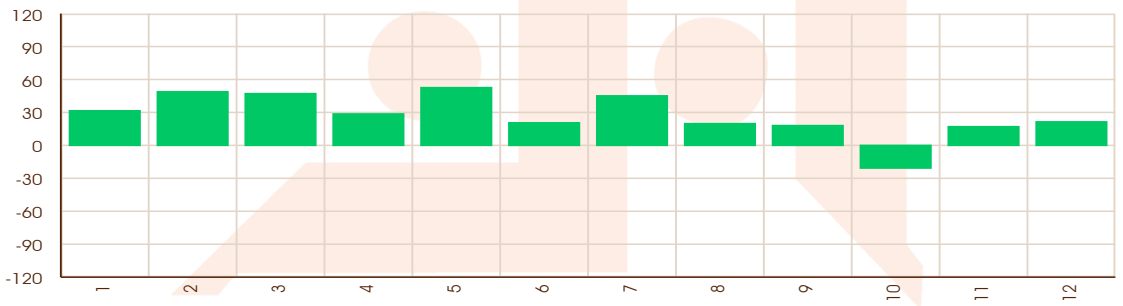

भाव बल

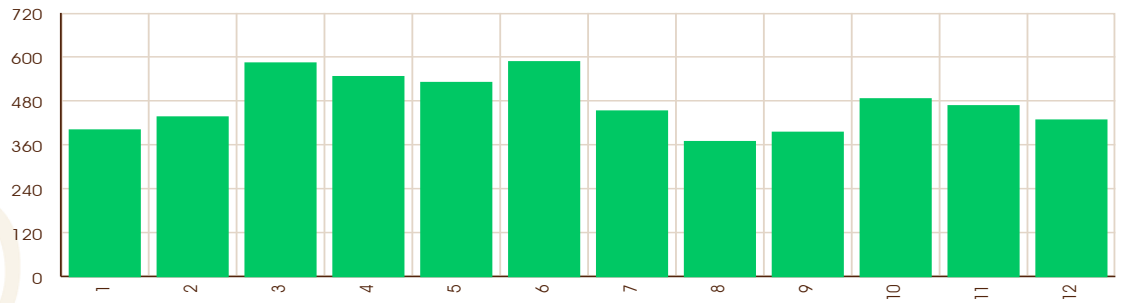

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

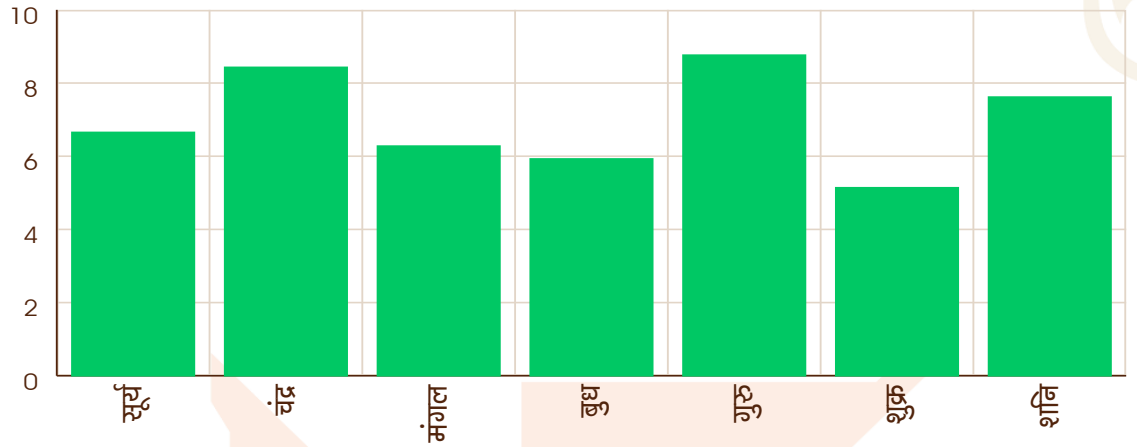

इष्ट - कष्ट फल

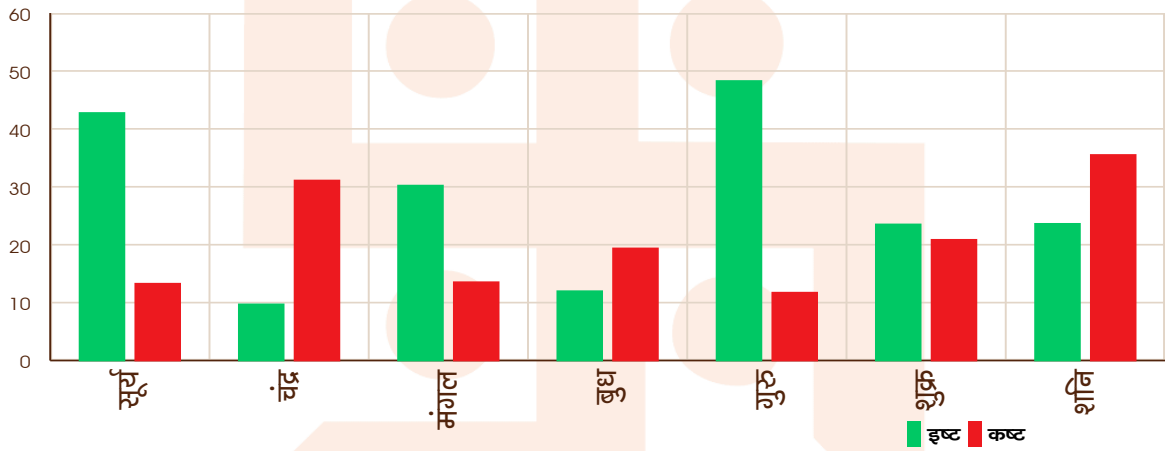

रूप भाव बल

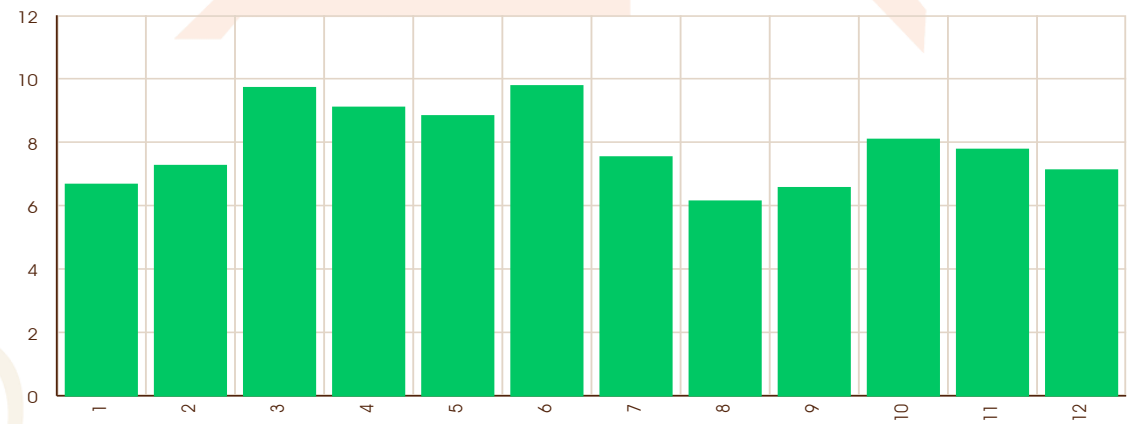

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	25:04:25	--	--	विशाखा	2	16
गुलिक	गु	मक	24:31:39	--	--	धनिष्ठा	1	23
काल	का	कुंभ	21:20:32	--	--	पू०भाद्रपद	1	25
मृत्यु	मृ	वृश्चि	00:21:13	--	मूल	विशाखा	4	16
यमघंटक	यम	धनु	09:40:30	--	मूल	मूल	3	19
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृश्चि	20:04:05	--	--	ज्येष्ठा	2	18
धूम	धू	सिंह	02:43:47	उच्च	--	मघा	1	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	27:16:13	उच्च	--	ज्येष्ठा	4	18
परिवेश	परि	वृष	27:16:13	--	--	मृगशिरा	2	5
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	02:43:47	--	--	धनिष्ठा	3	23
उपकेतु	उप	कुंभ	19:23:47	उच्च	--	शतभिषा	4	24

प्राणपद	:	धनु	08:42:48	कारकाँश लग्न	:	कर्क	20:44:58
भाव लग्न	:	वृश्चि	02:21:44	होरा लग्न	:	मिथु	15:19:41
घटी लग्न	:	मेष	24:13:32	वर्णद लग्न	:	मिथु	19:35:54

उपग्रह कुंडली

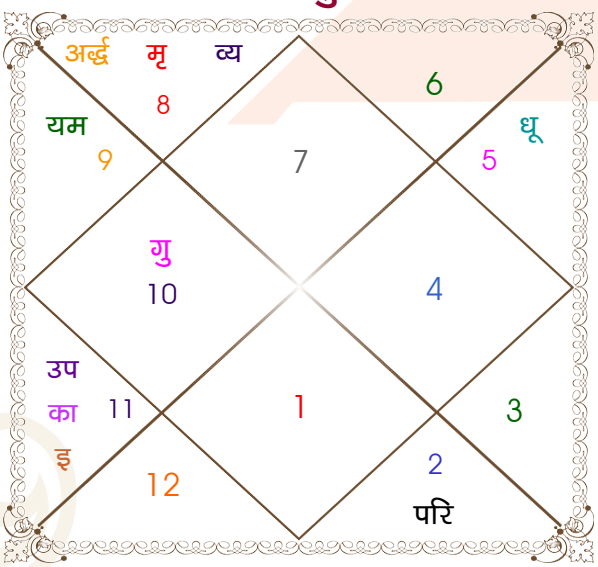

आरूढ़ कुंडली

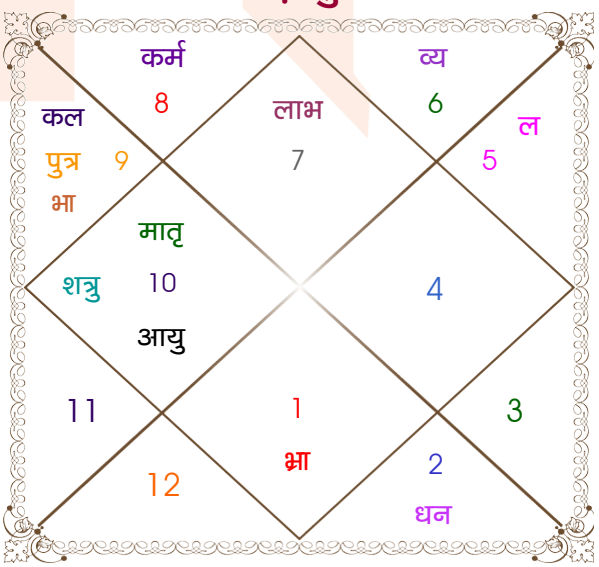

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षन्नाडी चक्र

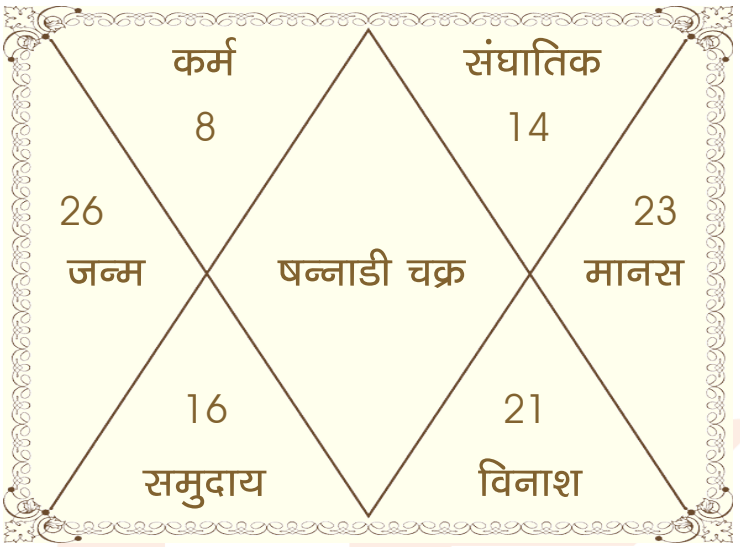

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	3	3	3	2	3	6	5	3	4	6	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	6	1	6	5	4	4	5	2	5	6	4	1	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
कुल	2	2	1	5	1	5	7	2	3	2	3	6	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
कुल	5	3	4	3	6	6	2	5	6	3	7	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	4	3	7	5	5	3	6	5	4	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	4	5	7	4	4	3	1	6	5	4	6	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	7	2	3	2	2	4	3	4	1	3	3	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	6	5	4	4	5	4	5	3	5	1	49

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	4	3	4	1	3	3	5	7	2	3	39
गुरु	5	4	5	4	5	4	3	7	5	5	3	6	56
मंगल	1	5	1	5	7	2	3	2	3	6	2	2	39
सूर्य	3	3	2	3	6	5	3	4	6	6	4	3	48
शुक्र	5	7	4	4	3	1	6	5	4	6	3	4	52
बुध	3	4	3	6	6	2	5	6	3	7	4	5	54
चंद्र	1	6	5	4	4	5	2	5	6	4	1	6	49
बिन्दु	20	31	24	29	35	20	25	32	32	41	19	29	337
रेखा	36	25	32	27	21	36	31	24	24	15	37	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	2	0	2	0	1	0	3	6	0	0	15
गुरु	0	0	2	0	0	0	0	3	0	1	0	2	8
मंगल	0	3	0	3	6	0	2	0	2	4	1	0	21
सूर्य	0	0	0	0	3	2	1	1	3	3	2	0	15
शुक्र	2	6	1	0	0	0	3	1	1	5	0	0	19
बुध	0	2	0	1	3	0	2	1	0	5	1	0	15
चंद्र	0	2	4	0	3	1	1	1	5	0	0	2	19
रेखा	2	14	9	4	17	3	10	7	14	24	4	4	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	0	2	0	0	0	3	6	0	0	13
गुरु	0	0	2	0	0	0	0	3	0	1	0	2	8
मंगल	0	1	0	3	6	0	2	0	2	4	1	0	19
सूर्य	0	0	0	0	3	2	1	1	3	3	2	0	15
शुक्र	1	3	1	0	0	0	3	1	1	5	0	0	15
बुध	0	0	0	1	3	0	0	1	0	5	1	0	11
चंद्र	0	1	3	0	3	1	1	1	3	0	0	2	15
रेखा	1	5	8	4	17	3	7	7	12	24	4	4	96

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	119	135	145	78	69	108	93
ग्रह पिंड	61	74	88	63	49	25	50
शोध्य पिंड	180	209	233	141	118	133	143

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

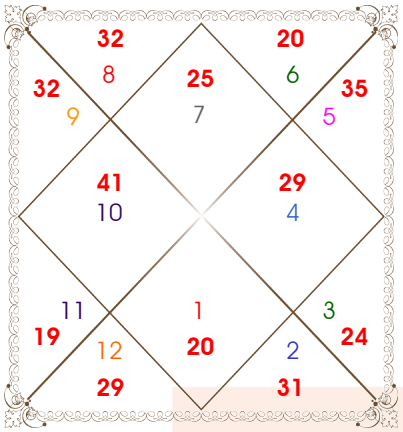

सूर्य का अष्टकवर्ग

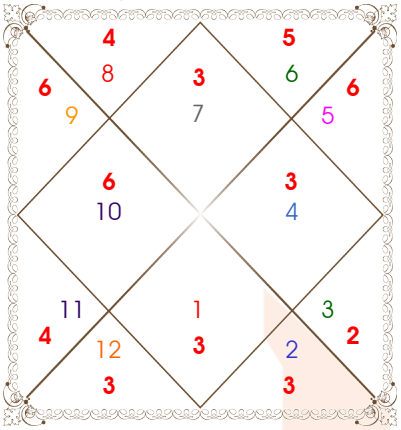

चंद्र का अष्टकवर्ग

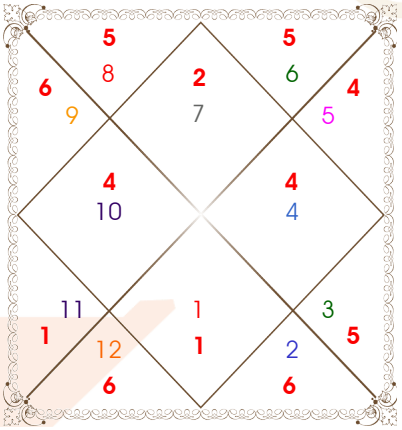

मंगल का अष्टकवर्ग

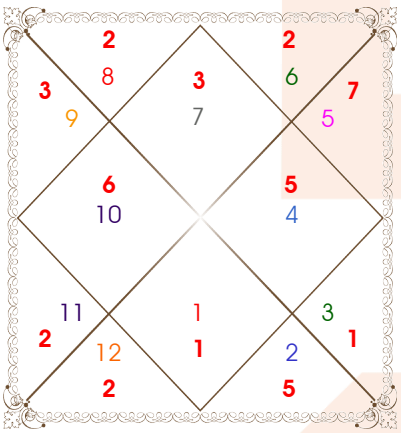

बुध का अष्टकवर्ग

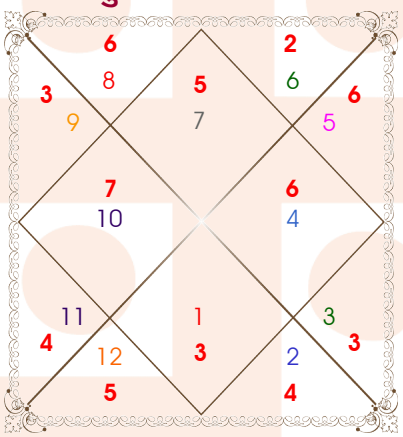

गुरू का अष्टकवर्ग

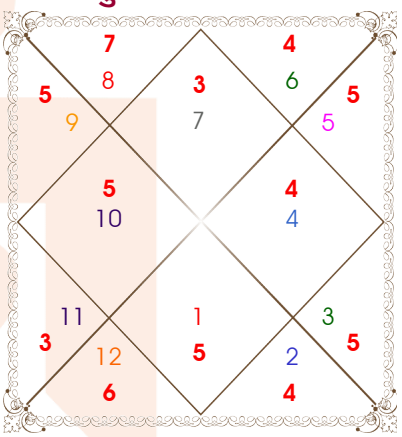

शुक्र का अष्टकवर्ग

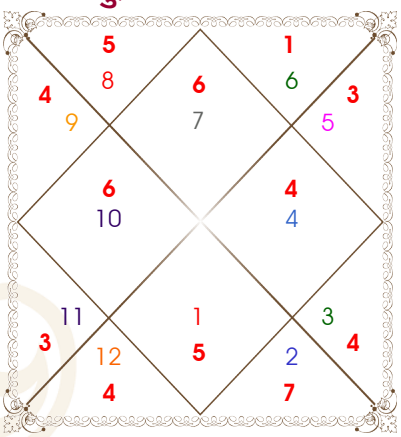

शनि का अष्टकवर्ग

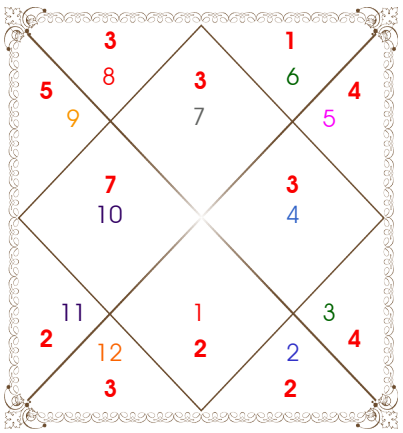

लग्न का अष्टकवर्ग

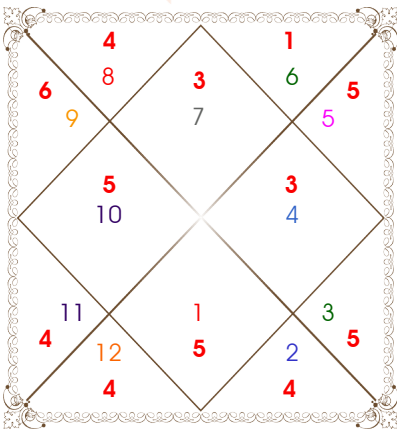

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

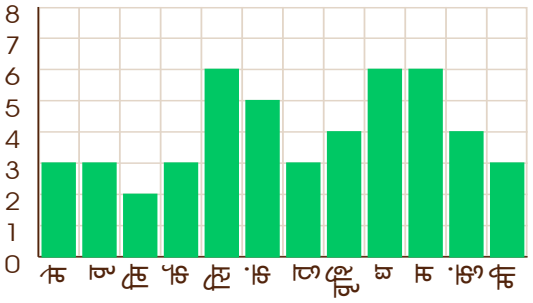

चन्द्र

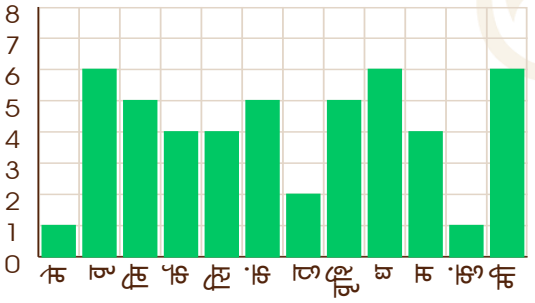

मंगल

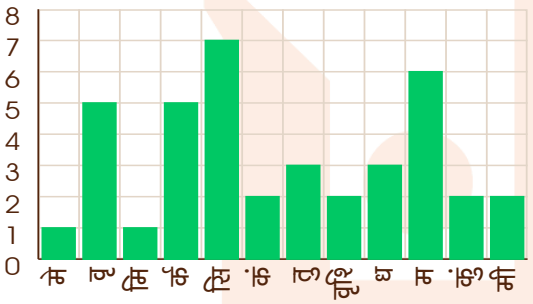

बुध

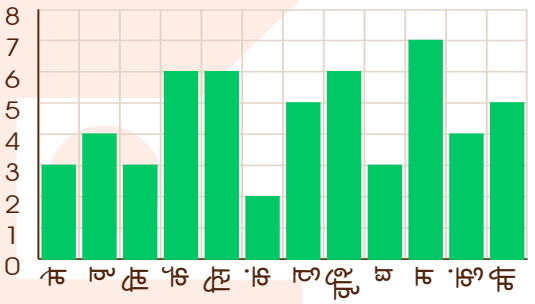

गुरु

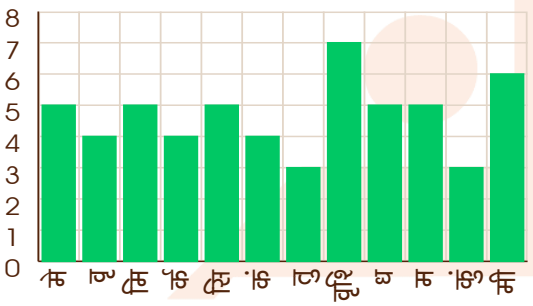

शुक्र

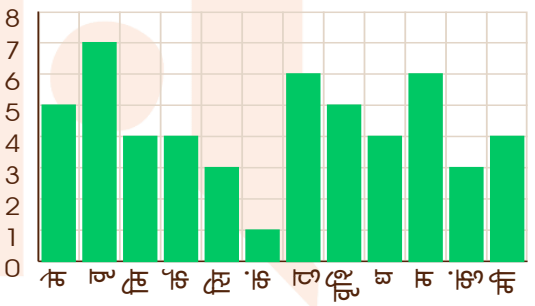

शनि

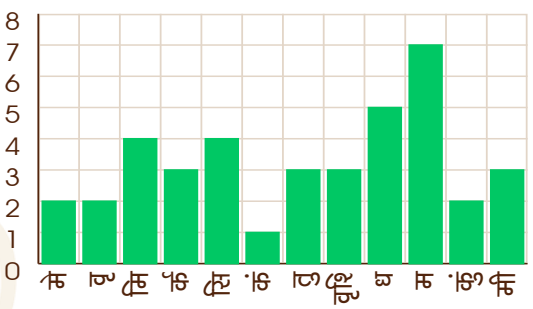

लग्न

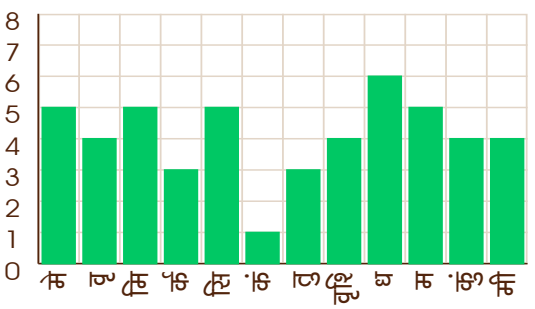

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

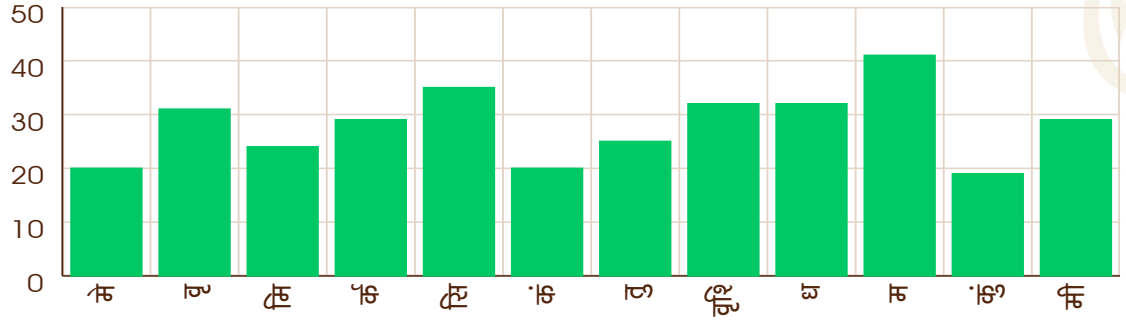

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

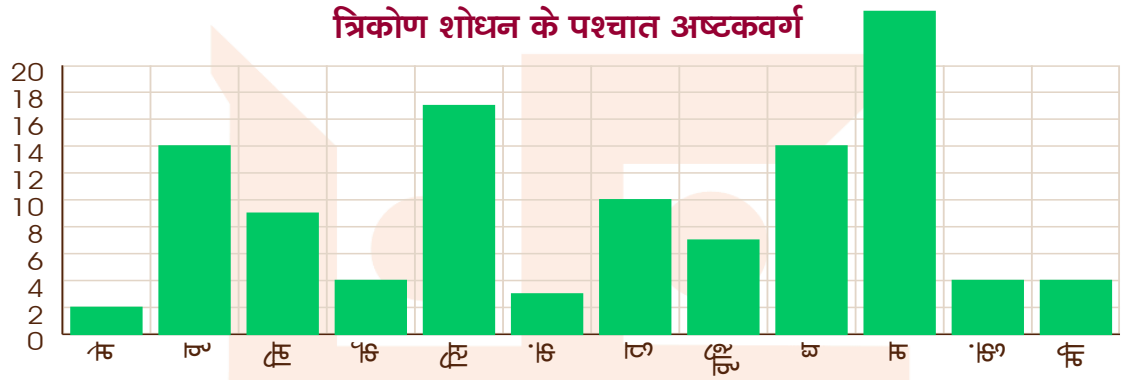

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

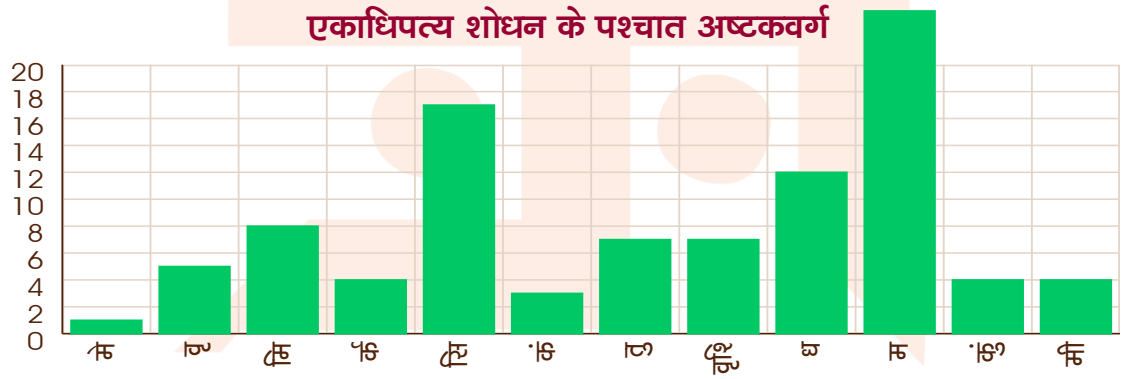

शोध्य पिंड

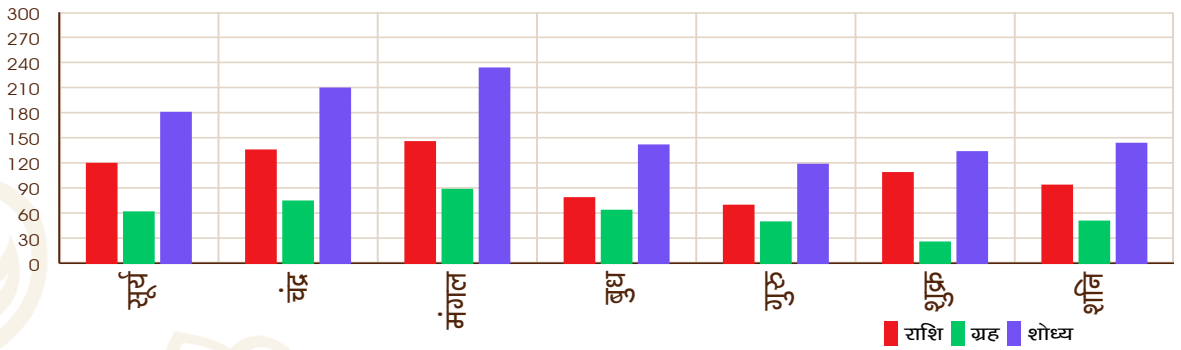

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 5 वर्ष 4 मास 22 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
02/04/1992		25/08/1997		25/08/2014		25/08/2021		25/08/2041	
25/08/1997		25/08/2014		25/08/2021		25/08/2041		26/08/2047	
	00/00/0000	बुध	22/01/2000	केतु	22/01/2015	शुक्र	25/12/2024	सूर्य	13/12/2041
	00/00/0000	केतु	18/01/2001	शुक्र	23/03/2016	सूर्य	25/12/2025	चंद्र	13/06/2042
	00/00/0000	शुक्र	19/11/2003	सूर्य	29/07/2016	चंद्र	26/08/2027	मंगल	19/10/2042
	00/00/0000	सूर्य	24/09/2004	चंद्र	27/02/2017	मंगल	25/10/2028	राहु	13/09/2043
	00/00/0000	चंद्र	24/02/2006	मंगल	26/07/2017	राहु	26/10/2031	गुरु	01/07/2044
	02/04/1992	मंगल	21/02/2007	राहु	13/08/2018	गुरु	26/06/2034	शनि	13/06/2045
मंगल	07/04/1992	राहु	09/09/2009	गुरु	20/07/2019	शनि	25/08/2037	बुध	20/04/2046
राहु	12/02/1995	गुरु	16/12/2011	शनि	28/08/2020	बुध	25/06/2040	केतु	25/08/2046
गुरु	25/08/1997	शनि	25/08/2014	बुध	25/08/2021	केतु	25/08/2041	शुक्र	26/08/2047

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
26/08/2047		25/08/2057		25/08/2064		25/08/2082		25/08/2098	
25/08/2057		25/08/2064		25/08/2082		25/08/2098		00/00/0000	
चंद्र	25/06/2048	मंगल	21/01/2058	राहु	08/05/2067	गुरु	13/10/2084	शनि	29/08/2101
मंगल	24/01/2049	राहु	09/02/2059	गुरु	01/10/2069	शनि	26/04/2087	बुध	08/05/2104
राहु	26/07/2050	गुरु	16/01/2060	शनि	07/08/2072	बुध	01/08/2089	केतु	17/06/2105
गुरु	25/11/2051	शनि	24/02/2061	बुध	24/02/2075	केतु	08/07/2090	शुक्र	17/08/2108
शनि	25/06/2053	बुध	21/02/2062	केतु	14/03/2076	शुक्र	08/03/2093	सूर्य	30/07/2109
बुध	25/11/2054	केतु	20/07/2062	शुक्र	14/03/2079	सूर्य	25/12/2093	चंद्र	28/02/2111
केतु	26/06/2055	शुक्र	19/09/2063	सूर्य	06/02/2080	चंद्र	26/04/2095	मंगल	03/04/2112
शुक्र	24/02/2057	सूर्य	25/01/2064	चंद्र	07/08/2081	मंगल	01/04/2096		00/00/0000
सूर्य	25/08/2057	चंद्र	25/08/2064	मंगल	25/08/2082	राहु	25/08/2098		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 5 वर्ष 4 मा 9 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
02/04/1992		07/04/1992		12/02/1995		25/08/1997		22/01/2000	
07/04/1992		12/02/1995		25/08/1997		22/01/2000		18/01/2001	
	00/00/0000	राहु	10/09/1992	गुरु	15/06/1995	बुध	28/12/1997	केतु	12/02/2000
	00/00/0000	गुरु	27/01/1993	शनि	09/11/1995	केतु	17/02/1998	शुक्र	12/04/2000
	00/00/0000	शनि	11/07/1993	बुध	19/03/1996	शुक्र	14/07/1998	सूर्य	30/04/2000
	00/00/0000	बुध	05/12/1993	केतु	12/05/1996	सूर्य	27/08/1998	चंद्र	31/05/2000
	00/00/0000	केतु	04/02/1994	शुक्र	13/10/1996	चंद्र	08/11/1998	मंगल	21/06/2000
	00/00/0000	शुक्र	27/07/1994	सूर्य	28/11/1996	मंगल	29/12/1998	राहु	14/08/2000
	00/00/0000	सूर्य	17/09/1994	चंद्र	13/02/1997	राहु	10/05/1999	गुरु	01/10/2000
	02/04/1992	चंद्र	13/12/1994	मंगल	08/04/1997	गुरु	05/09/1999	शनि	28/11/2000
चंद्र	07/04/1992	मंगल	12/02/1995	राहु	25/08/1997	शनि	22/01/2000	बुध	18/01/2001

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
18/01/2001		19/11/2003		24/09/2004		24/02/2006		21/02/2007	
19/11/2003		24/09/2004		24/02/2006		21/02/2007		09/09/2009	
शुक्र	09/07/2001	सूर्य	04/12/2003	चंद्र	06/11/2004	मंगल	17/03/2006	राहु	11/07/2007
सूर्य	30/08/2001	चंद्र	30/12/2003	मंगल	07/12/2004	राहु	10/05/2006	गुरु	12/11/2007
चंद्र	24/11/2001	मंगल	17/01/2004	राहु	22/02/2005	गुरु	28/06/2006	शनि	07/04/2008
मंगल	24/01/2002	राहु	04/03/2004	गुरु	02/05/2005	शनि	24/08/2006	बुध	17/08/2008
राहु	28/06/2002	गुरु	14/04/2004	शनि	23/07/2005	बुध	14/10/2006	केतु	11/10/2008
गुरु	13/11/2002	शनि	03/06/2004	बुध	04/10/2005	केतु	04/11/2006	शुक्र	15/03/2009
शनि	26/04/2003	बुध	16/07/2004	केतु	04/11/2005	शुक्र	04/01/2007	सूर्य	30/04/2009
बुध	20/09/2003	केतु	04/08/2004	शुक्र	29/01/2006	सूर्य	22/01/2007	चंद्र	17/07/2009
केतु	19/11/2003	शुक्र	24/09/2004	सूर्य	24/02/2006	चंद्र	21/02/2007	मंगल	09/09/2009

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
09/09/2009		16/12/2011		25/08/2014		22/01/2015		23/03/2016	
16/12/2011		25/08/2014		22/01/2015		23/03/2016		29/07/2016	
गुरु	29/12/2009	शनि	20/05/2012	केतु	03/09/2014	शुक्र	03/04/2015	सूर्य	29/03/2016
शनि	09/05/2010	बुध	06/10/2012	शुक्र	28/09/2014	सूर्य	24/04/2015	चंद्र	09/04/2016
बुध	03/09/2010	केतु	03/12/2012	सूर्य	05/10/2014	चंद्र	29/05/2015	मंगल	16/04/2016
केतु	21/10/2010	शुक्र	15/05/2013	चंद्र	18/10/2014	मंगल	23/06/2015	राहु	05/05/2016
शुक्र	08/03/2011	सूर्य	04/07/2013	मंगल	27/10/2014	राहु	26/08/2015	गुरु	22/05/2016
सूर्य	19/04/2011	चंद्र	24/09/2013	राहु	18/11/2014	गुरु	22/10/2015	शनि	12/06/2016
चंद्र	27/06/2011	मंगल	20/11/2013	गुरु	08/12/2014	शनि	28/12/2015	बुध	30/06/2016
मंगल	14/08/2011	राहु	16/04/2014	शनि	31/12/2014	बुध	27/02/2016	केतु	07/07/2016
राहु	16/12/2011	गुरु	25/08/2014	बुध	22/01/2015	केतु	23/03/2016	शुक्र	29/07/2016

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
29/07/2016		27/02/2017		26/07/2017		13/08/2018		20/07/2019	
27/02/2017		26/07/2017		13/08/2018		20/07/2019		28/08/2020	
चंद्र	15/08/2016	मंगल	07/03/2017	राहु	21/09/2017	गुरु	28/09/2018	शनि	22/09/2019
मंगल	28/08/2016	राहु	30/03/2017	गुरु	11/11/2017	शनि	21/11/2018	बुध	19/11/2019
राहु	29/09/2016	गुरु	19/04/2017	शनि	11/01/2018	बुध	08/01/2019	केतु	12/12/2019
गुरु	27/10/2016	शनि	12/05/2017	बुध	06/03/2018	केतु	28/01/2019	शुक्र	18/02/2020
शनि	30/11/2016	बुध	02/06/2017	केतु	29/03/2018	शुक्र	26/03/2019	सूर्य	09/03/2020
बुध	30/12/2016	केतु	11/06/2017	शुक्र	01/06/2018	सूर्य	12/04/2019	चंद्र	12/04/2020
केतु	11/01/2017	शुक्र	06/07/2017	सूर्य	20/06/2018	चंद्र	10/05/2019	मंगल	05/05/2020
शुक्र	16/02/2017	सूर्य	13/07/2017	चंद्र	22/07/2018	मंगल	30/05/2019	राहु	05/07/2020
सूर्य	27/02/2017	चंद्र	26/07/2017	मंगल	13/08/2018	राहु	20/07/2019	गुरु	28/08/2020

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
28/08/2020		25/08/2021		25/12/2024		25/12/2025		26/08/2027	
25/08/2021		25/12/2024		25/12/2025		26/08/2027		25/10/2028	
बुध	18/10/2020	शुक्र	16/03/2022	सूर्य	12/01/2025	चंद्र	14/02/2026	मंगल	20/09/2027
केतु	08/11/2020	सूर्य	16/05/2022	चंद्र	11/02/2025	मंगल	21/03/2026	राहु	22/11/2027
शुक्र	08/01/2021	चंद्र	25/08/2022	मंगल	05/03/2025	राहु	20/06/2026	गुरु	18/01/2028
सूर्य	26/01/2021	मंगल	04/11/2022	राहु	28/04/2025	गुरु	10/09/2026	शनि	26/03/2028
चंद्र	25/02/2021	राहु	06/05/2023	गुरु	16/06/2025	शनि	15/12/2026	बुध	25/05/2028
मंगल	18/03/2021	गुरु	15/10/2023	शनि	13/08/2025	बुध	11/03/2027	केतु	19/06/2028
राहु	12/05/2021	शनि	25/04/2024	बुध	04/10/2025	केतु	16/04/2027	शुक्र	29/08/2028
गुरु	29/06/2021	बुध	15/10/2024	केतु	25/10/2025	शुक्र	26/07/2027	सूर्य	19/09/2028
शनि	25/08/2021	केतु	25/12/2024	शुक्र	25/12/2025	सूर्य	26/08/2027	चंद्र	25/10/2028

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
25/10/2028		26/10/2031		26/06/2034		25/08/2037		25/06/2040	
26/10/2031		26/06/2034		25/08/2037		25/06/2040		25/08/2041	
राहु	07/04/2029	गुरु	03/03/2032	शनि	26/12/2034	बुध	19/01/2038	केतु	20/07/2040
गुरु	31/08/2029	शनि	05/08/2032	बुध	08/06/2035	केतु	20/03/2038	शुक्र	29/09/2040
शनि	21/02/2030	बुध	21/12/2032	केतु	14/08/2035	शुक्र	09/09/2038	सूर्य	20/10/2040
बुध	26/07/2030	केतु	15/02/2033	शुक्र	23/02/2036	सूर्य	30/10/2038	चंद्र	25/11/2040
केतु	28/09/2030	शुक्र	28/07/2033	सूर्य	21/04/2036	चंद्र	25/01/2039	मंगल	20/12/2040
शुक्र	30/03/2031	सूर्य	14/09/2033	चंद्र	26/07/2036	मंगल	26/03/2039	राहु	22/02/2041
सूर्य	23/05/2031	चंद्र	05/12/2033	मंगल	01/10/2036	राहु	28/08/2039	गुरु	19/04/2041
चंद्र	23/08/2031	मंगल	30/01/2034	राहु	24/03/2037	गुरु	13/01/2040	शनि	26/06/2041
मंगल	26/10/2031	राहु	26/06/2034	गुरु	25/08/2037	शनि	25/06/2040	बुध	25/08/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य	
25/08/2041	
13/12/2041	
सूर्य	31/08/2041
चंद्र	09/09/2041
मंगल	15/09/2041
राहु	02/10/2041
गुरु	16/10/2041
शनि	03/11/2041
बुध	18/11/2041
केतु	24/11/2041
शुक्र	13/12/2041

सूर्य - चंद्र	
13/12/2041	
13/06/2042	
चंद्र	28/12/2041
मंगल	08/01/2042
राहु	04/02/2042
गुरु	28/02/2042
शनि	29/03/2042
बुध	24/04/2042
केतु	05/05/2042
शुक्र	04/06/2042
सूर्य	13/06/2042

सूर्य - मंगल	
13/06/2042	
19/10/2042	
मंगल	21/06/2042
राहु	10/07/2042
गुरु	27/07/2042
शनि	16/08/2042
बुध	03/09/2042
केतु	11/09/2042
शुक्र	02/10/2042
सूर्य	09/10/2042
चंद्र	19/10/2042

सूर्य - राहु	
19/10/2042	
13/09/2043	
राहु	08/12/2042
गुरु	20/01/2043
शनि	13/03/2043
बुध	29/04/2043
केतु	18/05/2043
शुक्र	12/07/2043
सूर्य	28/07/2043
चंद्र	25/08/2043
मंगल	13/09/2043

सूर्य - गुरु	
13/09/2043	
01/07/2044	
गुरु	22/10/2043
शनि	07/12/2043
बुध	18/01/2044
केतु	04/02/2044
शुक्र	23/03/2044
सूर्य	07/04/2044
चंद्र	01/05/2044
मंगल	18/05/2044
राहु	01/07/2044

सूर्य - शनि	
01/07/2044	
13/06/2045	
शनि	25/08/2044
बुध	13/10/2044
केतु	02/11/2044
शुक्र	30/12/2044
सूर्य	17/01/2045
चंद्र	15/02/2045
मंगल	07/03/2045
राहु	28/04/2045
गुरु	13/06/2045

सूर्य - बुध	
13/06/2045	
20/04/2046	
बुध	27/07/2045
केतु	14/08/2045
शुक्र	05/10/2045
सूर्य	20/10/2045
चंद्र	15/11/2045
मंगल	03/12/2045
राहु	19/01/2046
गुरु	01/03/2046
शनि	20/04/2046

सूर्य - केतु	
20/04/2046	
25/08/2046	
केतु	27/04/2046
शुक्र	18/05/2046
सूर्य	25/05/2046
चंद्र	04/06/2046
मंगल	12/06/2046
राहु	01/07/2046
गुरु	18/07/2046
शनि	07/08/2046
बुध	25/08/2046

सूर्य - शुक्र	
25/08/2046	
26/08/2047	
शुक्र	25/10/2046
सूर्य	13/11/2046
चंद्र	13/12/2046
मंगल	03/01/2047
राहु	27/02/2047
गुरु	17/04/2047
शनि	14/06/2047
बुध	04/08/2047
केतु	26/08/2047

चंद्र - चंद्र	
26/08/2047	
25/06/2048	
चंद्र	20/09/2047
मंगल	08/10/2047
राहु	22/11/2047
गुरु	02/01/2048
शनि	19/02/2048
बुध	02/04/2048
केतु	20/04/2048
शुक्र	10/06/2048
सूर्य	25/06/2048

चंद्र - मंगल	
25/06/2048	
24/01/2049	
मंगल	07/07/2048
राहु	08/08/2048
गुरु	06/09/2048
शनि	10/10/2048
बुध	09/11/2048
केतु	21/11/2048
शुक्र	27/12/2048
सूर्य	06/01/2049
चंद्र	24/01/2049

चंद्र - राहु	
24/01/2049	
26/07/2050	
राहु	16/04/2049
गुरु	28/06/2049
शनि	23/09/2049
बुध	10/12/2049
केतु	11/01/2050
शुक्र	12/04/2050
सूर्य	09/05/2050
चंद्र	24/06/2050
मंगल	26/07/2050

चंद्र - गुरु	
26/07/2050	
25/11/2051	
गुरु	29/09/2050
शनि	15/12/2050
बुध	22/02/2051
केतु	22/03/2051
शुक्र	12/06/2051
सूर्य	06/07/2051
चंद्र	16/08/2051
मंगल	13/09/2051
राहु	25/11/2051

चंद्र - शनि	
25/11/2051	
25/06/2053	
शनि	25/02/2052
बुध	16/05/2052
केतु	19/06/2052
शुक्र	24/09/2052
सूर्य	23/10/2052
चंद्र	10/12/2052
मंगल	12/01/2053
राहु	09/04/2053
गुरु	25/06/2053

चंद्र - बुध	
25/06/2053	
25/11/2054	
बुध	07/09/2053
केतु	07/10/2053
शुक्र	01/01/2054
सूर्य	27/01/2054
चंद्र	11/03/2054
मंगल	10/04/2054
राहु	27/06/2054
गुरु	04/09/2054
शनि	25/11/2054

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
25/11/2054		26/06/2055		24/02/2057		25/08/2057		21/01/2058	
26/06/2055		24/02/2057		25/08/2057		21/01/2058		09/02/2059	
केतु	07/12/2054	शुक्र	05/10/2055	सूर्य	05/03/2057	मंगल	03/09/2057	राहु	20/03/2058
शुक्र	12/01/2055	सूर्य	05/11/2055	चंद्र	20/03/2057	राहु	25/09/2057	गुरु	10/05/2058
सूर्य	22/01/2055	चंद्र	25/12/2055	मंगल	31/03/2057	गुरु	15/10/2057	शनि	10/07/2058
चंद्र	09/02/2055	मंगल	30/01/2056	राहु	27/04/2057	शनि	08/11/2057	बुध	02/09/2058
मंगल	22/02/2055	राहु	30/04/2056	गुरु	21/05/2057	बुध	29/11/2057	केतु	24/09/2058
राहु	25/03/2055	गुरु	20/07/2056	शनि	19/06/2057	केतु	08/12/2057	शुक्र	27/11/2058
गुरु	23/04/2055	शनि	25/10/2056	बुध	15/07/2057	शुक्र	01/01/2058	सूर्य	16/12/2058
शनि	27/05/2055	बुध	19/01/2057	केतु	26/07/2057	सूर्य	09/01/2058	चंद्र	17/01/2059
बुध	26/06/2055	केतु	24/02/2057	शुक्र	25/08/2057	चंद्र	21/01/2058	मंगल	09/02/2059

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
09/02/2059		16/01/2060		24/02/2061		21/02/2062		20/07/2062	
16/01/2060		24/02/2061		21/02/2062		20/07/2062		19/09/2063	
गुरु	26/03/2059	शनि	20/03/2060	बुध	16/04/2061	केतु	01/03/2062	शुक्र	29/09/2062
शनि	19/05/2059	बुध	16/05/2060	केतु	07/05/2061	शुक्र	26/03/2062	सूर्य	20/10/2062
बुध	07/07/2059	केतु	09/06/2060	शुक्र	06/07/2061	सूर्य	03/04/2062	चंद्र	25/11/2062
केतु	26/07/2059	शुक्र	15/08/2060	सूर्य	24/07/2061	चंद्र	15/04/2062	मंगल	20/12/2062
शुक्र	21/09/2059	सूर्य	04/09/2060	चंद्र	24/08/2061	मंगल	24/04/2062	राहु	22/02/2063
सूर्य	08/10/2059	चंद्र	08/10/2060	मंगल	14/09/2061	राहु	16/05/2062	गुरु	19/04/2063
चंद्र	06/11/2059	मंगल	01/11/2060	राहु	07/11/2061	गुरु	05/06/2062	शनि	26/06/2063
मंगल	26/11/2059	राहु	01/01/2061	गुरु	25/12/2061	शनि	29/06/2062	बुध	25/08/2063
राहु	16/01/2060	गुरु	24/02/2061	शनि	21/02/2062	बुध	20/07/2062	केतु	19/09/2063

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
19/09/2063		25/01/2064		25/08/2064		08/05/2067		01/10/2069	
25/01/2064		25/08/2064		08/05/2067		01/10/2069		07/08/2072	
सूर्य	25/09/2063	चंद्र	12/02/2064	राहु	20/01/2065	गुरु	02/09/2067	शनि	15/03/2070
चंद्र	06/10/2063	मंगल	24/02/2064	गुरु	31/05/2065	शनि	19/01/2068	बुध	09/08/2070
मंगल	14/10/2063	राहु	27/03/2064	शनि	03/11/2065	बुध	22/05/2068	केतु	09/10/2070
राहु	02/11/2063	गुरु	24/04/2064	बुध	23/03/2066	केतु	12/07/2068	शुक्र	31/03/2071
गुरु	19/11/2063	शनि	28/05/2064	केतु	20/05/2066	शुक्र	05/12/2068	सूर्य	22/05/2071
शनि	09/12/2063	बुध	27/06/2064	शुक्र	31/10/2066	सूर्य	18/01/2069	चंद्र	17/08/2071
बुध	27/12/2063	केतु	10/07/2064	सूर्य	19/12/2066	चंद्र	01/04/2069	मंगल	17/10/2071
केतु	04/01/2064	शुक्र	14/08/2064	चंद्र	12/03/2067	मंगल	22/05/2069	राहु	21/03/2072
शुक्र	25/01/2064	सूर्य	25/08/2064	मंगल	08/05/2067	राहु	01/10/2069	गुरु	07/08/2072

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
07/08/2072		24/02/2075		14/03/2076		14/03/2079		06/02/2080	
24/02/2075		14/03/2076		14/03/2079		06/02/2080		07/08/2081	
बुध	17/12/2072	केतु	18/03/2075	शुक्र	12/09/2076	सूर्य	31/03/2079	चंद्र	23/03/2080
केतु	09/02/2073	शुक्र	21/05/2075	सूर्य	06/11/2076	चंद्र	27/04/2079	मंगल	24/04/2080
शुक्र	14/07/2073	सूर्य	10/06/2075	चंद्र	05/02/2077	मंगल	16/05/2079	राहु	15/07/2080
सूर्य	30/08/2073	चंद्र	11/07/2075	मंगल	10/04/2077	राहु	05/07/2079	गुरु	26/09/2080
चंद्र	15/11/2073	मंगल	03/08/2075	राहु	22/09/2077	गुरु	17/08/2079	शनि	22/12/2080
मंगल	09/01/2074	राहु	29/09/2075	गुरु	15/02/2078	शनि	08/10/2079	बुध	09/03/2081
राहु	28/05/2074	गुरु	19/11/2075	शनि	07/08/2078	बुध	24/11/2079	केतु	10/04/2081
गुरु	30/09/2074	शनि	19/01/2076	बुध	09/01/2079	केतु	13/12/2079	शुक्र	11/07/2081
शनि	24/02/2075	बुध	14/03/2076	केतु	14/03/2079	शुक्र	06/02/2080	सूर्य	07/08/2081

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
07/08/2081		25/08/2082		13/10/2084		26/04/2087		01/08/2089	
25/08/2082		13/10/2084		26/04/2087		01/08/2089		08/07/2090	
मंगल	29/08/2081	गुरु	07/12/2082	शनि	08/03/2085	बुध	21/08/2087	केतु	21/08/2089
राहु	26/10/2081	शनि	10/04/2083	बुध	17/07/2085	केतु	08/10/2087	शुक्र	17/10/2089
गुरु	16/12/2081	बुध	29/07/2083	केतु	09/09/2085	शुक्र	23/02/2088	सूर्य	03/11/2089
शनि	15/02/2082	केतु	13/09/2083	शुक्र	10/02/2086	सूर्य	05/04/2088	चंद्र	01/12/2089
बुध	10/04/2082	शुक्र	20/01/2084	सूर्य	29/03/2086	चंद्र	13/06/2088	मंगल	21/12/2089
केतु	02/05/2082	सूर्य	28/02/2084	चंद्र	14/06/2086	मंगल	31/07/2088	राहु	10/02/2090
शुक्र	05/07/2082	चंद्र	03/05/2084	मंगल	07/08/2086	राहु	02/12/2088	गुरु	27/03/2090
सूर्य	24/07/2082	मंगल	18/06/2084	राहु	24/12/2086	गुरु	23/03/2089	शनि	20/05/2090
चंद्र	25/08/2082	राहु	13/10/2084	गुरु	26/04/2087	शनि	01/08/2089	बुध	08/07/2090

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
08/07/2090		08/03/2093		25/12/2093		26/04/2095		01/04/2096	
08/03/2093		25/12/2093		26/04/2095		01/04/2096		25/08/2098	
शुक्र	17/12/2090	सूर्य	22/03/2093	चंद्र	03/02/2094	मंगल	16/05/2095	राहु	10/08/2096
सूर्य	04/02/2091	चंद्र	16/04/2093	मंगल	04/03/2094	राहु	06/07/2095	गुरु	05/12/2096
चंद्र	26/04/2091	मंगल	03/05/2093	राहु	16/05/2094	गुरु	20/08/2095	शनि	23/04/2097
मंगल	22/06/2091	राहु	16/06/2093	गुरु	20/07/2094	शनि	13/10/2095	बुध	25/08/2097
राहु	15/11/2091	गुरु	25/07/2093	शनि	05/10/2094	बुध	01/12/2095	केतु	15/10/2097
गुरु	24/03/2092	शनि	09/09/2093	बुध	13/12/2094	केतु	21/12/2095	शुक्र	10/03/2098
शनि	25/08/2092	बुध	20/10/2093	केतु	10/01/2095	शुक्र	15/02/2096	सूर्य	23/04/2098
बुध	10/01/2093	केतु	06/11/2093	शुक्र	02/04/2095	सूर्य	03/03/2096	चंद्र	05/07/2098
केतु	08/03/2093	शुक्र	25/12/2093	सूर्य	26/04/2095	चंद्र	01/04/2096	मंगल	25/08/2098

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - चंद्र - चंद्र	
25/12/2025 09:58	
14/02/2026 03:28	
चंद्र	29/12/2025 15:26
मंगल	01/01/2026 14:27
राहु	09/01/2026 05:05
गुरु	15/01/2026 23:25
शनि	24/01/2026 00:11
बुध	31/01/2026 04:40
केतु	03/02/2026 03:41
शुक्र	11/02/2026 14:36
सूर्य	14/02/2026 03:28

शुक्र - चंद्र - मंगल	
14/02/2026 03:28	
21/03/2026 15:43	
मंगल	16/02/2026 05:11
राहु	21/02/2026 13:01
गुरु	26/02/2026 06:39
शनि	03/03/2026 21:36
बुध	08/03/2026 22:20
केतु	11/03/2026 00:03
शुक्र	16/03/2026 22:05
सूर्य	18/03/2026 16:42
चंद्र	21/03/2026 15:43

शुक्र - चंद्र - राहु	
21/03/2026 15:43	
20/06/2026 23:13	
राहु	04/04/2026 08:27
गुरु	16/04/2026 12:39
शनि	30/04/2026 23:38
बुध	13/05/2026 22:06
केतु	19/05/2026 05:56
शुक्र	03/06/2026 11:11
सूर्य	08/06/2026 00:46
चंद्र	15/06/2026 15:23
मंगल	20/06/2026 23:13

शुक्र - चंद्र - गुरु	
20/06/2026 23:13	
10/09/2026 03:13	
गुरु	01/07/2026 18:57
शनि	14/07/2026 15:23
बुध	26/07/2026 03:21
केतु	30/07/2026 20:59
शुक्र	13/08/2026 09:39
सूर्य	17/08/2026 11:03
चंद्र	24/08/2026 05:23
मंगल	28/08/2026 23:01
राहु	10/09/2026 03:13

शुक्र - चंद्र - शनि	
10/09/2026 03:13	
15/12/2026 12:28	
शनि	25/09/2026 09:29
बुध	09/10/2026 01:12
केतु	14/10/2026 16:08
शुक्र	30/10/2026 17:41
सूर्य	04/11/2026 13:20
चंद्र	12/11/2026 14:07
मंगल	18/11/2026 05:03
राहु	02/12/2026 16:02
गुरु	15/12/2026 12:28

शुक्र - चंद्र - बुध	
15/12/2026 12:28	
11/03/2027 18:13	
बुध	27/12/2026 17:41
केतु	01/01/2027 18:25
शुक्र	16/01/2027 03:23
सूर्य	20/01/2027 10:52
चंद्र	27/01/2027 15:21
मंगल	01/02/2027 16:05
राहु	14/02/2027 14:33
गुरु	26/02/2027 02:31
शनि	11/03/2027 18:13

शुक्र - चंद्र - केतु	
11/03/2027 18:13	
16/04/2027 06:28	
केतु	13/03/2027 19:56
शुक्र	19/03/2027 17:59
सूर्य	21/03/2027 12:35
चंद्र	24/03/2027 11:37
मंगल	26/03/2027 13:20
राहु	31/03/2027 21:10
गुरु	05/04/2027 14:48
शनि	11/04/2027 05:44
बुध	16/04/2027 06:28

शुक्र - चंद्र - शुक्र	
16/04/2027 06:28	
26/07/2027 17:28	
शुक्र	03/05/2027 04:18
सूर्य	08/05/2027 06:03
चंद्र	16/05/2027 16:58
मंगल	22/05/2027 15:01
राहु	06/06/2027 20:16
गुरु	20/06/2027 08:56
शनि	06/07/2027 10:28
बुध	20/07/2027 19:26
केतु	26/07/2027 17:28

शुक्र - चंद्र - सूर्य	
26/07/2027 17:28	
26/08/2027 03:58	
सूर्य	28/07/2027 06:00
चंद्र	30/07/2027 18:52
मंगल	01/08/2027 13:29
राहु	06/08/2027 03:04
गुरु	10/08/2027 04:28
शनि	15/08/2027 00:07
बुध	19/08/2027 07:37
केतु	21/08/2027 02:13
शुक्र	26/08/2027 03:58

शुक्र - मंगल - मंगल	
26/08/2027 03:58	
20/09/2027 00:33	
मंगल	27/08/2027 14:46
राहु	31/08/2027 08:16
गुरु	03/09/2027 15:48
शनि	07/09/2027 14:16
बुध	11/09/2027 02:46
केतु	12/09/2027 13:34
शुक्र	16/09/2027 17:00
सूर्य	17/09/2027 22:50
चंद्र	20/09/2027 00:33

शुक्र - मंगल - राहु	
20/09/2027 00:33	
22/11/2027 22:36	
राहु	29/09/2027 14:39
गुरु	08/10/2027 03:12
शनि	18/10/2027 06:05
बुध	27/10/2027 07:25
केतु	31/10/2027 00:54
शुक्र	10/11/2027 16:34
सूर्य	13/11/2027 21:16
चंद्र	19/11/2027 05:07
मंगल	22/11/2027 22:36

शुक्र - मंगल - गुरु	
22/11/2027 22:36	
18/01/2028 18:12	
गुरु	30/11/2027 12:25
शनि	09/12/2027 12:19
बुध	17/12/2027 13:29
केतु	20/12/2027 21:02
शुक्र	30/12/2027 08:18
सूर्य	02/01/2028 04:29
चंद्र	06/01/2028 22:07
मंगल	10/01/2028 05:39
राहु	18/01/2028 18:12

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - मंगल - शनि	
18/01/2028 18:12	
26/03/2028 05:28	
शनि	29/01/2028 10:35
बुध	07/02/2028 23:59
केतु	11/02/2028 22:26
शुक्र	23/02/2028 04:19
सूर्य	26/02/2028 13:17
चंद्र	03/03/2028 04:13
मंगल	07/03/2028 02:41
राहु	17/03/2028 05:34
गुरु	26/03/2028 05:28

शुक्र - मंगल - बुध	
26/03/2028 05:28	
25/05/2028 14:18	
बुध	03/04/2028 18:43
केतु	07/04/2028 07:14
शुक्र	17/04/2028 08:42
सूर्य	20/04/2028 09:09
चंद्र	25/04/2028 09:53
मंगल	28/04/2028 22:24
राहु	07/05/2028 23:43
गुरु	16/05/2028 00:54
शनि	25/05/2028 14:18

शुक्र - मंगल - केतु	
25/05/2028 14:18	
19/06/2028 10:52	
केतु	27/05/2028 01:06
शुक्र	31/05/2028 04:32
सूर्य	01/06/2028 10:21
चंद्र	03/06/2028 12:04
मंगल	04/06/2028 22:52
राहु	08/06/2028 16:21
गुरु	11/06/2028 23:54
शनि	15/06/2028 22:21
बुध	19/06/2028 10:52

शुक्र - मंगल - शुक्र	
19/06/2028 10:52	
29/08/2028 11:22	
शुक्र	01/07/2028 06:57
सूर्य	04/07/2028 20:11
चंद्र	10/07/2028 18:13
मंगल	14/07/2028 21:39
राहु	25/07/2028 13:20
गुरु	04/08/2028 00:36
शनि	15/08/2028 06:28
बुध	25/08/2028 07:57
केतु	29/08/2028 11:22

शुक्र - मंगल - सूर्य	
29/08/2028 11:22	
19/09/2028 18:43	
सूर्य	30/08/2028 12:56
चंद्र	01/09/2028 07:33
मंगल	02/09/2028 13:23
राहु	05/09/2028 18:05
गुरु	08/09/2028 14:16
शनि	11/09/2028 23:14
बुध	14/09/2028 23:40
केतु	16/09/2028 05:30
शुक्र	19/09/2028 18:43

शुक्र - मंगल - चंद्र	
19/09/2028 18:43	
25/10/2028 06:58	
चंद्र	22/09/2028 17:45
मंगल	24/09/2028 19:27
राहु	30/09/2028 03:18
गुरु	04/10/2028 20:56
शनि	10/10/2028 11:52
बुध	15/10/2028 12:36
केतु	17/10/2028 14:19
शुक्र	23/10/2028 12:22
सूर्य	25/10/2028 06:58

शुक्र - राहु - राहु	
25/10/2028 06:58	
07/04/2029 15:40	
राहु	18/11/2028 22:41
गुरु	10/12/2028 20:38
शनि	05/01/2029 21:13
बुध	29/01/2029 04:03
केतु	07/02/2029 18:09
शुक्र	07/03/2029 03:36
सूर्य	15/03/2029 08:50
चंद्र	29/03/2029 01:34
मंगल	07/04/2029 15:40

शुक्र - राहु - गुरु	
07/04/2029 15:40	
31/08/2029 18:04	
गुरु	27/04/2029 03:12
शनि	20/05/2029 06:22
बुध	09/06/2029 23:07
केतु	18/06/2029 11:39
शुक्र	12/07/2029 20:03
सूर्य	20/07/2029 03:22
चंद्र	01/08/2029 07:34
मंगल	09/08/2029 20:07
राहु	31/08/2029 18:04

शुक्र - राहु - शनि	
31/08/2029 18:04	
21/02/2030 05:55	
शनि	28/09/2029 05:21
बुध	22/10/2029 19:14
केतु	01/11/2029 22:07
शुक्र	30/11/2029 20:06
सूर्य	09/12/2029 12:17
चंद्र	23/12/2029 23:16
मंगल	03/01/2030 02:10
राहु	29/01/2030 02:45
गुरु	21/02/2030 05:55

शुक्र - राहु - बुध	
21/02/2030 05:55	
26/07/2030 11:28	
बुध	15/03/2030 05:42
केतु	24/03/2030 07:02
शुक्र	19/04/2030 03:57
सूर्य	26/04/2030 22:14
चंद्र	09/05/2030 20:42
मंगल	18/05/2030 22:01
राहु	11/06/2030 04:51
गुरु	01/07/2030 21:36
शनि	26/07/2030 11:28

शुक्र - राहु - केतु	
26/07/2030 11:28	
28/09/2030 09:31	
केतु	30/07/2030 04:57
शुक्र	09/08/2030 20:38
सूर्य	13/08/2030 01:20
चंद्र	18/08/2030 09:10
मंगल	22/08/2030 02:40
राहु	31/08/2030 16:46
गुरु	09/09/2030 05:18
शनि	19/09/2030 08:12
बुध	28/09/2030 09:31

शुक्र - राहु - शुक्र	
28/09/2030 09:31	
30/03/2031 00:31	
शुक्र	28/10/2030 20:01
सूर्य	06/11/2030 23:10
चंद्र	22/11/2030 04:25
मंगल	02/12/2030 20:06
राहु	30/12/2030 05:33
गुरु	23/01/2031 13:57
शनि	21/02/2031 11:55
बुध	19/03/2031 08:51
केतु	30/03/2031 00:31

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - राहु - सूर्य	
30/03/2031 00:31	
23/05/2031 19:25	
सूर्य	01/04/2031 18:16
चंद्र	06/04/2031 07:51
मंगल	09/04/2031 12:33
राहु	17/04/2031 17:47
गुरु	25/04/2031 01:06
शनि	03/05/2031 17:18
बुध	11/05/2031 11:34
केतु	14/05/2031 16:16
शुक्र	23/05/2031 19:25

शुक्र - राहु - चंद्र	
23/05/2031 19:25	
23/08/2031 02:55	
चंद्र	31/05/2031 10:03
मंगल	05/06/2031 17:53
राहु	19/06/2031 10:37
गुरु	01/07/2031 14:49
शनि	16/07/2031 01:48
बुध	29/07/2031 00:16
केतु	03/08/2031 08:06
शुक्र	18/08/2031 13:21
सूर्य	23/08/2031 02:55

शुक्र - राहु - मंगल	
23/08/2031 02:55	
26/10/2031 00:58	
मंगल	26/08/2031 20:24
राहु	05/09/2031 10:31
गुरु	13/09/2031 23:03
शनि	24/09/2031 01:57
बुध	03/10/2031 03:16
केतु	06/10/2031 20:45
शुक्र	17/10/2031 12:26
सूर्य	20/10/2031 17:08
चंद्र	26/10/2031 00:58

शुक्र - गुरु - गुरु	
26/10/2031 00:58	
03/03/2032 21:46	
गुरु	12/11/2031 08:33
शनि	02/12/2031 22:02
बुध	21/12/2031 07:35
केतु	28/12/2031 21:24
शुक्र	19/01/2032 12:52
सूर्य	26/01/2032 00:42
चंद्र	05/02/2032 20:26
मंगल	13/02/2032 10:15
राहु	03/03/2032 21:46

शुक्र - गुरु - शनि	
03/03/2032 21:46	
05/08/2032 02:58	
शनि	28/03/2032 07:48
बुध	19/04/2032 04:08
केतु	28/04/2032 04:02
शुक्र	23/05/2032 20:54
सूर्य	31/05/2032 13:58
चंद्र	13/06/2032 10:24
मंगल	22/06/2032 10:18
राहु	15/07/2032 13:29
गुरु	05/08/2032 02:58

शुक्र - गुरु - बुध	
05/08/2032 02:58	
21/12/2032 02:34	
बुध	24/08/2032 16:07
केतु	01/09/2032 17:18
शुक्र	24/09/2032 17:14
सूर्य	01/10/2032 14:48
चंद्र	13/10/2032 02:46
मंगल	21/10/2032 03:57
राहु	10/11/2032 20:41
गुरु	29/11/2032 06:14
शनि	21/12/2032 02:34

शुक्र - गुरु - केतु	
21/12/2032 02:34	
15/02/2033 22:10	
केतु	24/12/2032 10:07
शुक्र	02/01/2033 21:23
सूर्य	05/01/2033 17:34
चंद्र	10/01/2033 11:12
मंगल	13/01/2033 18:44
राहु	22/01/2033 07:17
गुरु	29/01/2033 21:06
शनि	07/02/2033 21:00
बुध	15/02/2033 22:10

शुक्र - गुरु - शुक्र	
15/02/2033 22:10	
28/07/2033 06:10	
शुक्र	14/03/2033 23:30
सूर्य	23/03/2033 02:18
चंद्र	05/04/2033 14:58
मंगल	15/04/2033 02:14
राहु	09/05/2033 10:38
गुरु	31/05/2033 02:06
शनि	25/06/2033 18:58
बुध	18/07/2033 18:54
केतु	28/07/2033 06:10

शुक्र - गुरु - सूर्य	
28/07/2033 06:10	
14/09/2033 22:58	
सूर्य	30/07/2033 16:37
चंद्र	03/08/2033 18:01
मंगल	06/08/2033 14:12
राहु	13/08/2033 21:31
गुरु	20/08/2033 09:21
शनि	28/08/2033 02:25
बुध	03/09/2033 24:00
केतु	06/09/2033 20:10
शुक्र	14/09/2033 22:58

शुक्र - गुरु - चंद्र	
14/09/2033 22:58	
05/12/2033 02:58	
चंद्र	21/09/2033 17:18
मंगल	26/09/2033 10:56
राहु	08/10/2033 15:08
गुरु	19/10/2033 10:52
शनि	01/11/2033 07:18
बुध	12/11/2033 19:16
केतु	17/11/2033 12:54
शुक्र	01/12/2033 01:34
सूर्य	05/12/2033 02:58

शुक्र - गुरु - मंगल	
05/12/2033 02:58	
30/01/2034 22:34	
मंगल	08/12/2033 10:31
राहु	16/12/2033 23:03
गुरु	24/12/2033 12:52
शनि	02/01/2034 12:46
बुध	10/01/2034 13:57
केतु	13/01/2034 21:30
शुक्र	23/01/2034 08:46
सूर्य	26/01/2034 04:56
चंद्र	30/01/2034 22:34

शुक्र - गुरु - राहु	
30/01/2034 22:34	
26/06/2034 00:58	
राहु	21/02/2034 20:32
गुरु	13/03/2034 08:03
शनि	05/04/2034 11:14
बुध	26/04/2034 03:58
केतु	04/05/2034 16:31
शुक्र	29/05/2034 00:55
सूर्य	05/06/2034 08:14
चंद्र	17/06/2034 12:26
मंगल	26/06/2034 00:58

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - शनि	
26/06/2034 00:58	
26/12/2034 04:09	
शनि	25/07/2034 00:52
बुध	19/08/2034 23:31
केतु	30/08/2034 15:55
शुक्र	30/09/2034 04:26
सूर्य	09/10/2034 08:12
चंद्र	24/10/2034 14:28
मंगल	04/11/2034 06:51
राहु	01/12/2034 18:07
गुरु	26/12/2034 04:09

शुक्र - शनि - बुध	
26/12/2034 04:09	
08/06/2035 00:40	
बुध	18/01/2035 09:15
केतु	27/01/2035 22:39
शुक्र	24/02/2035 06:04
सूर्य	04/03/2035 10:42
चंद्र	18/03/2035 02:25
मंगल	27/03/2035 15:48
राहु	21/04/2035 05:41
गुरु	13/05/2035 02:01
शनि	08/06/2035 00:40

शुक्र - शनि - केतु	
08/06/2035 00:40	
14/08/2035 11:57	
केतु	11/06/2035 23:08
शुक्र	23/06/2035 05:01
सूर्य	26/06/2035 13:58
चंद्र	02/07/2035 04:55
मंगल	06/07/2035 03:22
राहु	16/07/2035 06:16
गुरु	25/07/2035 06:10
शनि	04/08/2035 22:33
बुध	14/08/2035 11:57

शुक्र - शनि - शुक्र	
14/08/2035 11:57	
23/02/2036 06:27	
शुक्र	15/09/2035 15:02
सूर्य	25/09/2035 06:21
चंद्र	11/10/2035 07:54
मंगल	22/10/2035 13:47
राहु	20/11/2035 11:45
गुरु	16/12/2035 04:37
शनि	15/01/2036 17:09
बुध	12/02/2036 00:34
केतु	23/02/2036 06:27

शुक्र - शनि - सूर्य	
23/02/2036 06:27	
21/04/2036 02:24	
सूर्य	26/02/2036 03:51
चंद्र	01/03/2036 23:30
मंगल	05/03/2036 08:28
राहु	14/03/2036 00:40
गुरु	21/03/2036 17:43
शनि	30/03/2036 21:29
बुध	08/04/2036 02:06
केतु	11/04/2036 11:04
शुक्र	21/04/2036 02:24

शुक्र - शनि - चंद्र	
21/04/2036 02:24	
26/07/2036 11:39	
चंद्र	29/04/2036 03:10
मंगल	04/05/2036 18:06
राहु	19/05/2036 05:06
गुरु	01/06/2036 01:32
शनि	16/06/2036 07:48
बुध	29/06/2036 23:30
केतु	05/07/2036 14:27
शुक्र	21/07/2036 15:59
सूर्य	26/07/2036 11:39

शुक्र - शनि - मंगल	
26/07/2036 11:39	
01/10/2036 22:55	
मंगल	30/07/2036 10:06
राहु	09/08/2036 13:00
गुरु	18/08/2036 12:54
शनि	29/08/2036 05:17
बुध	07/09/2036 18:41
केतु	11/09/2036 17:08
शुक्र	22/09/2036 23:01
सूर्य	26/09/2036 07:59
चंद्र	01/10/2036 22:55

शुक्र - शनि - राहु	
01/10/2036 22:55	
24/03/2037 10:46	
राहु	27/10/2036 23:30
गुरु	20/11/2036 02:41
शनि	17/12/2036 13:57
बुध	11/01/2037 03:50
केतु	21/01/2037 06:44
शुक्र	19/02/2037 04:42
सूर्य	27/02/2037 20:54
चंद्र	14/03/2037 07:53
मंगल	24/03/2037 10:46

शुक्र - शनि - गुरु	
24/03/2037 10:46	
25/08/2037 15:58	
गुरु	14/04/2037 00:16
शनि	08/05/2037 10:17
बुध	30/05/2037 06:38
केतु	08/06/2037 06:32
शुक्र	03/07/2037 23:24
सूर्य	11/07/2037 16:27
चंद्र	24/07/2037 12:53
मंगल	02/08/2037 12:48
राहु	25/08/2037 15:58

शुक्र - बुध - बुध	
25/08/2037 15:58	
19/01/2038 06:33	
बुध	15/09/2037 10:26
केतु	23/09/2037 23:41
शुक्र	18/10/2037 10:07
सूर्य	25/10/2037 18:03
चंद्र	06/11/2037 23:16
मंगल	15/11/2037 12:31
राहु	07/12/2037 12:18
गुरु	27/12/2037 01:26
शनि	19/01/2038 06:33

शुक्र - बुध - केतु	
19/01/2038 06:33	
20/03/2038 15:22	
केतु	22/01/2038 19:04
शुक्र	01/02/2038 20:32
सूर्य	04/02/2038 20:58
चंद्र	09/02/2038 21:43
मंगल	13/02/2038 10:13
राहु	22/02/2038 11:33
गुरु	02/03/2038 12:43
शनि	12/03/2038 02:07
बुध	20/03/2038 15:22

शुक्र - बुध - शुक्र	
20/03/2038 15:22	
09/09/2038 02:52	
शुक्र	18/04/2038 09:17
सूर्य	27/04/2038 00:16
चंद्र	11/05/2038 09:13
मंगल	21/05/2038 10:42
राहु	16/06/2038 07:37
गुरु	09/07/2038 07:33
शनि	05/08/2038 14:58
बुध	30/08/2038 01:24
केतु	09/09/2038 02:52

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - चंद्र - चंद्र - मंगल	
29/12/2025 15:26	
01/01/2026 14:27	
मंगल	29/12/2025 19:34
राहु	30/12/2025 06:14
गुरु	30/12/2025 15:42
शनि	31/12/2025 02:56
बुध	31/12/2025 13:00
केतु	31/12/2025 17:09
शुक्र	01/01/2026 04:59
सूर्य	01/01/2026 08:32
चंद्र	01/01/2026 14:27

शुक्र - चंद्र - चंद्र - राहु	
01/01/2026 14:27	
09/01/2026 05:05	
राहु	02/01/2026 17:51
गुरु	03/01/2026 18:12
शनि	04/01/2026 23:07
बुध	06/01/2026 00:59
केतु	06/01/2026 11:38
शुक्र	07/01/2026 18:04
सूर्य	08/01/2026 03:12
चंद्र	08/01/2026 18:25
मंगल	09/01/2026 05:05

शुक्र - चंद्र - चंद्र - गुरु	
09/01/2026 05:05	
15/01/2026 23:25	
गुरु	10/01/2026 02:43
शनि	11/01/2026 04:25
बुध	12/01/2026 03:25
केतु	12/01/2026 12:53
शुक्र	13/01/2026 15:57
सूर्य	14/01/2026 00:04
चंद्र	14/01/2026 13:35
मंगल	14/01/2026 23:04
राहु	15/01/2026 23:25

शुक्र - चंद्र - चंद्र - शनि	
15/01/2026 23:25	
24/01/2026 00:11	
शनि	17/01/2026 05:56
बुध	18/01/2026 09:14
केतु	18/01/2026 20:29
शुक्र	20/01/2026 04:37
सूर्य	20/01/2026 14:15
चंद्र	21/01/2026 06:19
मंगल	21/01/2026 17:34
राहु	22/01/2026 22:29
गुरु	24/01/2026 00:11

शुक्र - चंद्र - चंद्र - बुध	
24/01/2026 00:11	
31/01/2026 04:40	
बुध	25/01/2026 00:37
केतु	25/01/2026 10:41
शुक्र	26/01/2026 15:25
सूर्य	27/01/2026 00:03
चंद्र	27/01/2026 14:25
मंगल	28/01/2026 00:29
राहु	29/01/2026 02:21
गुरु	30/01/2026 01:21
शनि	31/01/2026 04:40

शुक्र - चंद्र - चंद्र - केतु	
31/01/2026 04:40	
03/02/2026 03:41	
केतु	31/01/2026 08:48
शुक्र	31/01/2026 20:38
सूर्य	01/02/2026 00:11
चंद्र	01/02/2026 06:07
मंगल	01/02/2026 10:15
राहु	01/02/2026 20:54
गुरु	02/02/2026 06:22
शनि	02/02/2026 17:37
बुध	03/02/2026 03:41

शुक्र - चंद्र - चंद्र - शुक्र	
03/02/2026 03:41	
11/02/2026 14:36	
शुक्र	04/02/2026 13:30
सूर्य	04/02/2026 23:39
चंद्र	05/02/2026 16:33
मंगल	06/02/2026 04:24
राहु	07/02/2026 10:50
गुरु	08/02/2026 13:53
शनि	09/02/2026 22:01
बुध	11/02/2026 02:46
केतु	11/02/2026 14:36

शुक्र - चंद्र - चंद्र - सूर्य	
11/02/2026 14:36	
14/02/2026 03:28	
सूर्य	11/02/2026 17:38
चंद्र	11/02/2026 22:43
मंगल	12/02/2026 02:16
राहु	12/02/2026 11:24
गुरु	12/02/2026 19:31
शनि	13/02/2026 05:09
बुध	13/02/2026 13:47
केतु	13/02/2026 17:20
शुक्र	14/02/2026 03:28

शुक्र - चंद्र - मंगल - मंगल	
14/02/2026 03:28	
16/02/2026 05:11	
मंगल	14/02/2026 06:22
राहु	14/02/2026 13:50
गुरु	14/02/2026 20:27
शनि	15/02/2026 04:20
बुध	15/02/2026 11:22
केतु	15/02/2026 14:16
शुक्र	15/02/2026 22:33
सूर्य	16/02/2026 01:03
चंद्र	16/02/2026 05:11

शुक्र - चंद्र - मंगल - राहु	
16/02/2026 05:11	
21/02/2026 13:01	
राहु	17/02/2026 00:22
गुरु	17/02/2026 17:24
शनि	18/02/2026 13:39
बुध	19/02/2026 07:46
केतु	19/02/2026 15:13
शुक्र	20/02/2026 12:31
सूर्य	20/02/2026 18:55
चंद्र	21/02/2026 05:34
मंगल	21/02/2026 13:01

शुक्र - चंद्र - मंगल - गुरु	
21/02/2026 13:01	
26/02/2026 06:39	
गुरु	22/02/2026 04:11
शनि	22/02/2026 22:10
बुध	23/02/2026 14:16
केतु	23/02/2026 20:54
शुक्र	24/02/2026 15:50
सूर्य	24/02/2026 21:31
चंद्र	25/02/2026 06:59
मंगल	25/02/2026 13:37
राहु	26/02/2026 06:39

शुक्र - चंद्र - मंगल - शनि	
26/02/2026 06:39	
03/03/2026 21:36	
शनि	27/02/2026 04:01
बुध	27/02/2026 23:08
केतु	28/02/2026 07:01
शुक्र	01/03/2026 05:30
सूर्य	01/03/2026 12:15
चंद्र	01/03/2026 23:30
मंगल	02/03/2026 07:22
राहु	03/03/2026 03:36
गुरु	03/03/2026 21:36

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - चंद्र - मंगल - बुध	
03/03/2026 21:36	
08/03/2026 22:20	
बुध	04/03/2026 14:42
केतु	04/03/2026 21:45
शुक्र	05/03/2026 17:52
सूर्य	05/03/2026 23:54
चंद्र	06/03/2026 09:58
मंगल	06/03/2026 17:00
राहु	07/03/2026 11:07
गुरु	08/03/2026 03:13
शनि	08/03/2026 22:20

शुक्र - चंद्र - मंगल - केतु	
08/03/2026 22:20	
11/03/2026 00:03	
केतु	09/03/2026 01:14
शुक्र	09/03/2026 09:31
सूर्य	09/03/2026 12:00
चंद्र	09/03/2026 16:09
मंगल	09/03/2026 19:03
राहु	10/03/2026 02:30
गुरु	10/03/2026 09:08
शनि	10/03/2026 17:00
बुध	11/03/2026 00:03

शुक्र - चंद्र - मंगल - शुक्र	
11/03/2026 00:03	
16/03/2026 22:05	
शुक्र	11/03/2026 23:43
सूर्य	12/03/2026 06:49
चंद्र	12/03/2026 18:40
मंगल	13/03/2026 02:57
राहु	14/03/2026 00:15
गुरु	14/03/2026 19:11
शनि	15/03/2026 17:41
बुध	16/03/2026 13:48
केतु	16/03/2026 22:05

शुक्र - चंद्र - मंगल - सूर्य	
16/03/2026 22:05	
18/03/2026 16:42	
सूर्य	17/03/2026 00:13
चंद्र	17/03/2026 03:46
मंगल	17/03/2026 06:15
राहु	17/03/2026 12:39
गुरु	17/03/2026 18:20
शनि	18/03/2026 01:05
बुध	18/03/2026 07:07
केतु	18/03/2026 09:36
शुक्र	18/03/2026 16:42

शुक्र - चंद्र - मंगल - चंद्र	
18/03/2026 16:42	
21/03/2026 15:43	
चंद्र	18/03/2026 22:37
मंगल	19/03/2026 02:46
राहु	19/03/2026 13:25
गुरु	19/03/2026 22:53
शनि	20/03/2026 10:08
बुध	20/03/2026 20:11
केतु	21/03/2026 00:20
शुक्र	21/03/2026 12:10
सूर्य	21/03/2026 15:43

शुक्र - चंद्र - राहु - राहु	
21/03/2026 15:43	
04/04/2026 08:27	
राहु	23/03/2026 17:02
गुरु	25/03/2026 12:52
शनि	27/03/2026 16:55
बुध	29/03/2026 15:29
केतु	30/03/2026 10:39
शुक्र	01/04/2026 17:26
सूर्य	02/04/2026 09:53
चंद्र	03/04/2026 13:16
मंगल	04/04/2026 08:27

शुक्र - चंद्र - राहु - गुरु	
04/04/2026 08:27	
16/04/2026 12:39	
गुरु	05/04/2026 23:24
शनि	07/04/2026 21:40
बुध	09/04/2026 15:04
केतु	10/04/2026 08:07
शुक्र	12/04/2026 08:49
सूर्य	12/04/2026 23:25
चंद्र	13/04/2026 23:46
मंगल	14/04/2026 16:49
राहु	16/04/2026 12:39

शुक्र - चंद्र - राहु - शनि	
16/04/2026 12:39	
30/04/2026 23:38	
शनि	18/04/2026 19:35
बुध	20/04/2026 20:45
केतु	21/04/2026 16:59
शुक्र	24/04/2026 02:49
सूर्य	24/04/2026 20:10
चंद्र	26/04/2026 01:05
मंगल	26/04/2026 21:19
राहु	29/04/2026 01:22
गुरु	30/04/2026 23:38

शुक्र - चंद्र - राहु - बुध	
30/04/2026 23:38	
13/05/2026 22:06	
बुध	02/05/2026 19:37
केतु	03/05/2026 13:44
शुक्र	05/05/2026 17:28
सूर्य	06/05/2026 09:00
चंद्र	07/05/2026 10:52
मंगल	08/05/2026 04:59
राहु	10/05/2026 03:33
गुरु	11/05/2026 20:56
शनि	13/05/2026 22:06

शुक्र - चंद्र - राहु - केतु	
13/05/2026 22:06	
19/05/2026 05:56	
केतु	14/05/2026 05:33
शुक्र	15/05/2026 02:52
सूर्य	15/05/2026 09:15
चंद्र	15/05/2026 19:54
मंगल	16/05/2026 03:22
राहु	16/05/2026 22:32
गुरु	17/05/2026 15:35
शनि	18/05/2026 11:49
बुध	19/05/2026 05:56

शुक्र - चंद्र - राहु - शुक्र	
19/05/2026 05:56	
03/06/2026 11:11	
शुक्र	21/05/2026 18:49
सूर्य	22/05/2026 13:04
चंद्र	23/05/2026 19:31
मंगल	24/05/2026 16:49
राहु	26/05/2026 23:36
गुरु	29/05/2026 00:18
शनि	31/05/2026 10:08
बुध	02/06/2026 13:53
केतु	03/06/2026 11:11

शुक्र - चंद्र - राहु - सूर्य	
03/06/2026 11:11	
08/06/2026 00:46	
सूर्य	03/06/2026 16:40
चंद्र	04/06/2026 01:48
मंगल	04/06/2026 08:11
राहु	05/06/2026 00:37
गुरु	05/06/2026 15:14
शनि	06/06/2026 08:35
बुध	07/06/2026 00:06
केतु	07/06/2026 06:30
शुक्र	08/06/2026 00:46

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 8 मास 9 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
02/04/1992		12/12/1995		11/12/2009		11/12/2024		11/12/2040	
12/12/1995		11/12/2009		11/12/2024		11/12/2040		11/12/2057	
	00/00/0000	शनि	20/08/1997	केतु	20/11/2011	चंद्र	25/02/2027	बुध	09/06/2043
	00/00/0000	केतु	12/06/1999	चंद्र	14/12/2013	बुध	01/07/2029	शुक्र	28/01/2046
	00/00/0000	चंद्र	17/05/2001	बुध	25/02/2016	शुक्र	24/12/2031	सूर्य	08/09/2047
	00/00/0000	बुध	06/06/2003	शुक्र	25/06/2018	सूर्य	01/07/2033	मंगल	12/06/2049
	02/04/1992	शुक्र	07/08/2005	सूर्य	26/11/2019	मंगल	25/02/2035	गुरु	09/05/2051
शुक्र	14/05/1993	सूर्य	05/12/2006	मंगल	15/06/2021	गुरु	11/12/2036	शनि	27/05/2053
सूर्य	08/08/1994	मंगल	17/05/2008	गुरु	19/02/2023	शनि	16/11/2038	केतु	08/08/2055
मंगल	12/12/1995	गुरु	11/12/2009	शनि	11/12/2024	केतु	11/12/2040	चंद्र	11/12/2057

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
11/12/2057		12/12/2075		12/12/2086		12/12/2098	
12/12/2075		12/12/2086		12/12/2098		00/00/0000	
शुक्र	26/09/2060	सूर्य	27/12/2076	मंगल	09/03/2088	गुरु	28/05/2100
सूर्य	12/06/2062	मंगल	15/02/2078	गुरु	13/07/2089	शनि	22/12/2101
मंगल	22/04/2064	गुरु	12/05/2079	शनि	24/12/2090	केतु	28/08/2103
गुरु	29/04/2066	शनि	08/09/2080	केतु	13/07/2092	चंद्र	13/06/2105
शनि	30/06/2068	केतु	09/02/2082	चंद्र	09/03/2094	बुध	10/05/2107
केतु	28/10/2070	चंद्र	17/08/2083	बुध	12/12/2095	शुक्र	03/04/2108
चंद्र	22/04/2073	बुध	28/03/2085	शुक्र	22/10/2097		00/00/0000
बुध	12/12/2075	शुक्र	12/12/2086	सूर्य	12/12/2098		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
02/04/1992		14/05/1993		08/08/1994		12/12/1995		20/08/1997	
14/05/1993		08/08/1994		12/12/1995		20/08/1997		12/06/1999	
	00/00/0000	सूर्य	26/06/1993	मंगल	27/09/1994	शनि	24/02/1996	केतु	13/11/1997
	00/00/0000	मंगल	12/08/1993	गुरु	21/11/1994	केतु	14/05/1996	चंद्र	13/02/1998
	02/04/1992	गुरु	01/10/1993	शनि	20/01/1995	चंद्र	07/08/1996	बुध	21/05/1998
गुरु	16/04/1992	शनि	24/11/1993	केतु	24/03/1995	बुध	06/11/1996	शुक्र	31/08/1998
शनि	13/07/1992	केतु	22/01/1994	चंद्र	31/05/1995	शुक्र	09/02/1997	सूर्य	02/11/1998
केतु	17/10/1992	चंद्र	25/03/1994	बुध	11/08/1995	सूर्य	09/04/1997	मंगल	09/01/1999
चंद्र	26/01/1993	बुध	30/05/1994	शुक्र	26/10/1995	मंगल	12/06/1997	गुरु	24/03/1999
बुध	14/05/1993	शुक्र	08/08/1994	सूर्य	12/12/1995	गुरु	20/08/1997	शनि	12/06/1999

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
12/06/1999		17/05/2001		06/06/2003		07/08/2005		05/12/2006	
17/05/2001		06/06/2003		07/08/2005		05/12/2006		17/05/2008	
चंद्र	17/09/1999	बुध	04/09/2001	शुक्र	07/10/2003	सूर्य	22/09/2005	मंगल	29/01/2007
बुध	30/12/1999	शुक्र	30/12/2001	सूर्य	21/12/2003	मंगल	12/11/2005	गुरु	29/03/2007
शुक्र	17/04/2000	सूर्य	11/03/2002	मंगल	12/03/2004	गुरु	05/01/2006	शनि	01/06/2007
सूर्य	23/06/2000	मंगल	27/05/2002	गुरु	09/06/2004	शनि	04/03/2006	केतु	09/08/2007
मंगल	04/09/2000	गुरु	19/08/2002	शनि	13/09/2004	केतु	06/05/2006	चंद्र	20/10/2007
गुरु	22/11/2000	शनि	18/11/2002	केतु	25/12/2004	चंद्र	12/07/2006	बुध	06/01/2008
शनि	15/02/2001	केतु	23/02/2003	चंद्र	13/04/2005	बुध	21/09/2006	शुक्र	28/03/2008
केतु	17/05/2001	चंद्र	06/06/2003	बुध	07/08/2005	शुक्र	05/12/2006	सूर्य	17/05/2008

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
17/05/2008		11/12/2009		20/11/2011		14/12/2013		25/02/2016	
11/12/2009		20/11/2011		14/12/2013		25/02/2016		25/06/2018	
गुरु	20/07/2008	केतु	13/03/2010	चंद्र	03/03/2012	बुध	11/04/2014	शुक्र	06/07/2016
शनि	28/09/2008	चंद्र	19/06/2010	बुध	22/06/2012	शुक्र	14/08/2014	सूर्य	25/09/2016
केतु	11/12/2008	बुध	30/09/2010	शुक्र	17/10/2012	सूर्य	29/10/2014	मंगल	22/12/2016
चंद्र	28/02/2009	शुक्र	18/01/2011	सूर्य	28/12/2012	मंगल	20/01/2015	गुरु	27/03/2017
बुध	23/05/2009	सूर्य	27/03/2011	मंगल	16/03/2013	गुरु	20/04/2015	शनि	08/07/2017
शुक्र	20/08/2009	मंगल	08/06/2011	गुरु	09/06/2013	शनि	26/07/2015	केतु	26/10/2017
सूर्य	13/10/2009	गुरु	26/08/2011	शनि	08/09/2013	केतु	07/11/2015	चंद्र	20/02/2018
मंगल	11/12/2009	शनि	20/11/2011	केतु	14/12/2013	चंद्र	25/02/2016	बुध	25/06/2018

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
25/06/2018		26/11/2019		15/06/2021		19/02/2023		11/12/2024	
26/11/2019		15/06/2021		19/02/2023		11/12/2024		25/02/2027	
सूर्य	13/08/2018	मंगल	24/01/2020	गुरु	23/08/2021	शनि	10/05/2023	चंद्र	01/04/2025
मंगल	06/10/2018	गुरु	27/03/2020	शनि	05/11/2021	केतु	03/08/2023	बुध	28/07/2025
गुरु	03/12/2018	शनि	04/06/2020	केतु	23/01/2022	चंद्र	02/11/2023	शुक्र	30/11/2025
शनि	03/02/2019	केतु	16/08/2020	चंद्र	18/04/2022	बुध	07/02/2024	सूर्य	15/02/2026
केतु	12/04/2019	चंद्र	02/11/2020	बुध	17/07/2022	शुक्र	20/05/2024	मंगल	09/05/2026
चंद्र	22/06/2019	बुध	24/01/2021	शुक्र	20/10/2022	सूर्य	22/07/2024	गुरु	08/08/2026
बुध	06/09/2019	शुक्र	22/04/2021	सूर्य	17/12/2022	मंगल	28/09/2024	शनि	13/11/2026
शुक्र	26/11/2019	सूर्य	15/06/2021	मंगल	19/02/2023	गुरु	11/12/2024	केतु	25/02/2027

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
25/02/2027		01/07/2029		24/12/2031		01/07/2033		25/02/2035	
01/07/2029		24/12/2031		01/07/2033		25/02/2035		11/12/2036	
बुध	01/07/2027	शुक्र	18/11/2029	सूर्य	15/02/2032	मंगल	01/09/2033	गुरु	10/05/2035
शुक्र	11/11/2027	सूर्य	12/02/2030	मंगल	12/04/2032	गुरु	08/11/2033	शनि	28/07/2035
सूर्य	31/01/2028	मंगल	17/05/2030	गुरु	13/06/2032	शनि	20/01/2034	केतु	20/10/2035
मंगल	28/04/2028	गुरु	27/08/2030	शनि	19/08/2032	केतु	08/04/2034	चंद्र	19/01/2036
गुरु	02/08/2028	शनि	14/12/2030	केतु	30/10/2032	चंद्र	30/06/2034	बुध	24/04/2036
शनि	14/11/2028	केतु	10/04/2031	चंद्र	14/01/2033	बुध	27/09/2034	शुक्र	03/08/2036
केतु	04/03/2029	चंद्र	14/08/2031	बुध	06/04/2033	शुक्र	30/12/2034	सूर्य	04/10/2036
चंद्र	01/07/2029	बुध	24/12/2031	शुक्र	01/07/2033	सूर्य	25/02/2035	मंगल	11/12/2036

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
11/12/2036		16/11/2038		11/12/2040		09/06/2043		28/01/2046	
16/11/2038		11/12/2040		09/06/2043		28/01/2046		08/09/2047	
शनि	06/03/2037	केतु	22/02/2039	बुध	23/04/2041	शुक्र	06/11/2043	सूर्य	24/03/2046
केतु	05/06/2037	चंद्र	06/06/2039	शुक्र	12/09/2041	सूर्य	05/02/2044	मंगल	24/05/2046
चंद्र	11/09/2037	बुध	25/09/2039	सूर्य	07/12/2041	मंगल	15/05/2044	गुरु	29/07/2046
बुध	23/12/2037	शुक्र	20/01/2040	मंगल	11/03/2042	गुरु	31/08/2044	शनि	08/10/2046
शुक्र	11/04/2038	सूर्य	01/04/2040	गुरु	21/06/2042	शनि	25/12/2044	केतु	23/12/2046
सूर्य	17/06/2038	मंगल	18/06/2040	शनि	09/10/2042	केतु	28/04/2045	चंद्र	15/03/2047
मंगल	29/08/2038	गुरु	11/09/2040	केतु	04/02/2043	चंद्र	08/09/2045	बुध	09/06/2047
गुरु	16/11/2038	शनि	11/12/2040	चंद्र	09/06/2043	बुध	28/01/2046	शुक्र	08/09/2047

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
08/09/2047		12/06/2049		09/05/2051		27/05/2053		08/08/2055	
12/06/2049		09/05/2051		27/05/2053		08/08/2055		11/12/2057	
मंगल	14/11/2047	गुरु	29/08/2049	शनि	07/08/2051	केतु	08/09/2053	चंद्र	04/12/2055
गुरु	25/01/2048	शनि	21/11/2049	केतु	12/11/2051	चंद्र	28/12/2053	बुध	08/04/2056
शनि	11/04/2048	केतु	19/02/2050	चंद्र	23/02/2052	बुध	24/04/2054	शुक्र	18/08/2056
केतु	03/07/2048	चंद्र	26/05/2050	बुध	12/06/2052	शुक्र	27/08/2054	सूर्य	08/11/2056
चंद्र	30/09/2048	बुध	05/09/2050	शुक्र	06/10/2052	सूर्य	11/11/2054	मंगल	04/02/2057
बुध	02/01/2049	शुक्र	22/12/2050	सूर्य	16/12/2052	मंगल	02/02/2055	गुरु	11/05/2057
शुक्र	12/04/2049	सूर्य	26/02/2051	मंगल	04/03/2053	गुरु	03/05/2055	शनि	23/08/2057
सूर्य	12/06/2049	मंगल	09/05/2051	गुरु	27/05/2053	शनि	08/08/2055	केतु	11/12/2057

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
11/12/2057		26/09/2060		12/06/2062		22/04/2064		29/04/2066	
26/09/2060		12/06/2062		22/04/2064		29/04/2066		30/06/2068	
शुक्र	19/05/2058	सूर्य	25/11/2060	मंगल	21/08/2062	गुरु	14/07/2064	शनि	03/08/2066
सूर्य	23/08/2058	मंगल	28/01/2061	गुरु	06/11/2062	शनि	11/10/2064	केतु	13/11/2066
मंगल	07/12/2058	गुरु	08/04/2061	शनि	27/01/2063	केतु	14/01/2065	चंद्र	03/03/2067
गुरु	31/03/2059	शनि	22/06/2061	केतु	25/04/2063	चंद्र	25/04/2065	बुध	27/06/2067
शनि	01/08/2059	केतु	11/09/2061	चंद्र	27/07/2063	बुध	11/08/2065	शुक्र	28/10/2067
केतु	11/12/2059	चंद्र	06/12/2061	बुध	04/11/2063	शुक्र	04/12/2065	सूर्य	11/01/2068
चंद्र	30/04/2060	बुध	07/03/2062	शुक्र	18/02/2064	सूर्य	12/02/2066	मंगल	02/04/2068
बुध	26/09/2060	शुक्र	12/06/2062	सूर्य	22/04/2064	मंगल	29/04/2066	गुरु	30/06/2068

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
30/06/2068		28/10/2070		22/04/2073		12/12/2075		27/12/2076	
28/10/2070		22/04/2073		12/12/2075		27/12/2076		15/02/2078	
केतु	18/10/2068	चंद्र	03/03/2071	बुध	11/09/2073	सूर्य	17/01/2076	मंगल	08/02/2077
चंद्र	13/02/2069	बुध	13/07/2071	शुक्र	07/02/2074	मंगल	25/02/2076	गुरु	26/03/2077
बुध	17/06/2069	शुक्र	01/12/2071	सूर्य	09/05/2074	गुरु	08/04/2076	शनि	16/05/2077
शुक्र	27/10/2069	सूर्य	25/02/2072	मंगल	17/08/2074	शनि	24/05/2076	केतु	08/07/2077
सूर्य	16/01/2070	मंगल	29/05/2072	गुरु	03/12/2074	केतु	12/07/2076	चंद्र	04/09/2077
मंगल	14/04/2070	गुरु	08/09/2072	शनि	29/03/2075	चंद्र	03/09/2076	बुध	04/11/2077
गुरु	18/07/2070	शनि	26/12/2072	केतु	01/08/2075	बुध	29/10/2076	शुक्र	07/01/2078
शनि	28/10/2070	केतु	22/04/2073	चंद्र	12/12/2075	शुक्र	27/12/2076	सूर्य	15/02/2078

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
15/02/2078		12/05/2079		08/09/2080		09/02/2082		17/08/2083	
12/05/2079		08/09/2080		09/02/2082		17/08/2083		28/03/2085	
गुरु	07/04/2078	शनि	09/07/2079	केतु	14/11/2080	चंद्र	27/04/2082	बुध	12/11/2083
शनि	31/05/2078	केतु	10/09/2079	चंद्र	24/01/2081	बुध	17/07/2082	शुक्र	11/02/2084
केतु	28/07/2078	चंद्र	16/11/2079	बुध	11/04/2081	शुक्र	11/10/2082	सूर्य	07/04/2084
चंद्र	29/09/2078	बुध	26/01/2080	शुक्र	30/06/2081	सूर्य	02/12/2082	मंगल	07/06/2084
बुध	04/12/2078	शुक्र	10/04/2080	सूर्य	18/08/2081	मंगल	29/01/2083	गुरु	12/08/2084
शुक्र	11/02/2079	सूर्य	26/05/2080	मंगल	11/10/2081	गुरु	01/04/2083	शनि	22/10/2084
सूर्य	26/03/2079	मंगल	15/07/2080	गुरु	08/12/2081	शनि	07/06/2083	केतु	06/01/2085
मंगल	12/05/2079	गुरु	08/09/2080	शनि	09/02/2082	केतु	17/08/2083	चंद्र	28/03/2085

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
28/03/2085		12/12/2086		09/03/2088		13/07/2089		24/12/2090	
12/12/2086		09/03/2088		13/07/2089		24/12/2090		13/07/2092	
शुक्र	03/07/2085	मंगल	27/01/2087	गुरु	03/05/2088	शनि	15/09/2089	केतु	07/03/2091
सूर्य	31/08/2085	गुरु	19/03/2087	शनि	01/07/2088	केतु	22/11/2089	चंद्र	25/05/2091
मंगल	03/11/2085	शनि	13/05/2087	केतु	03/09/2088	चंद्र	03/02/2090	बुध	16/08/2091
गुरु	12/01/2086	केतु	11/07/2087	चंद्र	10/11/2088	बुध	22/04/2090	शुक्र	12/11/2091
शनि	29/03/2086	चंद्र	11/09/2087	बुध	21/01/2089	शुक्र	13/07/2090	सूर्य	04/01/2092
केतु	17/06/2086	बुध	17/11/2087	शुक्र	07/04/2089	सूर्य	01/09/2090	मंगल	03/03/2092
चंद्र	11/09/2086	शुक्र	26/01/2088	सूर्य	23/05/2089	मंगल	26/10/2090	गुरु	06/05/2092
बुध	12/12/2086	सूर्य	09/03/2088	मंगल	13/07/2089	गुरु	24/12/2090	शनि	13/07/2092

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
13/07/2092		09/03/2094		12/12/2095		22/10/2097		12/12/2098	
09/03/2094		12/12/2095		22/10/2097		12/12/2098		28/05/2100	
चंद्र	04/10/2092	बुध	12/06/2094	शुक्र	26/03/2096	सूर्य	30/11/2097	गुरु	09/02/2099
बुध	01/01/2093	शुक्र	19/09/2094	सूर्य	30/05/2096	मंगल	12/01/2098	शनि	14/04/2099
शुक्र	05/04/2093	सूर्य	19/11/2094	मंगल	08/08/2096	गुरु	28/02/2098	केतु	22/06/2099
सूर्य	01/06/2093	मंगल	25/01/2095	गुरु	23/10/2096	शनि	19/04/2098	चंद्र	04/09/2099
मंगल	03/08/2093	गुरु	07/04/2095	शनि	14/01/2097	केतु	12/06/2098	बुध	21/11/2099
गुरु	09/10/2093	शनि	23/06/2095	केतु	11/04/2097	चंद्र	08/08/2098	शुक्र	11/02/2100
शनि	21/12/2093	केतु	14/09/2095	चंद्र	14/07/2097	बुध	08/10/2098	सूर्य	03/04/2100
केतु	09/03/2094	चंद्र	12/12/2095	बुध	22/10/2097	शुक्र	12/12/2098	मंगल	28/05/2100

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 3 वर्ष 7 मास 5 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
02/04/1992		07/11/1995		09/03/2007		07/11/2011		08/03/2025	
07/11/1995		09/03/2007		07/11/2011		08/03/2025		08/03/2029	
	00/00/0000	बुध	16/06/1997	केतु	16/06/2007	शुक्र	27/01/2014	सूर्य	20/05/2025
	00/00/0000	केतु	12/02/1998	शुक्र	26/03/2008	सूर्य	27/09/2014	चंद्र	19/09/2025
	00/00/0000	शुक्र	03/01/2000	सूर्य	19/06/2008	चंद्र	07/11/2015	मंगल	13/12/2025
	00/00/0000	सूर्य	28/07/2000	चंद्र	09/11/2008	मंगल	17/08/2016	राहु	20/07/2026
	00/00/0000	चंद्र	08/07/2001	मंगल	16/02/2009	राहु	18/08/2018	गुरु	31/01/2027
	02/04/1992	मंगल	06/03/2002	राहु	30/10/2009	गुरु	28/05/2020	शनि	20/09/2027
मंगल	05/04/1992	राहु	17/11/2003	गुरु	14/06/2010	शनि	08/07/2022	बुध	14/04/2028
राहु	28/02/1994	गुरु	22/05/2005	शनि	11/03/2011	बुध	28/05/2024	केतु	08/07/2028
गुरु	07/11/1995	शनि	09/03/2007	बुध	07/11/2011	केतु	08/03/2025	शुक्र	08/03/2029

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
08/03/2029		07/11/2035		08/07/2040		08/07/2052		09/03/2063	
07/11/2035		08/07/2040		08/07/2052		09/03/2063		00/00/0000	
चंद्र	27/09/2029	मंगल	15/02/2036	राहु	26/04/2042	गुरु	09/12/2053	शनि	10/03/2065
मंगल	16/02/2030	राहु	27/10/2036	गुरु	02/12/2043	शनि	18/08/2055	बुध	26/12/2066
राहु	16/02/2031	गुरु	12/06/2037	शनि	26/10/2045	बुध	20/02/2057	केतु	22/09/2067
गुरु	07/01/2032	शनि	08/03/2038	बुध	08/07/2047	केतु	05/10/2057	शुक्र	01/11/2069
शनि	27/01/2033	बुध	05/11/2038	केतु	20/03/2048	शुक्र	17/07/2059	सूर्य	20/06/2070
बुध	07/01/2034	केतु	12/02/2039	शुक्र	21/03/2050	सूर्य	27/01/2060	चंद्र	11/07/2071
केतु	29/05/2034	शुक्र	23/11/2039	सूर्य	26/10/2050	चंद्र	17/12/2060	मंगल	02/04/2072
शुक्र	08/07/2035	सूर्य	17/02/2040	चंद्र	26/10/2051	मंगल	01/08/2061		00/00/0000
सूर्य	07/11/2035	चंद्र	08/07/2040	मंगल	08/07/2052	राहु	09/03/2063		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
02/04/1992		05/04/1992		28/02/1994		07/11/1995		16/06/1997	
05/04/1992		28/02/1994		07/11/1995		16/06/1997		12/02/1998	
	00/00/0000	राहु	18/07/1992	गुरु	22/05/1994	बुध	29/01/1996	केतु	30/06/1997
	00/00/0000	गुरु	19/10/1992	शनि	27/08/1994	केतु	04/03/1996	शुक्र	09/08/1997
	00/00/0000	शनि	06/02/1993	बुध	23/11/1994	शुक्र	09/06/1996	सूर्य	21/08/1997
	00/00/0000	बुध	15/05/1993	केतु	29/12/1994	सूर्य	09/07/1996	चंद्र	10/09/1997
	00/00/0000	केतु	25/06/1993	शुक्र	10/04/1995	चंद्र	26/08/1996	मंगल	24/09/1997
	00/00/0000	शुक्र	18/10/1993	सूर्य	11/05/1995	मंगल	30/09/1996	राहु	31/10/1997
	00/00/0000	सूर्य	22/11/1993	चंद्र	02/07/1995	राहु	27/12/1996	गुरु	02/12/1997
	02/04/1992	चंद्र	19/01/1994	मंगल	07/08/1995	गुरु	15/03/1997	शनि	09/01/1998
चंद्र	05/04/1992	मंगल	28/02/1994	राहु	07/11/1995	शनि	16/06/1997	बुध	12/02/1998

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
12/02/1998		03/01/2000		28/07/2000		08/07/2001		06/03/2002	
03/01/2000		28/07/2000		08/07/2001		06/03/2002		17/11/2003	
शुक्र	07/06/1998	सूर्य	13/01/2000	चंद्र	26/08/2000	मंगल	22/07/2001	राहु	08/06/2002
सूर्य	12/07/1998	चंद्र	31/01/2000	मंगल	15/09/2000	राहु	27/08/2001	गुरु	29/08/2002
चंद्र	07/09/1998	मंगल	12/02/2000	राहु	06/11/2000	गुरु	28/09/2001	शनि	06/12/2002
मंगल	17/10/1998	राहु	14/03/2000	गुरु	22/12/2000	शनि	06/11/2001	बुध	04/03/2003
राहु	29/01/1999	गुरु	10/04/2000	शनि	14/02/2001	बुध	10/12/2001	केतु	09/04/2003
गुरु	01/05/1999	शनि	13/05/2000	बुध	04/04/2001	केतु	24/12/2001	शुक्र	21/07/2003
शनि	18/08/1999	बुध	11/06/2000	केतु	24/04/2001	शुक्र	02/02/2002	सूर्य	21/08/2003
बुध	24/11/1999	केतु	24/06/2000	शुक्र	21/06/2001	सूर्य	14/02/2002	चंद्र	12/10/2003
केतु	03/01/2000	शुक्र	28/07/2000	सूर्य	08/07/2001	चंद्र	06/03/2002	मंगल	17/11/2003

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
17/11/2003		22/05/2005		09/03/2007		16/06/2007		26/03/2008	
22/05/2005		09/03/2007		16/06/2007		26/03/2008		19/06/2008	
गुरु	30/01/2004	शनि	03/09/2005	केतु	15/03/2007	शुक्र	03/08/2007	सूर्य	31/03/2008
शनि	26/04/2004	बुध	05/12/2005	शुक्र	31/03/2007	सूर्य	17/08/2007	चंद्र	07/04/2008
बुध	14/07/2004	केतु	12/01/2006	सूर्य	05/04/2007	चंद्र	09/09/2007	मंगल	12/04/2008
केतु	15/08/2004	शुक्र	01/05/2006	चंद्र	13/04/2007	मंगल	26/09/2007	राहु	24/04/2008
शुक्र	15/11/2004	सूर्य	03/06/2006	मंगल	19/04/2007	राहु	08/11/2007	गुरु	06/05/2008
सूर्य	12/12/2004	चंद्र	28/07/2006	राहु	04/05/2007	गुरु	15/12/2007	शनि	19/05/2008
चंद्र	27/01/2005	मंगल	04/09/2006	गुरु	17/05/2007	शनि	29/01/2008	बुध	31/05/2008
मंगल	01/03/2005	राहु	11/12/2006	शनि	02/06/2007	बुध	10/03/2008	केतु	05/06/2008
राहु	22/05/2005	गुरु	09/03/2007	बुध	16/06/2007	केतु	26/03/2008	शुक्र	19/06/2008

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
19/06/2008		09/11/2008		16/02/2009		30/10/2009		14/06/2010	
09/11/2008		16/02/2009		30/10/2009		14/06/2010		11/03/2011	
चंद्र	01/07/2008	मंगल	14/11/2008	राहु	26/03/2009	गुरु	29/11/2009	शनि	27/07/2010
मंगल	10/07/2008	राहु	29/11/2008	गुरु	29/04/2009	शनि	04/01/2010	बुध	03/09/2010
राहु	31/07/2008	गुरु	12/12/2008	शनि	09/06/2009	बुध	05/02/2010	केतु	19/09/2010
गुरु	19/08/2008	शनि	28/12/2008	बुध	15/07/2009	केतु	18/02/2010	शुक्र	03/11/2010
शनि	10/09/2008	बुध	11/01/2009	केतु	30/07/2009	शुक्र	28/03/2010	सूर्य	16/11/2010
बुध	30/09/2008	केतु	17/01/2009	शुक्र	11/09/2009	सूर्य	09/04/2010	चंद्र	09/12/2010
केतु	09/10/2008	शुक्र	03/02/2009	सूर्य	23/09/2009	चंद्र	28/04/2010	मंगल	24/12/2010
शुक्र	01/11/2008	सूर्य	08/02/2009	चंद्र	15/10/2009	मंगल	11/05/2010	राहु	03/02/2011
सूर्य	09/11/2008	चंद्र	16/02/2009	मंगल	30/10/2009	राहु	14/06/2010	गुरु	11/03/2011

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
11/03/2011		07/11/2011		27/01/2014		27/09/2014		07/11/2015	
07/11/2011		27/01/2014		27/09/2014		07/11/2015		17/08/2016	
बुध	14/04/2011	शुक्र	22/03/2012	सूर्य	08/02/2014	चंद्र	31/10/2014	मंगल	24/11/2015
केतु	28/04/2011	सूर्य	01/05/2012	चंद्र	28/02/2014	मंगल	24/11/2014	राहु	05/01/2016
शुक्र	07/06/2011	चंद्र	08/07/2012	मंगल	15/03/2014	राहु	24/01/2015	गुरु	12/02/2016
सूर्य	19/06/2011	मंगल	24/08/2012	राहु	20/04/2014	गुरु	19/03/2015	शनि	28/03/2016
चंद्र	10/07/2011	राहु	24/12/2012	गुरु	23/05/2014	शनि	22/05/2015	बुध	08/05/2016
मंगल	24/07/2011	गुरु	11/04/2013	शनि	30/06/2014	बुध	19/07/2015	केतु	24/05/2016
राहु	29/08/2011	शनि	18/08/2013	बुध	04/08/2014	केतु	11/08/2015	शुक्र	10/07/2016
गुरु	30/09/2011	बुध	11/12/2013	केतु	18/08/2014	शुक्र	18/10/2015	सूर्य	25/07/2016
शनि	07/11/2011	केतु	27/01/2014	शुक्र	27/09/2014	सूर्य	07/11/2015	चंद्र	17/08/2016

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
17/08/2016		18/08/2018		28/05/2020		08/07/2022		28/05/2024	
18/08/2018		28/05/2020		08/07/2022		28/05/2024		08/03/2025	
राहु	05/12/2016	गुरु	12/11/2018	शनि	27/09/2020	बुध	14/10/2022	केतु	14/06/2024
गुरु	12/03/2017	शनि	23/02/2019	बुध	14/01/2021	केतु	23/11/2022	शुक्र	31/07/2024
शनि	06/07/2017	बुध	26/05/2019	केतु	28/02/2021	शुक्र	18/03/2023	सूर्य	14/08/2024
बुध	17/10/2017	केतु	03/07/2019	शुक्र	07/07/2021	सूर्य	22/04/2023	चंद्र	07/09/2024
केतु	29/11/2017	शुक्र	19/10/2019	सूर्य	15/08/2021	चंद्र	18/06/2023	मंगल	24/09/2024
शुक्र	31/03/2018	सूर्य	21/11/2019	चंद्र	18/10/2021	मंगल	28/07/2023	राहु	05/11/2024
सूर्य	06/05/2018	चंद्र	14/01/2020	मंगल	02/12/2021	राहु	09/11/2023	गुरु	13/12/2024
चंद्र	06/07/2018	मंगल	21/02/2020	राहु	27/03/2022	गुरु	09/02/2024	शनि	27/01/2025
मंगल	18/08/2018	राहु	28/05/2020	गुरु	08/07/2022	शनि	28/05/2024	बुध	08/03/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
08/03/2025		20/05/2025		19/09/2025		13/12/2025		20/07/2026	
20/05/2025		19/09/2025		13/12/2025		20/07/2026		31/01/2027	
सूर्य	12/03/2025	चंद्र	30/05/2025	मंगल	24/09/2025	राहु	15/01/2026	गुरु	15/08/2026
चंद्र	18/03/2025	मंगल	07/06/2025	राहु	07/10/2025	गुरु	13/02/2026	शनि	15/09/2026
मंगल	22/03/2025	राहु	25/06/2025	गुरु	18/10/2025	शनि	20/03/2026	बुध	13/10/2026
राहु	02/04/2025	गुरु	11/07/2025	शनि	01/11/2025	बुध	20/04/2026	केतु	24/10/2026
गुरु	12/04/2025	शनि	30/07/2025	बुध	13/11/2025	केतु	03/05/2026	शुक्र	26/11/2026
शनि	24/04/2025	बुध	17/08/2025	केतु	18/11/2025	शुक्र	08/06/2026	सूर्य	05/12/2026
बुध	04/05/2025	केतु	24/08/2025	शुक्र	02/12/2025	सूर्य	19/06/2026	चंद्र	22/12/2026
केतु	08/05/2025	शुक्र	13/09/2025	सूर्य	06/12/2025	चंद्र	08/07/2026	मंगल	02/01/2027
शुक्र	20/05/2025	सूर्य	19/09/2025	चंद्र	13/12/2025	मंगल	20/07/2026	राहु	31/01/2027

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
31/01/2027		20/09/2027		14/04/2028		08/07/2028		08/03/2029	
20/09/2027		14/04/2028		08/07/2028		08/03/2029		27/09/2029	
शनि	09/03/2027	बुध	19/10/2027	केतु	18/04/2028	शुक्र	17/08/2028	चंद्र	25/03/2029
बुध	11/04/2027	केतु	31/10/2027	शुक्र	03/05/2028	सूर्य	29/08/2028	मंगल	06/04/2029
केतु	24/04/2027	शुक्र	04/12/2027	सूर्य	07/05/2028	चंद्र	19/09/2028	राहु	06/05/2029
शुक्र	02/06/2027	सूर्य	15/12/2027	चंद्र	14/05/2028	मंगल	03/10/2028	गुरु	02/06/2029
सूर्य	13/06/2027	चंद्र	01/01/2028	मंगल	19/05/2028	राहु	09/11/2028	शनि	05/07/2029
चंद्र	03/07/2027	मंगल	13/01/2028	राहु	01/06/2028	गुरु	11/12/2028	बुध	02/08/2029
मंगल	16/07/2027	राहु	13/02/2028	गुरु	12/06/2028	शनि	19/01/2029	केतु	14/08/2029
राहु	20/08/2027	गुरु	12/03/2028	शनि	26/06/2028	बुध	22/02/2029	शुक्र	17/09/2029
गुरु	20/09/2027	शनि	14/04/2028	बुध	08/07/2028	केतु	08/03/2029	सूर्य	27/09/2029

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
27/09/2029		16/02/2030		16/02/2031		07/01/2032		27/01/2033	
16/02/2030		16/02/2031		07/01/2032		27/01/2033		07/01/2034	
मंगल	05/10/2029	राहु	12/04/2030	गुरु	01/04/2031	शनि	08/03/2032	बुध	17/03/2033
राहु	27/10/2029	गुरु	31/05/2030	शनि	22/05/2031	बुध	02/05/2032	केतु	06/04/2033
गुरु	15/11/2029	शनि	28/07/2030	बुध	07/07/2031	केतु	24/05/2032	शुक्र	02/06/2033
शनि	07/12/2029	बुध	17/09/2030	केतु	26/07/2031	शुक्र	28/07/2032	सूर्य	19/06/2033
बुध	27/12/2029	केतु	09/10/2030	शुक्र	18/09/2031	सूर्य	16/08/2032	चंद्र	18/07/2033
केतु	05/01/2030	शुक्र	08/12/2030	सूर्य	04/10/2031	चंद्र	17/09/2032	मंगल	07/08/2033
शुक्र	28/01/2030	सूर्य	27/12/2030	चंद्र	31/10/2031	मंगल	09/10/2032	राहु	28/09/2033
सूर्य	04/02/2030	चंद्र	26/01/2031	मंगल	19/11/2031	राहु	06/12/2032	गुरु	13/11/2033
चंद्र	16/02/2030	मंगल	16/02/2031	राहु	07/01/2032	गुरु	27/01/2033	शनि	07/01/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
07/01/2034		29/05/2034		08/07/2035		07/11/2035		15/02/2036	
29/05/2034		08/07/2035		07/11/2035		15/02/2036		27/10/2036	
केतु	15/01/2034	शुक्र	04/08/2034	सूर्य	15/07/2035	मंगल	13/11/2035	राहु	24/03/2036
शुक्र	08/02/2034	सूर्य	25/08/2034	चंद्र	25/07/2035	राहु	28/11/2035	गुरु	27/04/2036
सूर्य	15/02/2034	चंद्र	27/09/2034	मंगल	01/08/2035	गुरु	11/12/2035	शनि	07/06/2036
चंद्र	27/02/2034	मंगल	21/10/2034	राहु	19/08/2035	शनि	27/12/2035	बुध	13/07/2036
मंगल	07/03/2034	राहु	21/12/2034	गुरु	04/09/2035	बुध	10/01/2036	केतु	28/07/2036
राहु	28/03/2034	गुरु	13/02/2035	शनि	24/09/2035	केतु	16/01/2036	शुक्र	08/09/2036
गुरु	16/04/2034	शनि	18/04/2035	बुध	11/10/2035	शुक्र	01/02/2036	सूर्य	21/09/2036
शनि	09/05/2034	बुध	15/06/2035	केतु	18/10/2035	सूर्य	06/02/2036	चंद्र	12/10/2036
बुध	29/05/2034	केतु	08/07/2035	शुक्र	07/11/2035	चंद्र	15/02/2036	मंगल	27/10/2036

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
27/10/2036		12/06/2037		08/03/2038		05/11/2038		12/02/2039	
12/06/2037		08/03/2038		05/11/2038		12/02/2039		23/11/2039	
गुरु	27/11/2036	शनि	24/07/2037	बुध	12/04/2038	केतु	11/11/2038	शुक्र	01/04/2039
शनि	02/01/2037	बुध	01/09/2037	केतु	26/04/2038	शुक्र	27/11/2038	सूर्य	15/04/2039
बुध	03/02/2037	केतु	16/09/2037	शुक्र	05/06/2038	सूर्य	02/12/2038	चंद्र	09/05/2039
केतु	16/02/2037	शुक्र	31/10/2037	सूर्य	17/06/2038	चंद्र	11/12/2038	मंगल	25/05/2039
शुक्र	26/03/2037	सूर्य	14/11/2037	चंद्र	07/07/2038	मंगल	16/12/2038	राहु	07/07/2039
सूर्य	06/04/2037	चंद्र	06/12/2037	मंगल	21/07/2038	राहु	31/12/2038	गुरु	14/08/2039
चंद्र	25/04/2037	मंगल	22/12/2037	राहु	27/08/2038	गुरु	14/01/2039	शनि	28/09/2039
मंगल	09/05/2037	राहु	01/02/2038	गुरु	28/09/2038	शनि	29/01/2039	बुध	07/11/2039
राहु	12/06/2037	गुरु	08/03/2038	शनि	05/11/2038	बुध	12/02/2039	केतु	23/11/2039

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
23/11/2039		17/02/2040		08/07/2040		26/04/2042		02/12/2043	
17/02/2040		08/07/2040		26/04/2042		02/12/2043		26/10/2045	
सूर्य	28/11/2039	चंद्र	29/02/2040	राहु	14/10/2040	गुरु	13/07/2042	शनि	20/03/2044
चंद्र	05/12/2039	मंगल	08/03/2040	गुरु	10/01/2041	शनि	14/10/2042	बुध	27/06/2044
मंगल	10/12/2039	राहु	29/03/2040	शनि	24/04/2041	बुध	04/01/2043	केतु	06/08/2044
राहु	23/12/2039	गुरु	17/04/2040	बुध	26/07/2041	केतु	08/02/2043	शुक्र	30/11/2044
गुरु	03/01/2040	शनि	10/05/2040	केतु	03/09/2041	शुक्र	16/05/2043	सूर्य	04/01/2045
शनि	16/01/2040	बुध	30/05/2040	शुक्र	21/12/2041	सूर्य	14/06/2043	चंद्र	02/03/2045
बुध	29/01/2040	केतु	07/06/2040	सूर्य	23/01/2042	चंद्र	02/08/2043	मंगल	12/04/2045
केतु	02/02/2040	शुक्र	01/07/2040	चंद्र	19/03/2042	मंगल	05/09/2043	राहु	25/07/2045
शुक्र	17/02/2040	सूर्य	08/07/2040	मंगल	26/04/2042	राहु	02/12/2043	गुरु	26/10/2045

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
26/10/2045		08/07/2047		20/03/2048		21/03/2050		26/10/2050	
08/07/2047		20/03/2048		21/03/2050		26/10/2050		26/10/2051	
बुध	22/01/2046	केतु	23/07/2047	शुक्र	20/07/2048	सूर्य	01/04/2050	चंद्र	25/11/2050
केतु	27/02/2046	शुक्र	04/09/2047	सूर्य	25/08/2048	चंद्र	19/04/2050	मंगल	17/12/2050
शुक्र	10/06/2046	सूर्य	17/09/2047	चंद्र	25/10/2048	मंगल	02/05/2050	राहु	09/02/2051
सूर्य	11/07/2046	चंद्र	08/10/2047	मंगल	07/12/2048	राहु	04/06/2050	गुरु	30/03/2051
चंद्र	01/09/2046	मंगल	23/10/2047	राहु	27/03/2049	गुरु	03/07/2050	शनि	27/05/2051
मंगल	07/10/2046	राहु	30/11/2047	गुरु	02/07/2049	शनि	06/08/2050	बुध	18/07/2051
राहु	08/01/2047	गुरु	03/01/2048	शनि	26/10/2049	बुध	07/09/2050	केतु	08/08/2051
गुरु	01/04/2047	शनि	13/02/2048	बुध	06/02/2050	केतु	19/09/2050	शुक्र	08/10/2051
शनि	08/07/2047	बुध	20/03/2048	केतु	21/03/2050	शुक्र	26/10/2050	सूर्य	26/10/2051

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
26/10/2051		08/07/2052		09/12/2053		18/08/2055		20/02/2057	
08/07/2052		09/12/2053		18/08/2055		20/02/2057		05/10/2057	
मंगल	10/11/2051	गुरु	15/09/2052	शनि	17/03/2054	बुध	04/11/2055	केतु	05/03/2057
राहु	18/12/2051	शनि	06/12/2052	बुध	12/06/2054	केतु	06/12/2055	शुक्र	12/04/2057
गुरु	21/01/2052	बुध	18/02/2053	केतु	18/07/2054	शुक्र	07/03/2056	सूर्य	24/04/2057
शनि	02/03/2052	केतु	20/03/2053	शुक्र	29/10/2054	सूर्य	04/04/2056	चंद्र	12/05/2057
बुध	07/04/2052	शुक्र	15/06/2053	सूर्य	29/11/2054	चंद्र	20/05/2056	मंगल	26/05/2057
केतु	22/04/2052	सूर्य	11/07/2053	चंद्र	19/01/2055	मंगल	21/06/2056	राहु	29/06/2057
शुक्र	04/06/2052	चंद्र	23/08/2053	मंगल	24/02/2055	राहु	12/09/2056	गुरु	29/07/2057
सूर्य	16/06/2052	मंगल	22/09/2053	राहु	28/05/2055	गुरु	25/11/2056	शनि	03/09/2057
चंद्र	08/07/2052	राहु	09/12/2053	गुरु	18/08/2055	शनि	20/02/2057	बुध	05/10/2057

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
05/10/2057		17/07/2059		27/01/2060		17/12/2060		01/08/2061	
17/07/2059		27/01/2060		17/12/2060		01/08/2061		09/03/2063	
शुक्र	21/01/2058	सूर्य	26/07/2059	चंद्र	23/02/2060	मंगल	30/12/2060	राहु	28/10/2061
सूर्य	23/02/2058	चंद्र	12/08/2059	मंगल	13/03/2060	राहु	02/02/2061	गुरु	14/01/2062
चंद्र	18/04/2058	मंगल	23/08/2059	राहु	01/05/2060	गुरु	05/03/2061	शनि	16/04/2062
मंगल	26/05/2058	राहु	21/09/2059	गुरु	13/06/2060	शनि	10/04/2061	बुध	08/07/2062
राहु	31/08/2058	गुरु	17/10/2059	शनि	04/08/2060	बुध	12/05/2061	केतु	11/08/2062
गुरु	26/11/2058	शनि	17/11/2059	बुध	19/09/2060	केतु	25/05/2061	शुक्र	17/11/2062
शनि	09/03/2059	बुध	15/12/2059	केतु	08/10/2060	शुक्र	02/07/2061	सूर्य	16/12/2062
बुध	09/06/2059	केतु	26/12/2059	शुक्र	01/12/2060	सूर्य	13/07/2061	चंद्र	03/02/2063
केतु	17/07/2059	शुक्र	27/01/2060	सूर्य	17/12/2060	चंद्र	01/08/2061	मंगल	09/03/2063

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 2 मास 27 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
02/04/1992		30/06/2009		30/06/2015		30/06/2030		30/06/2038	
30/06/2009		30/06/2015		30/06/2030		30/06/2038		30/06/2055	
शुक्र	30/07/1992	सूर्य	29/10/2009	चंद्र	30/07/2017	मंगल	01/02/2031	बुध	03/03/2041
सूर्य	29/09/1993	चंद्र	30/08/2010	मंगल	09/09/2018	बुध	06/05/2032	शनि	29/09/2042
चंद्र	29/08/1996	मंगल	08/02/2011	बुध	18/01/2021	शनि	01/02/2033	गुरु	26/09/2045
मंगल	20/03/1998	बुध	19/01/2012	शनि	10/06/2022	गुरु	30/06/2034	राहु	16/08/2047
बुध	10/07/2001	शनि	09/08/2012	गुरु	28/01/2025	राहु	21/05/2035	शुक्र	06/12/2050
शनि	20/06/2003	गुरु	30/08/2013	राहु	29/09/2026	शुक्र	09/12/2036	सूर्य	16/11/2051
गुरु	28/02/2007	राहु	30/04/2014	शुक्र	30/08/2029	सूर्य	20/05/2037	चंद्र	27/03/2054
राहु	30/06/2009	शुक्र	30/06/2015	सूर्य	30/06/2030	चंद्र	30/06/2038	मंगल	30/06/2055

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
30/06/2055		30/06/2065		29/06/2084		29/06/2096	
30/06/2065		29/06/2084		29/06/2096		00/00/0000	
शनि	02/06/2056	गुरु	02/11/2068	राहु	29/10/2085	शुक्र	03/04/2100
गुरु	07/03/2058	राहु	13/12/2070	शुक्र	29/02/2088		00/00/0000
राहु	17/04/2059	शुक्र	23/08/2074	सूर्य	29/10/2088		00/00/0000
शुक्र	27/03/2061	सूर्य	13/09/2075	चंद्र	30/06/2090		00/00/0000
सूर्य	16/10/2061	चंद्र	03/05/2078	मंगल	21/05/2091		00/00/0000
चंद्र	07/03/2063	मंगल	29/09/2079	बुध	09/04/2093		00/00/0000
मंगल	03/12/2063	बुध	26/09/2082	शनि	20/05/2094		00/00/0000
बुध	30/06/2065	शनि	29/06/2084	गुरु	29/06/2096		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
02/04/1992		30/07/1992		29/09/1993		29/08/1996		20/03/1998	
30/07/1992		29/09/1993		29/08/1996		20/03/1998		10/07/2001	
	00/00/0000	सूर्य	22/08/1992	चंद्र	24/02/1994	मंगल	10/10/1996	बुध	26/09/1998
	00/00/0000	चंद्र	21/10/1992	मंगल	14/05/1994	बुध	08/01/1997	शनि	16/01/1999
	00/00/0000	मंगल	21/11/1992	बुध	29/10/1994	शनि	01/03/1997	गुरु	17/08/1999
	00/00/0000	बुध	27/01/1993	शनि	04/02/1995	गुरु	09/06/1997	राहु	29/12/1999
	00/00/0000	शनि	08/03/1993	गुरु	11/08/1995	राहु	11/08/1997	शुक्र	20/08/2000
	00/00/0000	गुरु	22/05/1993	राहु	07/12/1995	शुक्र	30/11/1997	सूर्य	26/10/2000
	02/04/1992	राहु	08/07/1993	शुक्र	01/07/1996	सूर्य	01/01/1998	चंद्र	11/04/2001
राहु	30/07/1992	शुक्र	29/09/1993	सूर्य	29/08/1996	चंद्र	20/03/1998	मंगल	10/07/2001

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
10/07/2001		20/06/2003		28/02/2007		30/06/2009		29/10/2009	
20/06/2003		28/02/2007		30/06/2009		29/10/2009		30/08/2010	
शनि	14/09/2001	गुरु	12/02/2004	राहु	03/06/2007	सूर्य	06/07/2009	चंद्र	11/12/2009
गुरु	16/01/2002	राहु	11/07/2004	शुक्र	16/11/2007	चंद्र	23/07/2009	मंगल	02/01/2010
राहु	05/04/2002	शुक्र	31/03/2005	सूर्य	02/01/2008	मंगल	01/08/2009	बुध	19/02/2010
शुक्र	21/08/2002	सूर्य	14/06/2005	चंद्र	30/04/2008	बुध	20/08/2009	शनि	19/03/2010
सूर्य	30/09/2002	चंद्र	18/12/2005	मंगल	02/07/2008	शनि	01/09/2009	गुरु	12/05/2010
चंद्र	07/01/2003	मंगल	28/03/2006	बुध	13/11/2008	गुरु	22/09/2009	राहु	15/06/2010
मंगल	28/02/2003	बुध	26/10/2006	शनि	31/01/2009	राहु	06/10/2009	शुक्र	13/08/2010
बुध	20/06/2003	शनि	28/02/2007	गुरु	30/06/2009	शुक्र	29/10/2009	सूर्य	30/08/2010

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
30/08/2010		08/02/2011		19/01/2012		09/08/2012		30/08/2013	
08/02/2011		19/01/2012		09/08/2012		30/08/2013		30/04/2014	
मंगल	11/09/2010	बुध	03/04/2011	शनि	07/02/2012	गुरु	16/10/2012	राहु	26/09/2013
बुध	06/10/2010	शनि	05/05/2011	गुरु	14/03/2012	राहु	28/11/2012	शुक्र	12/11/2013
शनि	21/10/2010	गुरु	05/07/2011	राहु	05/04/2012	शुक्र	11/02/2013	सूर्य	25/11/2013
गुरु	19/11/2010	राहु	12/08/2011	शुक्र	15/05/2012	सूर्य	04/03/2013	चंद्र	29/12/2013
राहु	07/12/2010	शुक्र	18/10/2011	सूर्य	26/05/2012	चंद्र	27/04/2013	मंगल	16/01/2014
शुक्र	08/01/2011	सूर्य	07/11/2011	चंद्र	23/06/2012	मंगल	25/05/2013	बुध	24/02/2014
सूर्य	17/01/2011	चंद्र	24/12/2011	मंगल	08/07/2012	बुध	25/07/2013	शनि	18/03/2014
चंद्र	08/02/2011	मंगल	19/01/2012	बुध	09/08/2012	शनि	30/08/2013	गुरु	30/04/2014

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
30/04/2014		30/06/2015		30/07/2017		09/09/2018		18/01/2021	
30/06/2015		30/07/2017		09/09/2018		18/01/2021		10/06/2022	
शुक्र	22/07/2014	चंद्र	14/10/2015	मंगल	29/08/2017	बुध	23/01/2019	शनि	06/03/2021
सूर्य	15/08/2014	मंगल	09/12/2015	बुध	01/11/2017	शनि	12/04/2019	गुरु	04/06/2021
चंद्र	13/10/2014	बुध	07/04/2016	शनि	09/12/2017	गुरु	11/09/2019	राहु	30/07/2021
मंगल	13/11/2014	शनि	16/06/2016	गुरु	18/02/2018	राहु	16/12/2019	शुक्र	06/11/2021
बुध	19/01/2015	गुरु	28/10/2016	राहु	04/04/2018	शुक्र	01/06/2020	सूर्य	04/12/2021
शनि	28/02/2015	राहु	21/01/2017	शुक्र	22/06/2018	सूर्य	19/07/2020	चंद्र	12/02/2022
गुरु	14/05/2015	शुक्र	18/06/2017	सूर्य	15/07/2018	चंद्र	15/11/2020	मंगल	22/03/2022
राहु	30/06/2015	सूर्य	30/07/2017	चंद्र	09/09/2018	मंगल	18/01/2021	बुध	10/06/2022

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
10/06/2022		28/01/2025		29/09/2026		30/08/2029		30/06/2030	
28/01/2025		29/09/2026		30/08/2029		30/06/2030		01/02/2031	
गुरु	26/11/2022	राहु	06/04/2025	शुक्र	24/04/2027	सूर्य	15/09/2029	मंगल	16/07/2030
राहु	13/03/2023	शुक्र	02/08/2025	सूर्य	23/06/2027	चंद्र	28/10/2029	बुध	19/08/2030
शुक्र	17/09/2023	सूर्य	05/09/2025	चंद्र	17/11/2027	मंगल	19/11/2029	शनि	08/09/2030
सूर्य	09/11/2023	चंद्र	29/11/2025	मंगल	04/02/2028	बुध	06/01/2030	गुरु	16/10/2030
चंद्र	22/03/2024	मंगल	13/01/2026	बुध	21/07/2028	शनि	03/02/2030	राहु	09/11/2030
मंगल	01/06/2024	बुध	19/04/2026	शनि	28/10/2028	गुरु	29/03/2030	शुक्र	21/12/2030
बुध	31/10/2024	शनि	14/06/2026	गुरु	03/05/2029	राहु	02/05/2030	सूर्य	02/01/2031
शनि	28/01/2025	गुरु	29/09/2026	राहु	30/08/2029	शुक्र	30/06/2030	चंद्र	01/02/2031

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
01/02/2031		06/05/2032		01/02/2033		30/06/2034		21/05/2035	
06/05/2032		01/02/2033		30/06/2034		21/05/2035		09/12/2036	
बुध	15/04/2031	शनि	31/05/2032	गुरु	02/05/2033	राहु	05/08/2034	शुक्र	08/09/2035
शनि	27/05/2031	गुरु	18/07/2032	राहु	28/06/2033	शुक्र	07/10/2034	सूर्य	10/10/2035
गुरु	16/08/2031	राहु	17/08/2032	शुक्र	06/10/2033	सूर्य	25/10/2034	चंद्र	27/12/2035
राहु	06/10/2031	शुक्र	09/10/2032	सूर्य	04/11/2033	चंद्र	09/12/2034	मंगल	08/02/2036
शुक्र	04/01/2032	सूर्य	24/10/2032	चंद्र	14/01/2034	मंगल	02/01/2035	बुध	07/05/2036
सूर्य	29/01/2032	चंद्र	30/11/2032	मंगल	21/02/2034	बुध	22/02/2035	शनि	29/06/2036
चंद्र	02/04/2032	मंगल	20/12/2032	बुध	13/05/2034	शनि	24/03/2035	गुरु	07/10/2036
मंगल	06/05/2032	बुध	01/02/2033	शनि	30/06/2034	गुरु	21/05/2035	राहु	09/12/2036

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु	
09/12/2036		20/05/2037		30/06/2038		03/03/2041		29/09/2042	
20/05/2037		30/06/2038		03/03/2041		29/09/2042		26/09/2045	
सूर्य	18/12/2036	चंद्र	15/07/2037	बुध	01/12/2038	शनि	25/04/2041	गुरु	09/04/2043
चंद्र	09/01/2037	मंगल	14/08/2037	शनि	01/03/2039	गुरु	05/08/2041	राहु	09/08/2043
मंगल	21/01/2037	बुध	17/10/2037	गुरु	20/08/2039	राहु	08/10/2041	शुक्र	08/03/2044
बुध	16/02/2037	शनि	24/11/2037	राहु	07/12/2039	शुक्र	27/01/2042	सूर्य	08/05/2044
शनि	03/03/2037	गुरु	03/02/2038	शुक्र	14/06/2040	सूर्य	28/02/2042	चंद्र	07/10/2044
गुरु	31/03/2037	राहु	20/03/2038	सूर्य	07/08/2040	चंद्र	19/05/2042	मंगल	26/12/2044
राहु	18/04/2037	शुक्र	07/06/2038	चंद्र	21/12/2040	मंगल	01/07/2042	बुध	16/06/2045
शुक्र	20/05/2037	सूर्य	30/06/2038	मंगल	03/03/2041	बुध	29/09/2042	शनि	26/09/2045

बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
26/09/2045		16/08/2047		06/12/2050		16/11/2051		27/03/2054	
16/08/2047		06/12/2050		16/11/2051		27/03/2054		30/06/2055	
राहु	11/12/2045	शुक्र	07/04/2048	सूर्य	25/12/2050	चंद्र	15/03/2052	मंगल	30/04/2054
शुक्र	24/04/2046	सूर्य	13/06/2048	चंद्र	11/02/2051	मंगल	17/05/2052	बुध	12/07/2054
सूर्य	02/06/2046	चंद्र	28/11/2048	मंगल	08/03/2051	बुध	30/09/2052	शनि	23/08/2054
चंद्र	06/09/2046	मंगल	25/02/2049	बुध	02/05/2051	शनि	19/12/2052	गुरु	12/11/2054
मंगल	27/10/2046	बुध	03/09/2049	शनि	03/06/2051	गुरु	20/05/2053	राहु	02/01/2055
बुध	12/02/2047	शनि	24/12/2049	गुरु	02/08/2051	राहु	24/08/2053	शुक्र	02/04/2055
शनि	17/04/2047	गुरु	25/07/2050	राहु	10/09/2051	शुक्र	07/02/2054	सूर्य	27/04/2055
गुरु	16/08/2047	राहु	06/12/2050	शुक्र	16/11/2051	सूर्य	27/03/2054	चंद्र	30/06/2055

शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
30/06/2055		02/06/2056		07/03/2058		17/04/2059		27/03/2061	
02/06/2056		07/03/2058		17/04/2059		27/03/2061		16/10/2061	
शनि	31/07/2055	गुरु	23/09/2056	राहु	21/04/2058	शुक्र	02/09/2059	सूर्य	07/04/2061
गुरु	29/09/2055	राहु	04/12/2056	शुक्र	09/07/2058	सूर्य	11/10/2059	चंद्र	05/05/2061
राहु	06/11/2055	शुक्र	08/04/2057	सूर्य	31/07/2058	चंद्र	18/01/2060	मंगल	20/05/2061
शुक्र	10/01/2056	सूर्य	13/05/2057	चंद्र	26/09/2058	मंगल	11/03/2060	बुध	21/06/2061
सूर्य	29/01/2056	चंद्र	11/08/2057	मंगल	26/10/2058	बुध	30/06/2060	शनि	10/07/2061
चंद्र	16/03/2056	मंगल	27/09/2057	बुध	29/12/2058	शनि	04/09/2060	गुरु	15/08/2061
मंगल	10/04/2056	बुध	06/01/2058	शनि	04/02/2059	गुरु	07/01/2061	राहु	06/09/2061
बुध	02/06/2056	शनि	07/03/2058	गुरु	17/04/2059	राहु	27/03/2061	शुक्र	16/10/2061

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
16/10/2061		07/03/2063		03/12/2063		30/06/2065		02/11/2068	
07/03/2063		03/12/2063		30/06/2065		02/11/2068		13/12/2070	
चंद्र	25/12/2061	मंगल	27/03/2063	बुध	02/03/2064	गुरु	30/01/2066	राहु	26/01/2069
मंगल	01/02/2062	बुध	09/05/2063	शनि	24/04/2064	राहु	15/06/2066	शुक्र	25/06/2069
बुध	22/04/2062	शनि	03/06/2063	गुरु	04/08/2064	शुक्र	07/02/2067	सूर्य	07/08/2069
शनि	08/06/2062	गुरु	20/07/2063	राहु	06/10/2064	सूर्य	16/04/2067	चंद्र	22/11/2069
गुरु	05/09/2062	राहु	19/08/2063	शुक्र	26/01/2065	चंद्र	03/10/2067	मंगल	18/01/2070
राहु	31/10/2062	शुक्र	11/10/2063	सूर्य	27/02/2065	मंगल	01/01/2068	बुध	20/05/2070
शुक्र	07/02/2063	सूर्य	26/10/2063	चंद्र	18/05/2065	बुध	11/07/2068	शनि	30/07/2070
सूर्य	07/03/2063	चंद्र	03/12/2063	मंगल	30/06/2065	शनि	02/11/2068	गुरु	13/12/2070

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
13/12/2070		23/08/2074		13/09/2075		03/05/2078		29/09/2079	
23/08/2074		13/09/2075		03/05/2078		29/09/2079		26/09/2082	
शुक्र	01/09/2071	सूर्य	13/09/2074	चंद्र	24/01/2076	मंगल	10/06/2078	बुध	19/03/2080
सूर्य	15/11/2071	चंद्र	06/11/2074	मंगल	05/04/2076	बुध	30/08/2078	शनि	29/06/2080
चंद्र	20/05/2072	मंगल	05/12/2074	बुध	04/09/2076	शनि	17/10/2078	गुरु	07/01/2081
मंगल	28/08/2072	बुध	03/02/2075	शनि	02/12/2076	गुरु	15/01/2079	राहु	08/05/2081
बुध	29/03/2073	शनि	11/03/2075	गुरु	20/05/2077	राहु	14/03/2079	शुक्र	06/12/2081
शनि	01/08/2073	गुरु	18/05/2075	राहु	04/09/2077	शुक्र	21/06/2079	सूर्य	05/02/2082
गुरु	26/03/2074	राहु	30/06/2075	शुक्र	11/03/2078	सूर्य	20/07/2079	चंद्र	07/07/2082
राहु	23/08/2074	शुक्र	13/09/2075	सूर्य	03/05/2078	चंद्र	29/09/2079	मंगल	26/09/2082

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
26/09/2082		29/06/2084		29/10/2085		29/02/2088		29/10/2088	
29/06/2084		29/10/2085		29/02/2088		29/10/2088		30/06/2090	
शनि	24/11/2082	राहु	22/08/2084	शुक्र	13/04/2086	सूर्य	13/03/2088	चंद्र	22/01/2089
गुरु	17/03/2083	शुक्र	25/11/2084	सूर्य	30/05/2086	चंद्र	16/04/2088	मंगल	08/03/2089
राहु	28/05/2083	सूर्य	22/12/2084	चंद्र	26/09/2086	मंगल	04/05/2088	बुध	12/06/2089
शुक्र	30/09/2083	चंद्र	28/02/2085	मंगल	28/11/2086	बुध	11/06/2088	शनि	07/08/2089
सूर्य	04/11/2083	मंगल	05/04/2085	बुध	11/04/2087	शनि	04/07/2088	गुरु	22/11/2089
चंद्र	02/02/2084	बुध	21/06/2085	शनि	29/06/2087	गुरु	16/08/2088	राहु	29/01/2090
मंगल	20/03/2084	शनि	05/08/2085	गुरु	26/11/2087	राहु	12/09/2088	शुक्र	27/05/2090
बुध	29/06/2084	गुरु	29/10/2085	राहु	29/02/2088	शुक्र	29/10/2088	सूर्य	30/06/2090

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 5 मास 1 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
02/04/1992		03/09/1993		04/09/1999		03/09/2006		03/09/2014	
03/09/1993		04/09/1999		03/09/2006		03/09/2014		04/09/2015	
	00/00/0000	उल्क	03/09/1994	सिद्ध	13/01/2001	संक	14/06/2008	मंग	13/09/2014
	00/00/0000	सिद्ध	03/11/1995	संक	04/08/2002	मंग	03/09/2008	पिंग	04/10/2014
	02/04/1992	संक	04/03/1997	मंग	14/10/2002	पिंग	12/02/2009	धांय	03/11/2014
संक	14/04/1992	मंग	04/05/1997	पिंग	05/03/2003	धांय	14/10/2009	भ्राम	14/12/2014
मंग	03/06/1992	पिंग	03/09/1997	धांय	04/10/2003	भ्राम	03/09/2010	भद्रि	02/02/2015
पिंग	13/09/1992	धांय	05/03/1998	भ्राम	14/07/2004	भद्रि	14/10/2011	उल्क	04/04/2015
धांय	12/02/1993	भ्राम	03/11/1998	भद्रि	04/07/2005	उल्क	12/02/2013	सिद्ध	14/06/2015
भ्राम	03/09/1993	भद्रि	04/09/1999	उल्क	03/09/2006	सिद्ध	03/09/2014	संक	04/09/2015

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
04/09/2015		03/09/2017		03/09/2020		03/09/2024		03/09/2029	
03/09/2017		03/09/2020		03/09/2024		03/09/2029		04/09/2035	
पिंग	14/10/2015	धांय	03/12/2017	भ्राम	12/02/2021	भद्रि	14/05/2025	उल्क	03/09/2030
धांय	14/12/2015	भ्राम	04/04/2018	भद्रि	03/09/2021	उल्क	15/03/2026	सिद्ध	03/11/2031
भ्राम	04/03/2016	भद्रि	03/09/2018	उल्क	05/05/2022	सिद्ध	05/03/2027	संक	04/03/2033
भद्रि	14/06/2016	उल्क	05/03/2019	सिद्ध	13/02/2023	संक	14/04/2028	मंग	04/05/2033
उल्क	13/10/2016	सिद्ध	04/10/2019	संक	03/01/2024	मंग	03/06/2028	पिंग	03/09/2033
सिद्ध	04/03/2017	संक	03/06/2020	मंग	13/02/2024	पिंग	13/09/2028	धांय	05/03/2034
संक	14/08/2017	मंग	04/07/2020	पिंग	04/05/2024	धांय	12/02/2029	भ्राम	03/11/2034
मंग	03/09/2017	पिंग	03/09/2020	धांय	03/09/2024	भ्राम	03/09/2029	भद्रि	04/09/2035

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
04/09/2035		03/09/2042		03/09/2050		04/09/2051		03/09/2053	
03/09/2042		03/09/2050		04/09/2051		03/09/2053		03/09/2056	
सिद्ध	13/01/2037	संक	14/06/2044	मंग	13/09/2050	पिंग	14/10/2051	धांय	03/12/2053
संक	04/08/2038	मंग	03/09/2044	पिंग	04/10/2050	धांय	14/12/2051	भ्राम	04/04/2054
मंग	14/10/2038	पिंग	12/02/2045	धांय	03/11/2050	भ्राम	04/03/2052	भद्रि	03/09/2054
पिंग	05/03/2039	धांय	14/10/2045	भ्राम	14/12/2050	भद्रि	14/06/2052	उल्क	05/03/2055
धांय	04/10/2039	भ्राम	03/09/2046	भद्रि	02/02/2051	उल्क	13/10/2052	सिद्ध	04/10/2055
भ्राम	14/07/2040	भद्रि	14/10/2047	उल्क	04/04/2051	सिद्ध	04/03/2053	संक	03/06/2056
भद्रि	04/07/2041	उल्क	12/02/2049	सिद्ध	14/06/2051	संक	14/08/2053	मंग	04/07/2056
उल्क	03/09/2042	सिद्ध	03/09/2050	संक	04/09/2051	मंग	03/09/2053	पिंग	03/09/2056

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
03/09/2056		03/09/2060		03/09/2065		04/09/2071		03/09/2078	
03/09/2060		03/09/2065		04/09/2071		03/09/2078		03/09/2086	
भ्राम	12/02/2057	भद्रि	14/05/2061	उल्क	03/09/2066	सिद्ध	13/01/2073	संक	14/06/2080
भद्रि	03/09/2057	उल्क	15/03/2062	सिद्ध	03/11/2067	संक	04/08/2074	मंग	03/09/2080
उल्क	05/05/2058	सिद्ध	05/03/2063	संक	04/03/2069	मंग	14/10/2074	पिंग	12/02/2081
सिद्ध	13/02/2059	संक	14/04/2064	मंग	04/05/2069	पिंग	05/03/2075	धांय	14/10/2081
संक	03/01/2060	मंग	03/06/2064	पिंग	03/09/2069	धांय	04/10/2075	भ्राम	03/09/2082
मंग	13/02/2060	पिंग	13/09/2064	धांय	05/03/2070	भ्राम	14/07/2076	भद्रि	14/10/2083
पिंग	04/05/2060	धांय	12/02/2065	भ्राम	03/11/2070	भद्रि	04/07/2077	उल्क	12/02/2085
धांय	03/09/2060	भ्राम	03/09/2065	भद्रि	04/09/2071	उल्क	03/09/2078	सिद्ध	03/09/2086

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
03/09/2086		04/09/2087		03/09/2089		03/09/2092		03/09/2096	
04/09/2087		03/09/2089		03/09/2092		03/09/2096		00/00/0000	
मंग	13/09/2086	पिंग	14/10/2087	धांय	03/12/2089	भ्राम	12/02/2093	भद्रि	14/05/2097
पिंग	04/10/2086	धांय	14/12/2087	भ्राम	04/04/2090	भद्रि	03/09/2093	उल्क	15/03/2098
धांय	03/11/2086	भ्राम	04/03/2088	भद्रि	03/09/2090	उल्क	05/05/2094	सिद्ध	05/03/2099
भ्राम	14/12/2086	भद्रि	14/06/2088	उल्क	05/03/2091	सिद्ध	13/02/2095	संक	03/04/2100
भद्रि	02/02/2087	उल्क	13/10/2088	सिद्ध	04/10/2091	संक	03/01/2096		00/00/0000
उल्क	04/04/2087	सिद्ध	04/03/2089	संक	03/06/2092	मंग	13/02/2096		00/00/0000
सिद्ध	14/06/2087	संक	14/08/2089	मंग	04/07/2092	पिंग	04/05/2096		00/00/0000
संक	04/09/2087	मंग	03/09/2089	पिंग	03/09/2092	धांय	03/09/2096		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग	
14/05/2025		15/03/2026		05/03/2027		14/04/2028		03/06/2028	
15/03/2026		05/03/2027		14/04/2028		03/06/2028		13/09/2028	
उल्क	04/07/2025	सिद्ध	23/05/2026	संक	03/06/2027	मंग	15/04/2028	पिंग	09/06/2028
सिद्ध	01/09/2025	संक	10/08/2026	मंग	14/06/2027	पिंग	18/04/2028	धांय	18/06/2028
संक	08/11/2025	मंग	20/08/2026	पिंग	07/07/2027	धांय	22/04/2028	भ्राम	29/06/2028
मंग	16/11/2025	पिंग	08/09/2026	धांय	10/08/2027	भ्राम	28/04/2028	भद्रि	13/07/2028
पिंग	03/12/2025	धांय	08/10/2026	भ्राम	24/09/2027	भद्रि	05/05/2028	उल्क	30/07/2028
धांय	29/12/2025	भ्राम	16/11/2026	भद्रि	19/11/2027	उल्क	13/05/2028	सिद्ध	19/08/2028
भ्राम	01/02/2026	भद्रि	05/01/2027	उल्क	26/01/2028	सिद्ध	23/05/2028	संक	10/09/2028
भद्रि	15/03/2026	उल्क	05/03/2027	सिद्ध	14/04/2028	संक	03/06/2028	मंग	13/09/2028

भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक	
13/09/2028		12/02/2029		03/09/2029		03/09/2030		03/11/2031	
12/02/2029		03/09/2029		03/09/2030		03/11/2031		04/03/2033	
धांय	26/09/2028	भ्राम	07/03/2029	उल्क	03/11/2029	सिद्ध	25/11/2030	संक	20/02/2032
भ्राम	12/10/2028	भद्रि	04/04/2029	सिद्ध	13/01/2030	संक	28/02/2031	मंग	04/03/2032
भद्रि	03/11/2028	उल्क	08/05/2029	संक	04/04/2030	मंग	12/03/2031	पिंग	31/03/2032
उल्क	28/11/2028	सिद्ध	16/06/2029	मंग	14/04/2030	पिंग	04/04/2031	धांय	11/05/2032
सिद्ध	28/12/2028	संक	31/07/2029	पिंग	05/05/2030	धांय	10/05/2031	भ्राम	04/07/2032
संक	30/01/2029	मंग	06/08/2029	धांय	04/06/2030	भ्राम	26/06/2031	भद्रि	10/09/2032
मंग	04/02/2029	पिंग	17/08/2029	भ्राम	15/07/2030	भद्रि	24/08/2031	उल्क	30/11/2032
पिंग	12/02/2029	धांय	03/09/2029	भद्रि	03/09/2030	उल्क	03/11/2031	सिद्ध	04/03/2033

उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि	
04/03/2033		04/05/2033		03/09/2033		05/03/2034		03/11/2034	
04/05/2033		03/09/2033		05/03/2034		03/11/2034		04/09/2035	
मंग	06/03/2033	पिंग	11/05/2033	धांय	18/09/2033	भ्राम	01/04/2034	भद्रि	15/12/2034
पिंग	09/03/2033	धांय	21/05/2033	भ्राम	09/10/2033	भद्रि	05/05/2034	उल्क	04/02/2035
धांय	15/03/2033	भ्राम	04/06/2033	भद्रि	03/11/2033	उल्क	14/06/2034	सिद्ध	04/04/2035
भ्राम	21/03/2033	भद्रि	21/06/2033	उल्क	03/12/2033	सिद्ध	31/07/2034	संक	11/06/2035
भद्रि	30/03/2033	उल्क	11/07/2033	सिद्ध	08/01/2034	संक	24/09/2034	मंग	19/06/2035
उल्क	09/04/2033	सिद्ध	04/08/2033	संक	17/02/2034	मंग	30/09/2034	पिंग	06/07/2035
सिद्ध	21/04/2033	संक	31/08/2033	मंग	22/02/2034	पिंग	14/10/2034	धांय	01/08/2035
संक	04/05/2033	मंग	03/09/2033	पिंग	05/03/2034	धांय	03/11/2034	भ्राम	04/09/2035

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
04/09/2035		13/01/2037		04/08/2038		14/10/2038		05/03/2039	
13/01/2037		04/08/2038		14/10/2038		05/03/2039		04/10/2039	
सिद्ध	09/12/2035	संक	19/05/2037	मंग	06/08/2038	पिंग	22/10/2038	धांय	23/03/2039
संक	29/03/2036	मंग	04/06/2037	पिंग	10/08/2038	धांय	03/11/2038	भ्राम	15/04/2039
मंग	11/04/2036	पिंग	05/07/2037	धांय	16/08/2038	भ्राम	18/11/2038	भद्रि	15/05/2039
पिंग	09/05/2036	धांय	22/08/2037	भ्राम	24/08/2038	भद्रि	08/12/2038	उल्क	19/06/2039
धांय	20/06/2036	भ्राम	24/10/2037	भद्रि	02/09/2038	उल्क	01/01/2039	सिद्ध	31/07/2039
भ्राम	14/08/2036	भद्रि	11/01/2038	उल्क	14/09/2038	सिद्ध	28/01/2039	संक	16/09/2039
भद्रि	22/10/2036	उल्क	15/04/2038	सिद्ध	28/09/2038	संक	01/03/2039	मंग	22/09/2039
उल्क	13/01/2037	सिद्ध	04/08/2038	संक	14/10/2038	मंग	05/03/2039	पिंग	04/10/2039

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
04/10/2039		14/07/2040		04/07/2041		03/09/2042		14/06/2044	
14/07/2040		04/07/2041		03/09/2042		14/06/2044		03/09/2044	
भ्राम	05/11/2039	भद्रि	01/09/2040	उल्क	13/09/2041	संक	26/01/2043	मंग	16/06/2044
भद्रि	14/12/2039	उल्क	31/10/2040	सिद्ध	05/12/2041	मंग	13/02/2043	पिंग	20/06/2044
उल्क	30/01/2040	सिद्ध	08/01/2041	संक	10/03/2042	पिंग	21/03/2043	धांय	27/06/2044
सिद्ध	26/03/2040	संक	27/03/2041	मंग	22/03/2042	धांय	14/05/2043	भ्राम	06/07/2044
संक	28/05/2040	मंग	06/04/2041	पिंग	14/04/2042	भ्राम	25/07/2043	भद्रि	17/07/2044
मंग	05/06/2040	पिंग	26/04/2041	धांय	20/05/2042	भद्रि	23/10/2043	उल्क	31/07/2044
पिंग	20/06/2040	धांय	26/05/2041	भ्राम	06/07/2042	उल्क	08/02/2044	सिद्ध	16/08/2044
धांय	14/07/2040	भ्राम	04/07/2041	भद्रि	03/09/2042	सिद्ध	14/06/2044	संक	03/09/2044

संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क	
03/09/2044		12/02/2045		14/10/2045		03/09/2046		14/10/2047	
12/02/2045		14/10/2045		03/09/2046		14/10/2047		12/02/2049	
पिंग	12/09/2044	धांय	04/03/2045	भ्राम	19/11/2045	भद्रि	30/10/2046	उल्क	03/01/2048
धांय	25/09/2044	भ्राम	31/03/2045	भद्रि	03/01/2046	उल्क	05/01/2047	सिद्ध	07/04/2048
भ्राम	13/10/2044	भद्रि	04/05/2045	उल्क	26/02/2046	सिद्ध	25/03/2047	संक	24/07/2048
भद्रि	05/11/2044	उल्क	14/06/2045	सिद्ध	30/04/2046	संक	23/06/2047	मंग	07/08/2048
उल्क	02/12/2044	सिद्ध	31/07/2045	संक	11/07/2046	मंग	05/07/2047	पिंग	03/09/2048
सिद्ध	03/01/2045	संक	23/09/2045	मंग	20/07/2046	पिंग	27/07/2047	धांय	13/10/2048
संक	08/02/2045	मंग	30/09/2045	पिंग	07/08/2046	धांय	30/08/2047	भ्राम	06/12/2048
मंग	12/02/2045	पिंग	14/10/2045	धांय	03/09/2046	भ्राम	14/10/2047	भद्रि	12/02/2049

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 2 वर्ष 3 मास 12 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : उ०भाद्रपद - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
02/04/1992		15/07/1994		15/07/2003		15/07/2019		15/07/2026	
15/07/1994		15/07/2003		15/07/2019		15/07/2026		15/07/2036	
	00/00/0000	कन्या	07/07/1995	तुला	15/08/2006	वृश्चि	16/02/2020	धनु	28/09/2027
	00/00/0000	तुला	31/03/1997	वृश्चि	21/12/2007	धनु	20/12/2020	मक	22/03/2028
	00/00/0000	वृश्चि	03/01/1998	धनु	24/11/2009	मक	22/04/2021	कुंभ	14/09/2028
	00/00/0000	धनु	03/02/1999	मक	02/09/2010	कुंभ	24/08/2021	मीन	28/11/2029
	00/00/0000	मक	11/07/1999	कुंभ	10/06/2011	मीन	28/06/2022	वृश्चि	02/10/2030
	00/00/0000	कुंभ	16/12/1999	मीन	14/05/2013	वृश्चि	29/01/2023	तुला	06/09/2032
	02/04/1992	मीन	16/01/2001	वृश्चि	19/09/2014	तुला	05/06/2024	कन्या	07/10/2033
मीन	09/03/1993	वृश्चि	20/10/2001	तुला	20/10/2017	कन्या	09/03/2025	तुला	11/09/2035
वृश्चि	15/07/1994	तुला	15/07/2003	कन्या	15/07/2019	तुला	15/07/2026	वृश्चि	15/07/2036

मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
15/07/2036		15/07/2040		15/07/2044		15/07/2054		15/07/2061	
15/07/2040		15/07/2044		15/07/2054		15/07/2061		00/00/0000	
मक	23/09/2036	कुंभ	23/09/2040	मीन	28/09/2045	वृश्चि	16/02/2055	तुला	15/08/2064
कुंभ	03/12/2036	मीन	18/03/2041	वृश्चि	02/08/2046	तुला	23/06/2056	कन्या	10/05/2066
मीन	28/05/2037	वृश्चि	19/07/2041	तुला	06/07/2048	कन्या	27/03/2057	तुला	10/06/2069
वृश्चि	28/09/2037	तुला	27/04/2042	कन्या	06/08/2049	तुला	02/08/2058	वृश्चि	16/10/2070
तुला	06/07/2038	कन्या	02/10/2042	तुला	11/07/2051	वृश्चि	05/03/2059	धनु	19/09/2072
कन्या	12/12/2038	तुला	11/07/2043	वृश्चि	14/05/2052	धनु	07/01/2060	मक	27/06/2073
तुला	19/09/2039	वृश्चि	11/11/2043	धनु	28/07/2053	मक	10/05/2060	कुंभ	05/04/2074
वृश्चि	21/01/2040	धनु	05/05/2044	मक	20/01/2054	कुंभ	10/09/2060	मीन	03/04/2075
धनु	15/07/2040	मक	15/07/2044	कुंभ	15/07/2054	मीन	15/07/2061		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - तुला		धनु - धनु		धनु - मक		धनु - कुंभ		धनु - मीन	
09/03/2025		15/07/2026		28/09/2027		22/03/2028		14/09/2028	
15/07/2026		28/09/2027		22/03/2028		14/09/2028		28/11/2029	
तुला	12/06/2025	धनु	06/09/2026	मक	07/10/2027	कुंभ	31/03/2028	मीन	06/11/2028
वृश्चि	24/07/2025	मक	27/09/2026	कुंभ	15/10/2027	मीन	21/04/2028	वृश्चि	13/12/2028
धनु	21/09/2025	कुंभ	19/10/2026	मीन	05/11/2027	वृश्चि	06/05/2028	तुला	08/03/2029
मक	15/10/2025	मीन	11/12/2026	वृश्चि	20/11/2027	तुला	09/06/2028	कन्या	25/04/2029
कुंभ	08/11/2025	वृश्चि	17/01/2027	तुला	24/12/2027	कन्या	28/06/2028	तुला	19/07/2029
मीन	06/01/2026	तुला	12/04/2027	कन्या	12/01/2028	तुला	01/08/2028	वृश्चि	25/08/2029
वृश्चि	17/02/2026	कन्या	29/05/2027	तुला	15/02/2028	वृश्चि	16/08/2028	धनु	17/10/2029
तुला	23/05/2026	तुला	22/08/2027	वृश्चि	01/03/2028	धनु	06/09/2028	मक	07/11/2029
कन्या	15/07/2026	वृश्चि	28/09/2027	धनु	22/03/2028	मक	14/09/2028	कुंभ	28/11/2029

धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - तुला		धनु - वृश्चि	
28/11/2029		02/10/2030		06/09/2032		07/10/2033		11/09/2035	
02/10/2030		06/09/2032		07/10/2033		11/09/2035		15/07/2036	
वृश्चि	24/12/2029	तुला	15/02/2031	कन्या	18/10/2032	तुला	19/02/2034	वृश्चि	07/10/2035
तुला	22/02/2030	कन्या	02/05/2031	तुला	03/01/2033	वृश्चि	20/04/2034	धनु	13/11/2035
कन्या	27/03/2030	तुला	15/09/2031	वृश्चि	05/02/2033	धनु	14/07/2034	मक	28/11/2035
तुला	26/05/2030	वृश्चि	14/11/2031	धनु	25/03/2033	मक	16/08/2034	कुंभ	12/12/2035
वृश्चि	21/06/2030	धनु	06/02/2032	मक	13/04/2033	कुंभ	19/09/2034	मीन	19/01/2036
धनु	28/07/2030	मक	11/03/2032	कुंभ	02/05/2033	मीन	13/12/2034	वृश्चि	14/02/2036
मक	11/08/2030	कुंभ	14/04/2032	मीन	19/06/2033	वृश्चि	11/02/2035	तुला	13/04/2036
कुंभ	26/08/2030	मीन	08/07/2032	वृश्चि	22/07/2033	तुला	26/06/2035	कन्या	16/05/2036
मीन	02/10/2030	वृश्चि	06/09/2032	तुला	07/10/2033	कन्या	11/09/2035	तुला	15/07/2036

मक - मक		मक - कुंभ		मक - मीन		मक - वृश्चि		मक - तुला	
15/07/2036		23/09/2036		03/12/2036		28/05/2037		28/09/2037	
23/09/2036		03/12/2036		28/05/2037		28/09/2037		06/07/2038	
मक	18/07/2036	कुंभ	27/09/2036	मीन	24/12/2036	वृश्चि	07/06/2037	तुला	21/11/2037
कुंभ	21/07/2036	मीन	05/10/2036	वृश्चि	08/01/2037	तुला	01/07/2037	कन्या	22/12/2037
मीन	30/07/2036	वृश्चि	11/10/2036	तुला	11/02/2037	कन्या	14/07/2037	तुला	14/02/2038
वृश्चि	05/08/2036	तुला	25/10/2036	कन्या	02/03/2037	तुला	07/08/2037	वृश्चि	10/03/2038
तुला	18/08/2036	कन्या	01/11/2036	तुला	05/04/2037	वृश्चि	17/08/2037	धनु	13/04/2038
कन्या	26/08/2036	तुला	15/11/2036	वृश्चि	19/04/2037	धनु	01/09/2037	मक	26/04/2038
तुला	09/09/2036	वृश्चि	21/11/2036	धनु	11/05/2037	मक	07/09/2037	कुंभ	10/05/2038
वृश्चि	15/09/2036	धनु	29/11/2036	मक	19/05/2037	कुंभ	13/09/2037	मीन	13/06/2038
धनु	23/09/2036	मक	03/12/2036	कुंभ	28/05/2037	मीन	28/09/2037	वृश्चि	06/07/2038

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मक - कन्या		मक - तुला		मक - वृश्चि		मक - धनु		कुंभ - कुंभ	
06/07/2038		12/12/2038		19/09/2039		21/01/2040		15/07/2040	
12/12/2038		19/09/2039		21/01/2040		15/07/2040		23/09/2040	
कन्या	24/07/2038	तुला	04/02/2039	वृश्चि	30/09/2039	धनु	11/02/2040	कुंभ	18/07/2040
तुला	23/08/2038	वृश्चि	28/02/2039	धनु	15/10/2039	मक	19/02/2040	मीन	27/07/2040
वृश्चि	05/09/2038	धनु	03/04/2039	मक	21/10/2039	कुंभ	28/02/2040	वृश्चि	02/08/2040
धनु	25/09/2038	मक	16/04/2039	कुंभ	27/10/2039	मीन	20/03/2040	तुला	15/08/2040
मक	02/10/2038	कुंभ	30/04/2039	मीन	10/11/2039	वृश्चि	04/04/2040	कन्या	23/08/2040
कुंभ	10/10/2038	मीन	03/06/2039	वृश्चि	21/11/2039	तुला	08/05/2040	तुला	05/09/2040
मीन	29/10/2038	वृश्चि	27/06/2039	तुला	15/12/2039	कन्या	27/05/2040	वृश्चि	11/09/2040
वृश्चि	11/11/2038	तुला	20/08/2039	कन्या	28/12/2039	तुला	30/06/2040	धनु	20/09/2040
तुला	12/12/2038	कन्या	19/09/2039	तुला	21/01/2040	वृश्चि	15/07/2040	मक	23/09/2040

कुंभ - मीन		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - तुला		कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला	
23/09/2040		18/03/2041		19/07/2041		27/04/2042		02/10/2042	
18/03/2041		19/07/2041		27/04/2042		02/10/2042		11/07/2043	
मीन	14/10/2040	वृश्चि	29/03/2041	तुला	12/09/2041	कन्या	14/05/2042	तुला	26/11/2042
वृश्चि	29/10/2040	तुला	21/04/2041	कन्या	12/10/2041	तुला	14/06/2042	वृश्चि	19/12/2042
तुला	02/12/2040	कन्या	05/05/2041	तुला	05/12/2041	वृश्चि	27/06/2042	धनु	22/01/2043
कन्या	21/12/2040	तुला	28/05/2041	वृश्चि	29/12/2041	धनु	16/07/2042	मक	05/02/2043
तुला	24/01/2041	वृश्चि	08/06/2041	धनु	01/02/2042	मक	24/07/2042	कुंभ	19/02/2043
वृश्चि	08/02/2041	धनु	23/06/2041	मक	15/02/2042	कुंभ	31/07/2042	मीन	24/03/2043
धनु	01/03/2041	मक	29/06/2041	कुंभ	28/02/2042	मीन	20/08/2042	वृश्चि	17/04/2043
मक	10/03/2041	कुंभ	05/07/2041	मीन	03/04/2042	वृश्चि	02/09/2042	तुला	11/06/2043
कुंभ	18/03/2041	मीन	19/07/2041	वृश्चि	27/04/2042	तुला	02/10/2042	कन्या	11/07/2043

कुंभ - वृश्चि		कुंभ - धनु		कुंभ - मक		मीन - मीन		मीन - वृश्चि	
11/07/2043		11/11/2043		05/05/2044		15/07/2044		28/09/2045	
11/11/2043		05/05/2044		15/07/2044		28/09/2045		02/08/2046	
वृश्चि	21/07/2043	धनु	02/12/2043	मक	09/05/2044	मीन	06/09/2044	वृश्चि	24/10/2045
धनु	05/08/2043	मक	11/12/2043	कुंभ	12/05/2044	वृश्चि	13/10/2044	तुला	22/12/2045
मक	11/08/2043	कुंभ	19/12/2043	मीन	21/05/2044	तुला	06/01/2045	कन्या	25/01/2046
कुंभ	17/08/2043	मीन	10/01/2044	वृश्चि	27/05/2044	कन्या	22/02/2045	तुला	25/03/2046
मीन	01/09/2043	वृश्चि	25/01/2044	तुला	09/06/2044	तुला	18/05/2045	वृश्चि	20/04/2046
वृश्चि	11/09/2043	तुला	27/02/2044	कन्या	17/06/2044	वृश्चि	24/06/2045	धनु	27/05/2046
तुला	05/10/2043	कन्या	18/03/2044	तुला	30/06/2044	धनु	16/08/2045	मक	11/06/2046
कन्या	19/10/2043	तुला	20/04/2044	वृश्चि	06/07/2044	मक	07/09/2045	कुंभ	26/06/2046
तुला	11/11/2043	वृश्चि	05/05/2044	धनु	15/07/2044	कुंभ	28/09/2045	मीन	02/08/2046

चर दशा

भोग्य दशा काल : तुला 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

तुला 5 वर्ष	
02/04/1992	
03/04/1997	
वृश्चि	02/09/1992
धनु	01/02/1993
मक	03/07/1993
कुंभ	02/12/1993
मीन	03/05/1994
मेष	03/10/1994
वृष	04/03/1995
मिथु	03/08/1995
कर्क	02/01/1996
सिंह	02/06/1996
कन्या	01/11/1996
तुला	03/04/1997

वृश्चिक 7 वर्ष	
03/04/1997	
02/04/2004	
तुला	02/11/1997
कन्या	03/06/1998
सिंह	02/01/1999
कर्क	03/08/1999
मिथु	03/03/2000
वृष	02/10/2000
मेष	03/05/2001
मीन	02/12/2001
कुंभ	03/07/2002
मक	01/02/2003
धनु	02/09/2003
वृश्चि	02/04/2004

धनु 8 वर्ष	
02/04/2004	
02/04/2012	
वृश्चि	02/12/2004
तुला	02/08/2005
कन्या	03/04/2006
सिंह	02/12/2006
कर्क	03/08/2007
मिथु	02/04/2008
वृष	02/12/2008
मेष	02/08/2009
मीन	03/04/2010
कुंभ	02/12/2010
मक	03/08/2011
धनु	02/04/2012

मकर 12 वर्ष	
02/04/2012	
02/04/2024	
धनु	03/04/2013
वृश्चि	03/04/2014
तुला	03/04/2015
कन्या	02/04/2016
सिंह	03/04/2017
कर्क	03/04/2018
मिथु	03/04/2019
वृष	02/04/2020
मेष	03/04/2021
मीन	03/04/2022
कुंभ	03/04/2023
मक	02/04/2024

कुम्भ 1 वर्ष	
02/04/2024	
03/04/2025	
मीन	03/05/2024
मेष	02/06/2024
वृष	03/07/2024
मिथु	02/08/2024
कर्क	02/09/2024
सिंह	02/10/2024
कन्या	01/11/2024
तुला	02/12/2024
वृश्चि	01/01/2025
धनु	01/02/2025
मक	03/03/2025
कुंभ	03/04/2025

मीन 7 वर्ष	
03/04/2025	
02/04/2032	
मेष	02/11/2025
वृष	03/06/2026
मिथु	02/01/2027
कर्क	03/08/2027
सिंह	03/03/2028
कन्या	02/10/2028
तुला	03/05/2029
वृश्चि	02/12/2029
धनु	03/07/2030
मक	01/02/2031
कुंभ	02/09/2031
मीन	02/04/2032

मेष 10 वर्ष	
02/04/2032	
03/04/2042	
वृष	01/02/2033
मिथु	02/12/2033
कर्क	03/10/2034
सिंह	03/08/2035
कन्या	02/06/2036
तुला	03/04/2037
वृश्चि	01/02/2038
धनु	02/12/2038
मक	03/10/2039
कुंभ	02/08/2040
मीन	03/06/2041
मेष	03/04/2042

वृष 10 वर्ष	
03/04/2042	
02/04/2052	
मेष	01/02/2043
मीन	03/12/2043
कुंभ	02/10/2044
मक	02/08/2045
धनु	03/06/2046
वृश्चि	03/04/2047
तुला	02/02/2048
कन्या	02/12/2048
सिंह	02/10/2049
कर्क	03/08/2050
मिथु	03/06/2051
वृष	02/04/2052

मिथुन 9 वर्ष	
02/04/2052	
03/04/2061	
वृष	01/01/2053
मेष	02/10/2053
मीन	03/07/2054
कुंभ	03/04/2055
मक	02/01/2056
धनु	02/10/2056
वृश्चि	03/07/2057
तुला	03/04/2058
कन्या	02/01/2059
सिंह	03/10/2059
कर्क	03/07/2060
मिथु	03/04/2061

कर्क 4 वर्ष	
03/04/2061	
03/04/2065	
मिथु	02/08/2061
वृष	02/12/2061
मेष	03/04/2062
मीन	03/08/2062
कुंभ	02/12/2062
मक	03/04/2063
धनु	03/08/2063
वृश्चि	03/12/2063
तुला	02/04/2064
कन्या	02/08/2064
सिंह	02/12/2064
कर्क	03/04/2065

सिंह 5 वर्ष	
03/04/2065	
03/04/2070	
कन्या	02/09/2065
तुला	01/02/2066
वृश्चि	03/07/2066
धनु	02/12/2066
मक	04/05/2067
कुंभ	03/10/2067
मीन	03/03/2068
मेष	02/08/2068
वृष	01/01/2069
मिथु	03/06/2069
कर्क	02/11/2069
सिंह	03/04/2070

कन्या 6 वर्ष	
03/04/2070	
02/04/2076	
तुला	03/10/2070
वृश्चि	03/04/2071
धनु	03/10/2071
मक	02/04/2072
कुंभ	02/10/2072
मीन	03/04/2073
मेष	02/10/2073
वृष	03/04/2074
मिथु	03/10/2074
कर्क	03/04/2075
सिंह	03/10/2075
कन्या	02/04/2076

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - वृष		मीन - मिथु		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - कन्या	
02/11/2025		03/06/2026		02/01/2027		03/08/2027		03/03/2028	
03/06/2026		02/01/2027		03/08/2027		03/03/2028		02/10/2028	
मेष	19/11/2025	वृष	21/06/2026	मिथु	20/01/2027	कन्या	21/08/2027	तुला	21/03/2028
मीन	07/12/2025	मेष	08/07/2026	वृष	06/02/2027	तुला	07/09/2027	वृश्चि	07/04/2028
कुंभ	25/12/2025	मीन	26/07/2026	मेष	24/02/2027	वृश्चि	25/09/2027	धनु	25/04/2028
मक	12/01/2026	कुंभ	13/08/2026	मीन	14/03/2027	धनु	13/10/2027	मक	13/05/2028
धनु	29/01/2026	मक	31/08/2026	कुंभ	01/04/2027	मक	31/10/2027	कुंभ	31/05/2028
वृश्चि	16/02/2026	धनु	17/09/2026	मक	18/04/2027	कुंभ	17/11/2027	मीन	17/06/2028
तुला	06/03/2026	वृश्चि	05/10/2026	धनु	06/05/2027	मीन	05/12/2027	मेष	05/07/2028
कन्या	24/03/2026	तुला	23/10/2026	वृश्चि	24/05/2027	मेष	23/12/2027	वृष	23/07/2028
सिंह	10/04/2026	कन्या	10/11/2026	तुला	11/06/2027	वृष	10/01/2028	मिथु	10/08/2028
कर्क	28/04/2026	सिंह	27/11/2026	कन्या	28/06/2027	मिथु	27/01/2028	कर्क	27/08/2028
मिथु	16/05/2026	कर्क	15/12/2026	सिंह	16/07/2027	कर्क	14/02/2028	सिंह	14/09/2028
वृष	03/06/2026	मिथु	02/01/2027	कर्क	03/08/2027	सिंह	03/03/2028	कन्या	02/10/2028

मीन - तुला		मीन - वृश्चि		मीन - धनु		मीन - मक		मीन - कुंभ	
02/10/2028		03/05/2029		02/12/2029		03/07/2030		01/02/2031	
03/05/2029		02/12/2029		03/07/2030		01/02/2031		02/09/2031	
वृश्चि	20/10/2028	तुला	21/05/2029	वृश्चि	20/12/2029	धनु	21/07/2030	मीन	19/02/2031
धनु	07/11/2028	कन्या	08/06/2029	तुला	07/01/2030	वृश्चि	08/08/2030	मेष	09/03/2031
मक	24/11/2028	सिंह	25/06/2029	कन्या	24/01/2030	तुला	25/08/2030	वृष	27/03/2031
कुंभ	12/12/2028	कर्क	13/07/2029	सिंह	11/02/2030	कन्या	12/09/2030	मिथु	13/04/2031
मीन	30/12/2028	मिथु	31/07/2029	कर्क	01/03/2030	सिंह	30/09/2030	कर्क	01/05/2031
मेष	17/01/2029	वृष	18/08/2029	मिथु	19/03/2030	कर्क	18/10/2030	सिंह	19/05/2031
वृष	03/02/2029	मेष	04/09/2029	वृष	05/04/2030	मिथु	04/11/2030	कन्या	06/06/2031
मिथु	21/02/2029	मीन	22/09/2029	मेष	23/04/2030	वृष	22/11/2030	तुला	23/06/2031
कर्क	11/03/2029	कुंभ	10/10/2029	मीन	11/05/2030	मेष	10/12/2030	वृश्चि	11/07/2031
सिंह	29/03/2029	मक	28/10/2029	कुंभ	29/05/2030	मीन	28/12/2030	धनु	29/07/2031
कन्या	15/04/2029	धनु	14/11/2029	मक	15/06/2030	कुंभ	15/01/2031	मक	16/08/2031
तुला	03/05/2029	वृश्चि	02/12/2029	धनु	03/07/2030	मक	01/02/2031	कुंभ	02/09/2031

मीन - मीन		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह	
02/09/2031		02/04/2032		01/02/2033		02/12/2033		03/10/2034	
02/04/2032		01/02/2033		02/12/2033		03/10/2034		03/08/2035	
मेष	20/09/2031	मेष	28/04/2032	वृष	26/02/2033	मिथु	27/12/2033	कन्या	28/10/2034
वृष	08/10/2031	मीन	23/05/2032	मेष	23/03/2033	वृष	22/01/2034	तुला	22/11/2034
मिथु	26/10/2031	कुंभ	17/06/2032	मीन	18/04/2033	मेष	16/02/2034	वृश्चि	18/12/2034
कर्क	12/11/2031	मक	13/07/2032	कुंभ	13/05/2033	मीन	14/03/2034	धनु	12/01/2035
सिंह	30/11/2031	धनु	07/08/2032	मक	08/06/2033	कुंभ	08/04/2034	मक	06/02/2035
कन्या	18/12/2031	वृश्चि	02/09/2032	धनु	03/07/2033	मक	03/05/2034	कुंभ	04/03/2035
तुला	05/01/2032	तुला	27/09/2032	वृश्चि	28/07/2033	धनु	29/05/2034	मीन	29/03/2035
वृश्चि	22/01/2032	कन्या	22/10/2032	तुला	23/08/2033	वृश्चि	23/06/2034	मेष	23/04/2035
धनु	09/02/2032	सिंह	17/11/2032	कन्या	17/09/2033	तुला	18/07/2034	वृष	19/05/2035
मक	27/02/2032	कर्क	12/12/2032	सिंह	12/10/2033	कन्या	13/08/2034	मिथु	13/06/2035
कुंभ	16/03/2032	मिथु	06/01/2033	कर्क	07/11/2033	सिंह	07/09/2034	कर्क	09/07/2035
मीन	02/04/2032	वृष	01/02/2033	मिथु	02/12/2033	कर्क	03/10/2034	सिंह	03/08/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु		मेष - मक	
03/08/2035		02/06/2036		03/04/2037		01/02/2038		02/12/2038	
02/06/2036		03/04/2037		01/02/2038		02/12/2038		03/10/2039	
तुला	28/08/2035	वृश्चि	28/06/2036	तुला	28/04/2037	वृश्चि	26/02/2038	धनु	28/12/2038
वृश्चि	23/09/2035	धनु	23/07/2036	कन्या	23/05/2037	तुला	24/03/2038	वृश्चि	22/01/2039
धनु	18/10/2035	मक	17/08/2036	सिंह	18/06/2037	कन्या	18/04/2038	तुला	16/02/2039
मक	12/11/2035	कुंभ	12/09/2036	कर्क	13/07/2037	सिंह	13/05/2038	कन्या	14/03/2039
कुंभ	08/12/2035	मीन	07/10/2036	मिथु	07/08/2037	कर्क	08/06/2038	सिंह	08/04/2039
मीन	02/01/2036	मेष	01/11/2036	वृष	02/09/2037	मिथु	03/07/2038	कर्क	04/05/2039
मेष	27/01/2036	वृष	27/11/2036	मेष	27/09/2037	वृष	29/07/2038	मिथु	29/05/2039
वृष	22/02/2036	मिथु	22/12/2036	मीन	23/10/2037	मेष	23/08/2038	वृष	23/06/2039
मिथु	18/03/2036	कर्क	17/01/2037	कुंभ	17/11/2037	मीन	17/09/2038	मेष	19/07/2039
कर्क	13/04/2036	सिंह	11/02/2037	मक	12/12/2037	कुंभ	13/10/2038	मीन	13/08/2039
सिंह	08/05/2036	कन्या	08/03/2037	धनु	07/01/2038	मक	07/11/2038	कुंभ	07/09/2039
कन्या	02/06/2036	तुला	03/04/2037	वृश्चि	01/02/2038	धनु	02/12/2038	मक	03/10/2039

मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष		वृष - मेष		वृष - मीन	
03/10/2039		02/08/2040		03/06/2041		03/04/2042		01/02/2043	
02/08/2040		03/06/2041		03/04/2042		01/02/2043		03/12/2043	
मीन	28/10/2039	मेष	27/08/2040	वृष	28/06/2041	वृष	28/04/2042	मेष	27/02/2043
मेष	22/11/2039	वृष	22/09/2040	मिथु	23/07/2041	मिथु	24/05/2042	वृष	24/03/2043
वृष	18/12/2039	मिथु	17/10/2040	कर्क	18/08/2041	कर्क	18/06/2042	मिथु	18/04/2043
मिथु	12/01/2040	कर्क	12/11/2040	सिंह	12/09/2041	सिंह	13/07/2042	कर्क	14/05/2043
कर्क	07/02/2040	सिंह	07/12/2040	कन्या	07/10/2041	कन्या	08/08/2042	सिंह	08/06/2043
सिंह	03/03/2040	कन्या	01/01/2041	तुला	02/11/2041	तुला	02/09/2042	कन्या	03/07/2043
कन्या	28/03/2040	तुला	27/01/2041	वृश्चि	27/11/2041	वृश्चि	27/09/2042	तुला	29/07/2043
तुला	23/04/2040	वृश्चि	21/02/2041	धनु	22/12/2041	धनु	23/10/2042	वृश्चि	23/08/2043
वृश्चि	18/05/2040	धनु	18/03/2041	मक	17/01/2042	मक	17/11/2042	धनु	18/09/2043
धनु	12/06/2040	मक	13/04/2041	कुंभ	11/02/2042	कुंभ	13/12/2042	मक	13/10/2043
मक	08/07/2040	कुंभ	08/05/2041	मीन	09/03/2042	मीन	07/01/2043	कुंभ	07/11/2043
कुंभ	02/08/2040	मीन	03/06/2041	मेष	03/04/2042	मेष	01/02/2043	मीन	03/12/2043

वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - वृश्चि		वृष - तुला	
03/12/2043		02/10/2044		02/08/2045		03/06/2046		03/04/2047	
02/10/2044		02/08/2045		03/06/2046		03/04/2047		02/02/2048	
मीन	28/12/2043	धनु	27/10/2044	वृश्चि	28/08/2045	तुला	28/06/2046	वृश्चि	28/04/2047
मेष	22/01/2044	वृश्चि	22/11/2044	तुला	22/09/2045	कन्या	23/07/2046	धनु	24/05/2047
वृष	17/02/2044	तुला	17/12/2044	कन्या	17/10/2045	सिंह	18/08/2046	मक	18/06/2047
मिथु	13/03/2044	कन्या	11/01/2045	सिंह	12/11/2045	कर्क	12/09/2046	कुंभ	14/07/2047
कर्क	07/04/2044	सिंह	06/02/2045	कर्क	07/12/2045	मिथु	08/10/2046	मीन	08/08/2047
सिंह	03/05/2044	कर्क	03/03/2045	मिथु	02/01/2046	वृष	02/11/2046	मेष	02/09/2047
कन्या	28/05/2044	मिथु	29/03/2045	वृष	27/01/2046	मेष	27/11/2046	वृष	28/09/2047
तुला	23/06/2044	वृष	23/04/2045	मेष	21/02/2046	मीन	23/12/2046	मिथु	23/10/2047
वृश्चि	18/07/2044	मेष	18/05/2045	मीन	19/03/2046	कुंभ	17/01/2047	कर्क	17/11/2047
धनु	12/08/2044	मीन	13/06/2045	कुंभ	13/04/2046	मक	11/02/2047	सिंह	13/12/2047
मक	07/09/2044	कुंभ	08/07/2045	मक	08/05/2046	धनु	09/03/2047	कन्या	07/01/2048
कुंभ	02/10/2044	मक	02/08/2045	धनु	03/06/2046	वृश्चि	03/04/2047	तुला	02/02/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 7, 8, 9
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	56%	सन्तति सुख, दम्पति, धन
हीरा	शुक्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	50%	पराक्रम, धनार्जन
पन्ना	बुध	47%	शत्रु व रोग, नेष्ट भाग्य, व्यय
पुखराज	गुरु	47%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	44%	नेष्ट भाग्य, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	19%	शत्रु व रोग, हानि

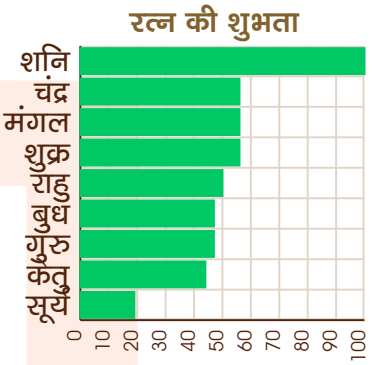

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	25/08/1997	0%	38%	38%	55%	47%	62%	100%	56%	19%
बुध	25/08/2014	31%	38%	56%	61%	47%	62%	100%	50%	44%
केतु	25/08/2021	0%	38%	62%	47%	47%	62%	89%	25%	59%
शुक्र	25/08/2041	0%	38%	56%	55%	47%	69%	100%	56%	53%
सूर्य	26/08/2047	44%	62%	62%	47%	55%	38%	89%	25%	19%
चंद्र	25/08/2057	31%	69%	56%	55%	47%	56%	100%	25%	19%
मंगल	25/08/2064	31%	62%	69%	22%	55%	56%	100%	25%	53%
राहु	25/08/2082	0%	38%	38%	47%	47%	62%	100%	62%	19%
गुरु	25/08/2098	31%	62%	62%	22%	61%	38%	100%	50%	44%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, मूंगा, हीरा एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना, पुखराज व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण

करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको नौकरी में स्थिरता प्रदान करेगा। मोती रत्न से आपके अपने मामा-मौसी से संबंध मधुर होंगे। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियों से राहत मिलेगी। आप अपने शत्रुओं की पहचान सरलता से कर पायेंगे। चंद्र रत्न मोती ऋण विषयों का समाधान करेगा। मोती रत्न शुभ होकर आपको उन्नति और सफलता देगा। आपको कोई बड़ा पद प्राप्त हो सकता है। मोती रत्न चंद्र ग्रह को शुभता प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति

का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते है। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल के सभी शुभ फल पाने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते है। मूंगा रत्न धारण करने से आपके कुटुंब सुख व पराक्रम में वृद्धि हो सकती है। यह रत्न आपके दांपत्य सुख में भी बढ़ोतरी करेगा। आप यह रत्न धारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि कर आपके रुके हुए कार्यों को बना सकता है। मूंगा रत्न आपको कुटुंब सुख, आभूषण, गायन के साथ साथ स्वतंत्र व्यापार में सफलता दे सकता है। रत्न धारण से मंगल बलवान होगा और मंगल की शुभता आपको पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को

धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। इस रत्न को धारण करने से आपके पराक्रम भाव को बढ़ायेंगे। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। गोमेद रत्न सकारात्मक विचारधारा बनाये रखेगा। रत्न के प्रभाव से आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पराक्रम व बल की बढ़ोतरी होगी। प्रवास के कार्यो में सफलता मिलेगी। मनोकूल पद की प्राप्ति होगी एवं उत्तरोत्तर उन्नति होगी। आप धर्म-कर्म की गतिविधियों में रुचि लेंगे। गोमेद रत्न

आपके लिए शुभदायक है।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने से आपमें विवेकशीलता की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके आत्मविश्वास भाव और पुरुषार्थ भाव को कमजोर कर सकता है। आपको शत्रुभय परेशान कर सकता है। आपके शत्रु चातुर्य और नीति योग्यता के प्रभाव से आपकी सफलता को बाधित कर सकते है। तार्किक बुद्धि का सहयोग आपको पूरा नहीं मिल पाएगा। बौद्धिकता योग्यता का सहयोग प्राप्त न होने के कारण आप बाहुबल से धनार्जन करने का प्रयास कर सकते है। आपके व्यय गलत कार्यों पर हो सकते है। पन्ना रत्न आपके विनोदी स्वभाव को बढ़ा सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। द्वादशेश बुध का रत्न पन्ना आपको धार्मिक कार्यो में अरुचि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको तीर्थयात्राओं में असुविधा का अनुभव होगा। पन्ना रत्न पहनने पर धर्म क्रियाओं, धर्म यात्राओं पर किए गये व्यय अत्यधिक और व्यर्थ हो सकते है। यह रत्न आपको गुरुओं के साथ समय बिताने के योग बना सकता है। पन्ना रत्न पहनने पर धर्म क्रियाओं पर आपमें तर्क भाव आ सकता है। रत्न में शुभता की कमी आपको धार्मिक विषयों पर लेखन कार्य करने में दिक्कतें दे सकती है। श्रेष्ठजनों के प्रति आपके द्वारा सम्मान में कमी हो सकती है। रत्न की प्रतिकूलता आपको जन्म स्थान से दूर ले

जा सकता है। पिता से असहयोग की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज से जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में कमी के योग बना सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ सकता है। नौकर चाकरों से सुख सहयोग प्राप्त करने में आपको दिक्कतें आ सकती है। सरकारी क्षेत्र से आय प्राप्ति के लिए आपमें योग्यता की कमी हो सकती है। वैवाहिक जीवन के लिए भी यह रत्न अनुकूल नहीं रहेगा। आमदनी के साधन सीमित हो सकते है। आपके लाभ कम हो सकते है। यह रत्न आपको कंजूस बना सकता है। आपकी पूर्वार्जित संपत्ति को कोई छिन्नने का प्रयास कर सकता है। मित्रों की सलाह आपके भाग्य में कमी का कारण बन सकता है। संतान को लेकर आपको कुछ चिंताएं हो सकती है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

लहसुनिया

आपकी कुंड़ली में केतु नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण कर आपको वाहनों का खतरा हो सकता है। वाहन से गिरने के कारण आपको चोट लग सकती है। धर्म से विपरीत आप जा सकते है। दूसरे धर्मो पर अधिक विश्वास कर सकते है। लहसुनिया रत्न आपकी राजनैतिक सफलता बाधित कर सकता है। आप पर लोगों का विश्वास कम हो सकता है। लहसुनिया रत्न आपके पिता के सुख में कमी ला सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किए गए धार्मिक कार्य मात्र दिखावा मात्र हो सकते है। सहोदर या भाईयों को रत्न प्रभाव से कष्ट की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आपको संतान संबंधी चिंता रह सकती है। यह रत्न बाजुओं में दर्द की समस्या आपको दे सकता है.

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट

कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छ्ठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋृण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते है। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते है। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। कुंडली के अन्य ग्रह योगों के कारण सूर्य को अपने शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आप अपने जीवन लक्ष्य को समय पर प्राप्त करने में असफल हो सकते है। यह रत्न आपकी उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकता है। धन-संपत्ति तथा बड़े भाई बहनों के लिए रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपका अरिष्ट कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप विपत्तियों में पड़ सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको राज सत्ता और सरकारी पद पर कार्य करने में परेशानियां दे सकता है। माणिक्य रत्न संतान में कमी, भोगि-विलास तथा आंडबर प्रिय और तानाशाही की प्रवृति आपको दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(25/08/2021 - 25/08/2041)

शुक्र की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा, गोमेद, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(25/08/2041 - 26/08/2047)

सूर्य की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, माणिक्य, हीरा व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(26/08/2047 - 25/08/2057)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा, हीरा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, माणिक्य व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(25/08/2057 - 25/08/2064)

मंगल की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, मोती, हीरा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(25/08/2064 - 25/08/2082)

राहु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, पुखराज, मोती व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित

हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(25/08/2082 - 25/08/2098)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, हीरा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 25/08/1997

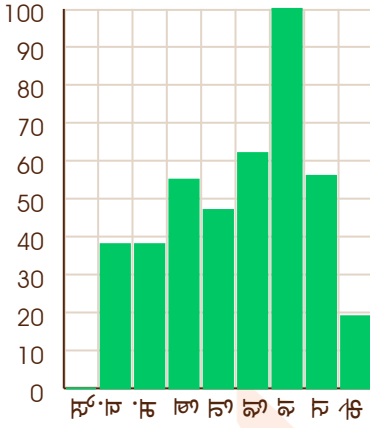

बुध - 25/08/2014

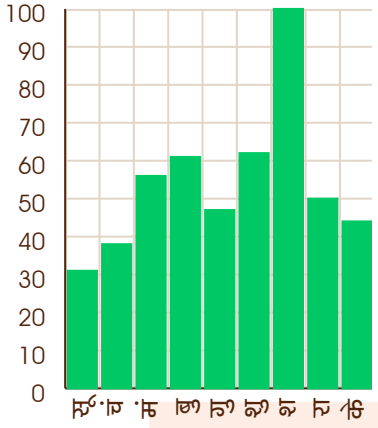

केतु - 25/08/2021

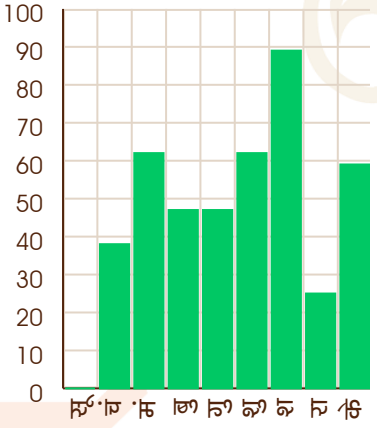

शुक्र - 25/08/2041

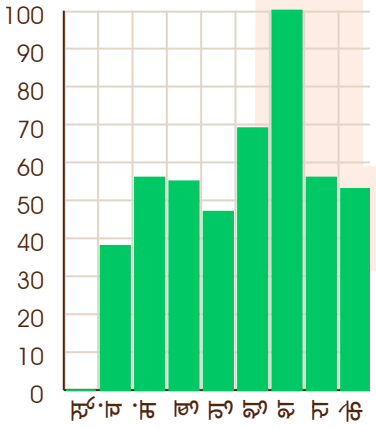

सूर्य - 26/08/2047

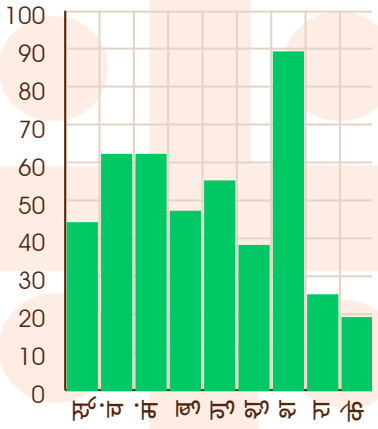

चन्द्र - 25/08/2057

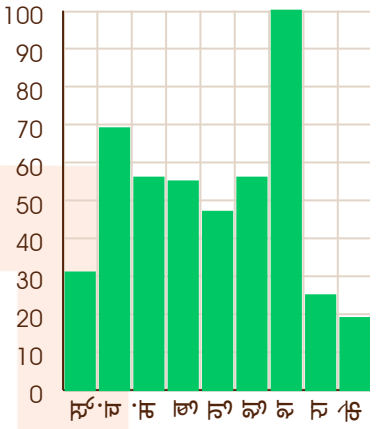

मंगल - 25/08/2064

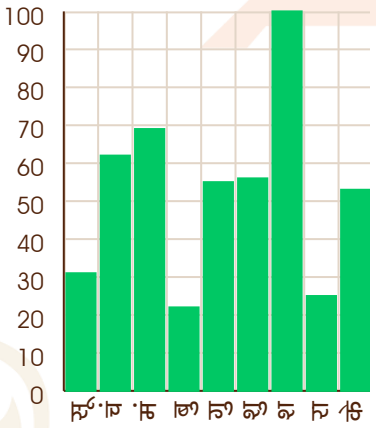

राहु - 25/08/2082

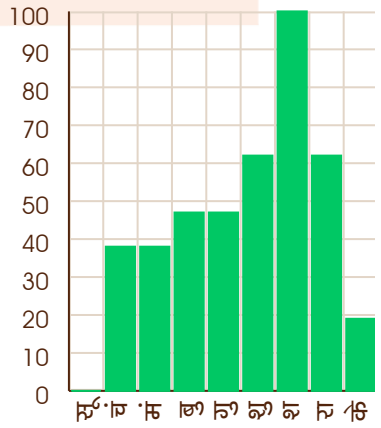

गुरु - 25/08/2098

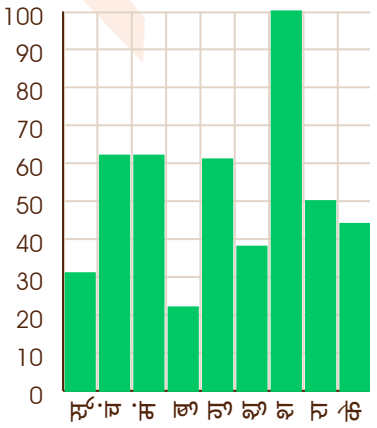

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग,ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता

से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपका मूलांक 2 है तथा आपका भाग्यांक 9 है। मूलांक 2 का स्वामी चंद्र तथा भाग्यांक 9 का स्वामी मंगल है तथा मूलांक 2 और भाग्यांक 9 के बीच सम संबंध है। चंद्र-मंगल के योग से आपको साहसिक कार्यों के द्वारा धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी अच्छी

कल्पना शक्ति एवं साहस के द्वारा अपना रोजगार-व्यापार चलाएंगे। आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। रोजगार में आप शीघ्र गति से उन्नति को प्राप्त करेंगे। जल एवं अग्नि क्षेत्र के रोजगार-व्यापार आपके अनुकूल रहेंगे। संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा आपके रोजगार-व्यापार में कम रहेगी, लेकिन खुशामदी एवं चापलूस व्यक्ति आपको कभी भी हानि पहुंचा सकते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपका एकाधिकार रहे। प्रतिस्पर्धा को आप सहन नहीं कर पाएंगे एवं आपकी निरंतर कोशिश रहेगी की आपके कार्यक्षेत्र में आपका प्रभुत्व बना रहे। जिन क्षेत्रों में अधिक साहस की आवश्यकता होगी, वे आपके अनुकूल रहेंगे।

आपका भाग्योदय 27 वर्ष की अवस्था से प्रारंम्भ हो कर 36 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 45 वर्ष कि अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 9 की मित्रता 3 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म विश्वाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में तुला लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर वृष राशि का नवमांश एवं मिथुन राशि का द्रेष्काण उदित था। इस जन्म प्रभाव से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप बहुत चालाक एवं धूर्त व्यक्ति हैं। आप धन संचय करने में कोई अवरूद्धता नहीं चाहते। आप अपनी महत्वकांक्षा से संबंधित कार्य संपादन में एक भाग्यशाली प्राणी हैं। आपके जीवन की उज्वलता किसी भी प्रकार से निपटाएंगे। परंतु आपके जीवन का सर्वप्रथम 21 वें वर्ष से 28 वे वर्ष तथा द्वितीय 28 वे वर्ष से 34 वें वर्ष तक का समय अति अनुकूल एवं प्रगतिकारक समय रहेगा।

आपके जीवन में धन उपार्जन से संबंधित दूर-दूर तक कतिपय संबंध रहेंगे। अर्थात् आपके संबंध धनोपार्जन में सहायक होंगे। आप अपने दिमाग को तथाकथित रूप से द्वि-पक्षीय रखकर प्रेरित करते हो तथा अपने धनकोष को विज्ञापित करके प्रस्तुत करते हो। आप सदैव अन्यों के प्रति इर्ष्या रखते हों तथा अपनी संपत्ति उर्पाजन के लिए सदैव प्रेरित रहते हो। आपकी शक्ति अन्यों की अपेक्षा अति उत्तम है।

आप निःसंदेह अति कुशाग्र बुद्धि के हैं तथा आपकी संलग्नता उज्वल भविष्य का प्रतीक है। आपको यह ज्ञात है कि अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए। परंतु आपका अड़ियल पन आपकी अपरिपक्वता की सूचना है। जन सामान्य आपके इस व्यवहार को पसंद नहीं करते। अतः कुछ व्यक्ति आपके प्रतिपक्षी हो जाते हैं। परंतु आपका दृढ़ रचनात्मक चरित्र आपका सहायक होकर विपक्षी को अंत समय में पराजित कर देते हैं। इस प्रकार वे लोग सदैव आपका तहेदिल से समर्थन करते हैं।

अतएव आप अच्छी प्रकार अपनी योजना की वास्तविकता को धीरे-धीरे कार्यान्वित करेंगे। इस प्रकार आप अपने क्षतिग्रस्त राह को पुननिर्मित करें। यदि आप धैर्यपूर्वक अपने व्यवहार को समझ लें तो आप अत्यंत लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने मित्रतापूर्ण व्यवहार हेतु सक्षम होकर अपने लाभ जनक प्रवृति में वृद्धि करेंगे।

आपको अपने व्यवसाय एवं अपनी गृह व्यवस्था के प्रति युक्ति संगत होना चाहिए। आपको अपने आनंदप्रद गृह व्यवस्था हेतु अपनी पत्नी के साथ मतैक्यता रखनी चाहिए।

आप मात्र अपनी जीवन संगिनी के साथ क्षणिक प्रेम संबंध न रखें। आपको सदैव ही नये प्रेम संबंध के प्रति संपर्क असंतोषजनक और अस्थायी है। अन्तोगत्वा आपको अपने प्रेम संबंध में समानता हेतु आश्वस्त होकर पारिवारिक जीवन को आनन्दमय बनाना चाहिए।

आप अपने व्यवसाय हेतु वैदेशिक पर्यटन एजेन्सी का व्यवहार कर सकते हैं। आप अपने व्यवसाय हेतु शेयर मार्केट का कार्य भी कर सकते हैं।

आप विविध प्रकार के उत्तेजिक कार्यकलाप आपकी वृद्धावस्था में रोगग्रस्त होने का सूचक है जिस वजह से आप कई प्रकार के रोगों से अक्रान्त हो सकते हैं। यथा मस्तिष्क रोग, ट्यूमर आदि रोग से प्रभावित हो सकते हैं। अतः आपको विधिवत अपने खान-पान के संबंध

अपने डाक्टर से सतत परीक्षण कराते रहना चाहिए।

आपके लिए अंकों में उपयुक्त अंक 1, 2, 4 एवं 7 अंक धनोपार्जन हेतु पूर्ण अनुकूल है। आपके लिए अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक सर्वथा प्रतिकूल है।

आपके लिए रंगों में रंग हरा एवं पीला रंग अनुपयुक्त हैं। आपके लिए रंग नारंगी एवं सफेद रंग मनभावन एवं शुभ है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शनि भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों से युक्त होंगे तथा आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की आपके पास बहुलता होगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका प्रभाव रहेगा एवं सामाजिक जनों से वांछित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। आप की कुंडली में किसी वृद्ध व्यक्ति की चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति के भी योग बनते है। इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा अन्यत्र भी स्वपरिश्रम पराक्रम एवं बुद्धिमता से धन सम्पत्ति अर्जित करने में सफल होंगे। आपको चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से लाभ होगा। अतः दोनो पर ही आप यथोचित मात्रा में निवेश कर सकते है।

आप को उत्तम आवास की प्राप्ति होगी एवं घर भी आधुनिक रूप से पूर्ण रूपेण सुसज्जित होगा। इसके आकर्षण एवं स्वछता के लिए आप व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका जीवन में आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा भौतिक्ता एवं आधुनिक विचारों से युक्त होगी उनमें व्यवहार कुशलता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने इन्हीं गुणों से वह परिवार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होंगी। परिवार के सभी सदस्य उन्हें यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव विद्यमान होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित मात्रा में आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होगी एवं आपकी उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी सी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्याध्ययन में आप प्रारंभ से ही रूचिशील होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छी सफलताएं अर्जित करेंगे। इसी संदर्भ में आप स्नातक परीक्षा अच्छी श्रेणी में उतीर्ण करेंगे जिससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं वन्धुवर्ग से वांछित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी डिग्री अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

नैसर्गिक पापी ग्रह शनि की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था के बाद रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः युवावस्था से ही आप उचित खान-पान का ध्यान रखें तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षित होंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा मंगल भी पंचम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे तथा इसमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी। समाज में अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता होगी तथा कठिन से कठिन समस्या का समाधान आप सुगमता से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य एवं दर्शन आदि में आपकी रूचि कम ही होगी परन्तु आधुनिक, एवं वैज्ञानिक विषयों में पूर्ण रूचि रखेंगे तथा उनके ज्ञानार्जन में सर्वदा तत्पर होंगे। अपनी योग्यता एवं परिश्रम से आप इस क्षेत्र कोई शोधकार्य या नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन भी कर सकते है।

मंगल की शनि की राशि में स्थिति के प्रभाव से यद्यपि प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि कम ही होगी तथापि ऐसे संबंधों से आपको क्षणिक आनन्द की अवश्य प्राप्ति होगी। प्रेम-प्रसंगों में आप भावुकता से दूर ही रहेंगे। अतः आपका प्रेम मर्यादित एवं सीमान्तर्गत ही होगा तथा परस्पर भावात्मक आकर्षण विद्यमान होगा। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है इससे आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

सन्तति भाव में शनि की राशि में मंगल की स्थिति से सन्तति प्राप्ति में आपको किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन सन्तति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, तेजस्वी एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति तथा सफलता प्राप्त करेंगे। वे स्वच्छन्द प्रवृति के होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपने आप ही सम्पन्न करेंगे तथा इसमें माता-पिता की सलाह एवं सहयोग कम ही लेंगे। वे यदा-कदा माता पिता की आज्ञा का भी उलंघन कर सकते है। लेकिन इससे आपको चिंतित नहीं होना चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने देने चाहिए। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा वृद्धावस्था में स्वयं के लिए यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही अच्छी सफलता प्राप्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें पढ़ाऐंगे। जिससे वे जीवन में अच्छी आजीविका एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा उनकी ओर से आप सामान्यतया निश्चित ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी एवं उग्र स्वभाव के होने के कारण अन्य जनों से भी उनका समय-समय पर विवाद होता रहेगा जिससे आपको परेशानी होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति पर नियन्त्रण रखने में समर्थ होंगे। इस प्रकार बच्चों से आपको सामान्य सुख प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, योनि गौ, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "झ" या "झा" अक्षर से होगा।

आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ रहेंगे तथा समस्त परिवार जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका कद मध्यम रहेगा एवं जीवन में सर्वदा अच्छे कार्यों को करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक इनको सम्पन्न करेंगे। आपके इन सत्कार्यों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको आदर प्रदान करेंगे। आपके पास पूर्ण मात्रा में धनैश्वर्य रहेगा तथा एक धनाढ्य पुरूष के रूप में आप समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा एवं अन्य जनों के समक्ष इसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इससे लोगों में आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे एवं समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप नाना प्रकार के सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक त्यागी पुरूष भी होंगे एवं समाज तथा परिवार में अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगे। धन का आपके पास अभाव कम ही रहेगा अन्यथा इससे आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में भी आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप प्रवीण होंगे तथा अपने ओजस्वी तथा प्रभावी वक्तव्यों से अन्य जनों को प्रभावित करने में सर्वदा सफल रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा एवं पुत्र पौत्रादि के सुख को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके शत्रु

हमेशा भयभीत एवं पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में वे असमर्थ रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसका अनुपालन करने में आप तत्पर रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

आप एक गौरवशाली पुरूष होंगे एवं समाज में अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से हमेशा सम्मानित रहेंगे। धर्म के विषय में आप का ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा सभी लोगों की आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा भाव रहेगा। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा साहसी प्रवृति होने के कारण शौर्यादि गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्न शील रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपका मस्तक विस्तृत एवं नासिका उन्नत रहेगी। साथ ही आपके आखें भी सुन्दर होंगी तथा शरीर के सर्वाङग सुडौल पुष्ट तथा सुन्दर रहेंगे। आपका कटिभाग पतला होगा। शिल्प विद्या में आप निपुण रहेंगे एवं इस क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक ख्याति एवं सफलता भी अर्जित

कर सकेंगे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे नित्य भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप कई शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे तथा एक उत्तम विद्वान के रूप में समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। साथ ही संगीत शास्त्र में भी आपका हार्दिक रूझान रहेगा तथा इस का आप अच्छा ज्ञान रखेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा रहेगी एवं नियमपूर्वक इनका अनुपालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। सभी वर्ग में आप पूर्ण रूप से प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सम्मान एवं आदर प्राप्त होता रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी तथा सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों से सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही क्रोध के भाव की आप में अल्पता रहेगी। आप राजकीय सेवा में भी नियुक्त रहेंगे तथा खान से उत्पन्न द्रव्यों से आजीविकार्जन करेंगे। साथ ही इससे पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन भी करेंगे। स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा सम्पूर्ण सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सभी सामाजिक लोगों से अच्छा व्यवहार करेंगे एवं सबसे आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नावादि में सैर करने से भी आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आप में रहेगा एवं इसका आप प्रायः यथाशक्ति अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न द्रव्यों या समुद्र से निकले मोती, शंख आदि रत्नों से पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी अथवा मित्रादि की सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके शरीर का कद भी मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप पानी पीने की बार बार इच्छा करेंगे तथा दिन में कई बार इसका प्रयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक महान विद्वान होंगे तथा कृतज्ञता के सद्गुण से हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका पूर्ण उपकार स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक रूप से उनका आभार भी प्रकट करेंगे। इस प्रकार आपके सद्गुणों से प्रभावित होकर सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा

सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे तथा जीवन में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाएंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमशील पुरूष होंगे तथा इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक चालाक एवं बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को चालाकी तथा बुद्धिमानी से ही सम्पन्न करेंगे। पानी में क्रीड़ा करने से आप को अत्यन्त ही आनन्दानुभूति होगी एवं इसके लिए आप प्रायः रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप निर्मल बुद्धि के पुरूष होंगे एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही निस्वार्थ रहेगा तथा छल कपट का भी सर्वथा आप में आभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आपका अधिकांश समय उदरपोषण संबंधी कार्यों में ही व्यतीत होगा तथा यदा कदा लाभ स्रेतों में व्यवधान आने के कारण आपको आर्थिक कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा एवं इससे आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं साहस पूर्वक अपने कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही आपका स्वभाव सन्तोष से युक्त रहेगा तथा जो कुछ भी आपके पास हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता को प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में गम्भीरता की प्रधानता रहेगी तथा वीरता के गुणों से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही समाज में आप एक परम आदरणीय तथा श्रद्धेय व्यक्ति माने जाएंगे एवं सब लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। कृपणता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं धन संचय में अधिक प्रवृत रहेंगे। आपकी कृपणता से कई बार अन्य लोगों को आपसे कष्टानुभूति होगी जिससे वे आपसे अप्रसन्नता प्रकट करेंगे। आप परिवार तथा कुल में सबके प्रिय रहेंगे एवं सभी परिवार जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। सेवा कार्यों में भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा यथाशक्ति इसको पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप तीव्रगति से गमन करने वाले व्यक्ति होगे एवं आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुवर्ग

में आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

आप एक आकर्षक एवं सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उच्चकोटि के विद्वानों के लक्षणों से भी सुशोभित रहेंगे। साथ ही समाज में महिला वर्ग से आपके सम्बन्ध मधुर एवं मैत्रीपूर्ण रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ हैं अतः आप देवता तथा ब्राहमणों के प्रति नित्य श्रद्धावान रहेंगे तथा समयानुसार इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा एवं समय समय पर अन्य जनों के समक्ष इस भाव का आप प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से भी बलवान रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यो को स्वबल से करने में भी आप निपुण रहेंगे। इससे समाज में आप आदर एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शरीर कान्ति मान रहेगा तथा अन्य कई लोगों का आपके द्वारा पालन होगा एवं वे आपसे सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

आप समाज में सर्वदा आदरणीय रहेंगे एवं धन वैभव से सुसम्पन्न रहकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुणता प्राप्त करेंगे साथ ही इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्रीवर्ग में अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित होता रहेगा। आप उत्साही प्रवृति के पुरूष होंगे एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यो के उत्साह पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। वाद विवाद में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी इस प्रवृति से अपने महत्वपूर्ण

कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर

संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पति वार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं खत्म होगी तथा अन्य अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में सूर्य पड़ा है। इसकी वजह से आपको ननिहाल से सुख मिलेगा और मुकद्दमें में जीत होगी। मित्र और शत्रु आप से दब कर रहेंगे। आप अपने भाग्य से संतुष्ट रहेंगे। आप अपने भाग्य पर भरोसा रखेंगे, बेफिक्र रहेंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा। शारीरिक सुख अच्छा रहेगा। पुत्र जन्म के बाद अगर बुरा समय हो तो अच्छा समय आएगा अर्थात् लड़के की पैदाइश के बाद आपका जीवन स्थिर हो जाएगा और आपका भाग्योदय होगा। पिता का रुतबा और बढ़ेगा। पत्नी एवं संतान का सुख मिलेगा। आप अधिक पुत्रवान होंगे। दूसरी औरत के साथ संबंध रहेगा ऐसी संभावना है। आपके चरित्र पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप अपना काम बदल सकते हैं और उस बदले हुए काम से अच्छा फल मिलेगा। बुढ़ापे में रात का आराम, पूजा-पाठ, दान-पुण्य का शुभ असर मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के काम से लाभ होगा।

यदि आपने बहन से धन की ठगी की, सरकारी अधिकारियों से धोखा किया और मुकद्दमेबाजी में अपना ध्यान रखा, हर समय दूसरों की तरफ मांगने की नीयत रखी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर, कोर्ट में मुकद्दमों पर अधिक खर्च होगा। पांव में खराबी हो सकती है। पापी ग्रहों के संयोग से बुरा समय आरंभ होगा। जीवन में एक बार पतन होना संभव है। मामा का हाल खराब रहेगा। गुस्सा अधिक आएगा या रक्तचाप का रोग होगा। आपके नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली हो सकती है। सूर्य का मंदा समय 21-22 साल की उम्र में होगा, स्त्री पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आप अपने बाप या बेटे के साथ एक शहर या गांव में रह कर धन नहीं कमा सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन से झगड़ा न करें।
2. समय कैसा भी रहे दान या कर्ज न मांगें।

उपाय :

1. चांदी या दरिया का पानी घर में कायम करें।
2. बंदर को गेहूं-गुड़ खिलायें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से कन्या संतान अधिक होंगी। आप योजना बनाने में कुशल और बुद्धिमान होंगे। मुकद्दमे में आपको सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से सहयोग और लाभ की संभावना है। जैसी करनी वैसी भरनी की

नसीहत को आप हर दम याद रखेंगे। आपकी बुआ-बहन-लड़की सुखी रहेगी। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है, आप तड़पते हुए व्यक्ति के मुंह में पानी डालने वाले सबके हमदर्द होंगे। आपको गरीबी का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। आप किसी गंभीर रोग के रोगी नहीं होंगे।

यदि आपने बहन-बेटी का धन प्रयोग किया, अपना भेद किसी को बताया, सूर्यास्त के बाद दूध पिया, छबील या प्याऊ लगाया या आम लोगों के लिए धर्मार्थ कुआं, हैंड पंप लगाया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपको माता के सुख में कमी आ सकती है या सौतेली मां के साथ बचपन बिताना पड़ सकता है। 24 वर्ष की आयु में यदि आम जनता के लिए कुआं या पानी का साधन लगवायेंगे तो उसका बुरा असर माता और संतान पर पड़ेगा। आपकी स्त्री की आंख में कुछ खराबी होने की संभावना है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों का नुकसान होने की उम्मीद है। शत्रु आप से भय खाएंगे। कोर्ट-कचहरी का झमेला आपको झेलना पड़ सकता है। आपको कभी-कभी गंभीर चिंता करनी पड़ सकती है। आप जब कभी बिना सोचे-समझे काम करेंगे तो सामने परेशानी आ सकती है। माता को कष्ट रहेगा, मौत तक भारी समय आयेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. 24 वर्ष की आयु में मुफ्त पानी दान का साधन कायम न करें।
2. किसी को अपना भेद न बताएं।
3. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

उपाय :

1. शमशान-अस्पताल में पानी का साधन कायम करना शुभ है।
2. माता को कष्ट के समय खरगोश पालें।
3. चन्द्र ग्रहण में 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल पांचवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप शांत स्वभाव के हैं। आपको अपने जन्मस्थान से दूर निवास करना पड़ सकता है आप बहुत यात्रा करेंगे। आपको धन-संपदा मिलेगी। पत्नी एवं संतान सुख प्राप्त होगा। आपकी औलाद अच्छी और सुखी रहेगी। आपका बेटा तथा पोता भी धनवान होगा। आप धनवान संतान के पिता होंगे। आपकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ेगी आप अमीर होते चले जाएंगे। आप या आपके खानदान में कोई हकीम या डॉक्टर हो सकता है। आपके बुजुर्गों की माली हालत अच्छी होगी। प्रत्येक वर्ष जन्मदिन के बाद से उन्नति और तरक्की होती चली जाएगी। आप अपने भाई या बाप-दादे की हैसियत से ऊंचे दर्जे के व्यक्ति होंगे। आपकी पुत्र प्राप्ति के बाद भाग्योन्नति होगी। आपके भाग्य के संबंध में अच्छा असर होने की उम्मीद है।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, आपने परिवार के लोगों से बिना कारण

दुश्मनी रखी, सट्टा-जुआ आदि खेला, संतान या पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपकी विद्या अधूरी, पेट में खराबी, कानों की तकलीफ, घुटने या पैरों में किसी प्रकार का कष्ट या जोड़ों का दर्द हो सकता है। संतान प्राप्ति या संतान सुख में बाधा की आशंका है। स्त्री को अठराह की बीमारी जो संतानोत्पत्ति में विघ्न कारक होती है, हो सकती है। सट्टा-जुआ आदि में हानि का योग है। पुत्र से क्लेश, परिवार में किसी को दमा या मिरगी का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब-बीयर न पियें, मछली न खायें।

उपाय :

1. घर में नीम का पेड़ जमीन या गमले में लगावें।
2. रात को लोटे में पानी भरकर सिरहाने रख कर सुबह किसी पौधे या बाग-बगीचे में डालें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से ऐसा लगता है कि आप मनमौजी होंगे। आप कम बोलेंगे परंतु गंभीर बात ही बोलेंगे। आपकी शिक्षा थोड़ी-बहुत बाधा के उपरांत पूरी होगी। दिमागी कार्य, व्यापार आदि से पूर्ण लाभ मिलेगा। आप विदेश का भ्रमण करेंगे। समुद्री यात्रा से पूर्ण लाभ प्राप्त होने की आशा है। आपके पास कृषि योग्य भूमि होगी। अमूमन आपका किसी के साथ झगड़ा विवाद नहीं होगा। यदि कारण-अकारण किसी से झगड़ा-मुकद्दमा हुआ भी तो आप की जीत होगी। प्रामाणिकता से धन कमाने से आपको यश भी मिलेगा। पत्नी धनी परिवार से मिलेगी। आप स्वयं सम्पत्तिवान होंगे। 34 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण संतान सुख मिलेगा। वृद्धावस्था अच्छी गुजरेगी। आपके मुंह से निकली बातें पूरी होंगी। अपनी विद्या, दिमागी काम, व्यापार से अच्छा धन कमाएंगे। कृषि कार्य, भाषण देना, लिखने-पढ़ने के काम आपके लिए अनुकूल होंगे। लेखन, प्रिंटिंग या छपाई के कामों में अच्छा फल मिलेगा। आपको राजयोग का सुख मिलेगा। आपके पास दौलत और जमीन-जायदाद अच्छी रहेगी।

यदि आपके घर का मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा में होगा या घर से उत्तर दिशा में लड़की का विवाह किया, ननिहाल वालों से झगड़ा किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से 34 वर्ष की उम्र के लगभग माता की मृत्यु हो सकती है। विवाह के बाद 37 वर्ष पत्नी सुख मिलेगा, दो विवाह योग, एक 34 से पहले दूसरा 34 वर्ष के बाद होने की संभावना है। आपको नेत्र रोग भी हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह घर से उत्तर दिशा की तरफ न करें।
2. सेवक/नौकरों से बचें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी के बर्तन में दूध भर कर वीराने में दबायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पिता का सहयोग प्राप्त होगा। भाई आपके मदद्गार हो सकते हैं और उनसे लाभ भी होगा। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाता है। आपके जीवन के 16 वर्ष से 28 वर्ष तक का समय भाग्य आपका खूब साथ देगा। आपके भाग्य से ससुराल वालों को बहुत लाभ होगा आपको धन-संपदा प्राप्त होगी। आप गरीबों की मदद करेंगे तथा धर्म में विश्वास रखेंगे, तो आपका भला होगा। पिता की उम्र तक आपकी हालात अच्छी रहेगी। आपको लाभ तो होगा परंतु आप कर्जदारी में भी रहेंगे। सरकारी कामों से संबंधित कमाये धन में बहुत बरकत होगी। आपके जीवन में आमदनी के और भी कई रास्ते हो सकते हैं। आप दूसरों के मदद्गार होंगे आप अपनी आमदनी का अपव्यय भी कर सकते हैं या आप अपने धन को संभाल कर नहीं रख सकेंगे। आपकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिलेगा। आप अपने भाई-बंधुओं, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखेगें। आप अपनी किस्मत पर भरोसा नही करेंगे।

यदि आपने पूजा स्थान घर में रखा, चाल-चलन खराब किया, घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से परंतु पिता की मृत्यु के बाद कोई सहायता नहीं करेगा। आप परिवार के साथ रह कर सुखी परंतु अकेले रहने में दुःखी रहेंगे। आप की आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। बुढ़ापे में आपकी किस्मत ढीली हो जाएगी। परिवार कितना बड़ा हो मगर कफन पराया मिले ऐसा शक है। आप शराब-बीयर आदि न पीएं वरना आपके पास धन नहीं टिकेगा। पिता की मौत के बाद आपके भाग्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपकी मौत शान और सम्मान से होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अण्डे न खावें।
2. पूजा स्थान घर में न रखें। धर्म मंदिर में पूजा करें।

उपाय :

1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन कमा पाएंगे। आप अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा और प्रेम भी करेंगे। आपके जीवन में पुत्र की अपेक्षा अधिक कन्याओं के सुख की संभावना है। आपको अधिक संख्या में संतान के सुख प्राप्ति की संभावना है। आप स्वस्थ रहेंगे। आपकी नेत्र की शक्ति बरकरार रहेगी। आप रुचिपूर्ण भोजन पसंद करेंगे। आपको वृद्धावस्था में अधिक सुख प्राप्त होगा। आप अपनी प्राप्त शिक्षा से हट कर काम करेंगे। आपके पिता के साथ-साथ आपकी किस्मत भी अच्छी है।

यदि आपकी पुत्रियां अधिक हुई, स्त्री से झगड़ा किया या आपकी स्त्री को नंगे पैर घूमने की आदत हुई, बहन-बुआ-साली-बेटी से धन लिया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विद्या अध्ययन में रुकावट, पिता सुख का अभाव रहेगा। काम शक्ति में नुक्स होने की शंका है। विलंब से पुत्र का सुख मिलेगा। धन-संपत्ति की हानि भी हो सकती है। आपके सामने लड़ाई-झगड़े की भी समस्याएं पेश आती रहेंगी। लड़ाई-झगड़े से परेशान रहेंगे। आपकी बुद्धि भ्रमित रहेगी। आपके पशु की चोरी या धन-दौलत के गुम हो जाने भी संभावना है। आपका कारोबार अच्छा नहीं रहे। राज पक्ष से भी कोई समस्या पैदा होगी, ऐसी आशंका है। लोग आपको कई बार बदनाम भी कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. स्त्री का अपमान न करें।
2. पत्नी को नंगे पैर न चलने देवें।

उपाय :

1. पत्नी लाल दवाई से गुप्तांग धोयें।
2. ठोस चांदी घर में रखें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे-पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण

वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :

1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका भविष्य उज्जवल रहेगा। आपका सितारा बुलंद रहेगा। आपके सामने दुश्मन सिर नहीं उठा सकेंगे। आप भविष्य में जीवन में घटने वाली घटना को पहले ही जान जाएंगे। किसी भी घटना के बारे में भविष्य का हाल दो वर्ष पहले जान जाएंगे। आपके सभी अरमान पूरे होंगे। आपकी कलम से लिखी बात में तलवार से भी पैनी धार साबित होगी। काफी धन-संपत्ति के स्वामी और शत्रुहंता होंगे। संतान का पूरा सुख मिलेगा। आपके जीवन का 22वां वर्ष उन्नतिकारक होगा। आप शाही जीवन बिताएंगे। आप धर्म में कम श्रद्धा रखेंगे। आप अपनी उम्र में पूरी तरह सुखी होंगे। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप दिलेर और निर्भय रहेंगे। आपकी गिनती बड़े लोगों में होगी। पत्नी-दौलत का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी औलाद भी धनवान होगी।

यदि आपने अपने पास या घर में हाथी दांत रखा, हाथियों के 3-3 खिलौने रखे, हाथियों से संबंधित कामों का व्यापार किया, बहन-बेटी-लड़की का धन प्रयोग किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। आपके भाई के लिए इस ग्रह का फल मंदा रहेगा। आपका भाई धोखाधड़ी करके आपका धन हड़प लेगा। आप पर कर्ज का बोझ पड़ेगा परंतु अपनी बुद्धिमता से कर्ज का बोझ उतार लेंगे। नौकरी-व्यापार में परेशानी होगी, संतान पर 34 वर्ष आयु तक बुरा फल हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. हाथी दांत पास न रखें।
2. तीन-तीन हाथी के खिलौने घर में न रखें।

उपाय :
1. ठोस चांदी घर में न रखें।
2. कन्याओं की सेवा या दुर्गा पाठ करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के नौवें खाने में केतु पड़ा है। जिसकी वजह से आपकी प्रगति होती रहेगी तबदीली कम होगी। आप पिता के आज्ञाकारी होंगे। सामने वाले व्यक्ति के मन को भाप लेंगे। आप धनवान और भाग्यवान होंगे। आप जन्मस्थान से दूर रहेंगे। आपकी संतानें दूरदर्शी होंगी। आपकी 48 वर्ष की आयु तक पिता की स्थिति अच्छी रहेगी। आप बलवान, भरोसेमंद और अपनी कमाई से बड़े आदमी बनेंगे। आप समाज सेवक होंगे। आपका जीवन परदेश में बीतेगा। धन-संपत्ति और घर के प्रभाव की वृद्धि होगी। आपकी सोलह वर्ष आयु के बाद शुभ असर शुरु होगा। आप अपने बेटे की सलाह से कोई काम करेंगे तो शुभफल प्राप्त होगा। आप माता-पिता और खानदान को तारेंगे। आपका अपना अच्छा रुतबा रहेगा। आप कोई बड़े अफसर बन सकते हैं। आपके यदि पुत्र होंगे तो दीर्घायु होंगे। आपका आर्शीवाद नामर्द को मर्द बना सकता है।

यदि आपने कुत्ते को चोट मारी या कुत्ते से नफरत की, चोर-डाकू को यदि आप साथ रखेंगे, परस्त्री से चाल-चलन खराब करेंगे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से शारीरिक कष्ट या जोड़ का दर्द होगा। धन की चिंता बनी रहेगी। प्रगति कम और तबदीली अधिक होगी। विवाह के 7 वर्ष बाद संतान पैदा हो, ऐसी आशंका है। आपकी बहन को पुत्र प्राप्ति न होगी या पुत्र सुख न होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चोर-डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :
1. शुद्ध सोने की ननतियां कानों में पहनें।
2. शुद्ध सोने की चौरस ईंट घर में रखें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस

समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर

पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी

सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन

करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की

भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभूत करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कुत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18

मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह

और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां-बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी।

आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह

की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में है उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि-भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश

जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई-लिखाई पर भी आपका पैसे खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफि शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है।

परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने

वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा-तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके

माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। हालांकि 5 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके व्यापार में सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि, वाहन व शिक्षा से जुड़े लोगों का चौमुखी विकास होगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से मान सम्मान व यश में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने से आपके सारे कार्य प्रभावित होंगे। आपके प्रतिद्वंदी आपको किसी कानूनी प्रक्रिया में फंसा सकते हैं। अतः जितना हो सके वाद-विवाद व कोर्ट कचहरी से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा पुराने कार्यों को ही अच्छे ढंग से चलाएं। किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें तथा अपने मन की बात सब के साथ शेयर न करें। 4 नवम्बर के बाद व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। परन्तु 5 अप्रैल के बाद अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आय के स्रोत बढ़ेंगे तथा रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वेतन में अचानक बढ़ोत्तरी होगी तथा आपको बड़े अधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद आर्थिक लेन देन व निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों को अनदेखा न करें नहीं तो आपका पारिवारिक वातावरण ज्यादा प्रभावित हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना होगा। परन्तु 5 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाई बहनों की उन्नति होगी। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

13 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। ससुराल एवं मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ नहीं है। इस समय के अंतराल में घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। ऐसे में आप अपनी धैर्य शक्ति बढ़ाएं तथा पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने के लिए पूर्ण प्रयास करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च के बाद आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परन्तु 2 जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। द्वादशस्थ शनि के कारण आपको ऐसा लगेगा कि आप धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु 5 अप्रैल से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। खान पान तथा दिनचर्या पर आप विशेष ध्यान देंगे। अपने दैनिक जीवन नवीन गतिविधियो को शामिल करेंगे। जैसे सुबह व्यायाम करना या खेल कूद व प्रतियोगिता में शामिल होगा।

13 जुलाई से राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। आपकी दैनिक दिनचर्या भी खराब हो सकती है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 5 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, यह प्रस्ताव आपके लिए अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है। जो व्यक्ति विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे है। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी क्योंकि नवमस्थ राहु के कारण पूर्व निर्धारित यात्राएं निरस्त होंगी।

5 अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा हेतु आपकी विदेश यात्रा होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी बहुत ही जरूरी है क्योंकि 13 जुलाई के बाद राहु एवं शनि का गोचर दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। 5 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में सोमवार के दिन धारण करें।

• तुला दान मतलब अपने बजन के बराबर अन्न का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी आगे बढ़ेगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते है। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है ऐसी विषम परिस्थिति में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ सफलता मिलेगी। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। काम धंधा अच्छा नहीं चलेगा। लेन देन के व्यापार में हानि होने की संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

धन संपत्ति

मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध बिगड़ सकता है। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपनी व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें।

नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में भी आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्य पूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट-मित्र अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में केतु की स्थिति इस बात के संकेत कर रही है कि यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके सम्बंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन-सहन व दिनर्चया बिगड़ सकती है, जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है तथा कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप अपने को स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मुद्दे को लेकर या

किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है। किसी यात्रा के दौरान भी आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः अनावश्यक यात्राएं करना भी ठीक नहीं होगा। गलत प्रवृत्तियों पर भी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। किसी कानूनी मामले में पड़कर चिंता करना भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा। खान-पान पर संयम रखें अन्यथा उदर विकार होने की सम्भावना है। आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह साल श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते है तो यह समय उत्तम है।

यदि आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद आपकी छोटी मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफि लाभप्रद रहेगी। सामुद्रिक यात्रा या जलीय स्थान की यात्रा अधिक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह साल अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आप अपना धर्म समझेंगे।

- वीरवार के दिन पीला वस्तु केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 25 सतम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यापारिक उन्नति के लिए कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपको सरकारी अफसरों और अनुभवी लोगों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से मिलता रहेगा।

6 मई से 30 जुलाई तक आपके कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। मित्र के साझेदारी में कड़वाहट आने की संभावना बन रही है। जुलाई के बाद आप अपने कार्यक्षेत्र को लेकर कुछ नई योजनाएं बनाएंगे तथा आपके कार्यो में सुधार होगा। वर्षान्त में आप व्यवसाय में अधिक व्यस्त रहेंगे। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी व आय के साधनो में सुधार होने के प्रबल योग हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए इस वर्ष आपको ज्यादा सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है। कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकते हैं। 6 मई के बाद आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। शेयर बाजार व सट्टे-लॉटरी में धन लगाने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करेंगे। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप धन कमाने में सफल रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। 25 सितम्बर के बाद धन संपत्ति के मामले में सुधार देखने को मिलेगा। जीवनसाथी को अपने कार्यक्षेत्र में कोई सफलता मिलने से आपको आर्थिक सहयोग मिलना संभव है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। संतान या पिता के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। 6 मई के बाद अचानक धर्मपत्नी के साथ संबंधो में खटास आने की संभावना बन रही है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने के कारण

आप कुछ परेशान रह सकते हैं, परन्तु 30 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अनुकूलता के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। वर्षान्त दाम्पत्य जीवन के लिए काफी शुभ है। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा। यह समय आपके दूसरी संतान के लिए ज्यादा शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के लिए शुभ है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। लग्नस्थ गुरु के कारण आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। खाने पीने पर आप विशेष ध्यान देंगे।

6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके स्वास्थ्य में कुछ कमी आने की संभावना बन रही है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों की वर्ष के प्रारम्भ में पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ेगी। स्मरण शक्ति अच्छी होने से आप कठिन विषयों को बड़ी आसानी से समझने में सफल होंगे। उच्च शिक्षा तथा रिसर्च से जुड़े छात्रों को अपनी मेहनत के अनुपात में ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनको 6 मई के बाद नये अवसर मिलने की उम्मीद है तथा 25 सितम्बर के बाद शिक्षा संबंधित सभी कार्यो में सफलता मिलने की प्रबल संभावना बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक लम्बी यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटक स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रहा है। 6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके व्यवसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठा व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतित होगा। गुरु भक्ति व मन्त्र सिद्धि के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- नीलम रत्न धारण करें।
- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं लग्न स्थान मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करना बहुत जरूरी है तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम का स्रोत बना रहेगा। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में अधिक खर्च करेंगे।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। यह वर्ष जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है। संपत्ति के क्रय-विक्रय संबंधी कार्यों के लिए 22 जून को राहु ग्रह का गोचर सफलता लेकर आ रहा है। अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान-सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। सप्तमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि जीवनसाथी की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों को बताता है। द्वितीय स्थान में गुरु की स्थिति परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बना रही है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक मामलों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। वर्षान्त में घर में मांगलिक कार्य भी संभव होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपकी आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें और अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

जून के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से बिगड़ सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनो में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल चल रहा है जिसके कारण आपको धोखा मिल सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 22 जून के बाद वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 10 जून के बाद आप बड़ी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। जून के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित होगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होगा। किसी तीर्थ स्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग में आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरुवाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं छटे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष अच्छे परिणाम के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। संपर्कसूत्रों से निश्चित ही आपका भला होने वाला है। शब्दों में मिठास लाएं इससे आपको अधूरे कार्य पूरे करने में मदद मिलेगी। अपने अधिकारों में थोड़ी कटौती करें। यह आपके लिए अच्छा होगा। कार्यक्षेत्र में कुछ लोगों से किये गए समझौते में दरार आने की संभावना दिख रही है। इस दिशा पर तुरंत कार्यवाही करें। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो सभी कार्यों में पारदर्शिता रखें नहीं तो मित्रता में दरार आ सकती है। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी सहायता करते रहेंगे।

11 सितम्बर के बाद आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें इच्छित लाभ मिलेगा तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। अपने अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य पर पैसे खर्च करा सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा।

30 जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा वापिस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले सावधान रहना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयो के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहने

वाला है। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि पत्नी की सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।

तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 30 जुलाई को द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

19 सितम्बर के बाद सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेगा। सामाजिक गतिविधियों की व्यस्तताओं के चलते आपको अपने स्वास्थ्य की चिंता नहीं रहेगी तथा आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक शान्ति भंग होगी। सुबह जल्दी उठ कर पार्क में घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को और ज्यादा प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना दूर हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप सभी विषयों का अभ्यास बहुत ही अच्छे तरीके से

करेंगे परिणामस्वरूप नतीजों में सकारात्मकता देखने को मिलेगी। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

19 सितम्बर के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अधिक मेहनत करनी होगी। आपको धैर्य और बुद्धिमत्ता से अपना काम संभालना होगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको काफी लाभ मिलेगा। लग्न स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ सकता है तथा घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन अभिमन्त्रित कर गले में धारण करें।
- नियमित रूप से श्रीसूक्तं और दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि कोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः बिना किसी पर विश्वास किए आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। आपकी सफलता में आपके सहकर्मियों का विशेष सहयोग होगा। आप नई योजनाएं बनाकर भविष्य में लाभ प्राप्त करेंगे।

16 फरवरी के बाद नौकरी करने वालों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा यही आपकी सफलता का कारण बनेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें आ सकती हैं।

16 फरवरी के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा हो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

16 फरवरी तक का समय पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद श्रेष्ठ हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। उनका प्यार आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा। भाई बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपको संतान संबंधित परेशानी दे सकता है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं।

संतान

इस वर्ष आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम स्थान का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधानी से रहें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

16 फरवरी के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो आपको परहेज की ज्यादा जरूरत है। आंख, पेट, पाचन और नसों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। ईलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

द्वितीय स्थान का शनि स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित कर सकता है तथा करियर के प्रति एकाग्रता बनाए रखें क्योंकि आपका मन अशान्त रहा सकता है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी'–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा के योग बना रही है। सामुद्रिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी–मोटी परेशानियां भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम स्थान का राहु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। इस वर्ष आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा–पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएगी। 16 फरवरी के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई पूजा अर्चना करेंगे, जिसमें आप अपने सगे सम्बन्धियों को भी आमंत्रित करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह–सुबह पीपल के वृक्ष को जल दें तथा संन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपनी दिनचर्या सुधारें व तामसिक वस्तुओं का सेवन कम करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :– शुक्र
(25/08/2021 - 25/08/2041)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 25/08/2021 को आरम्भ होकर 25/08/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित का रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(25/12/2024 - 25/12/2025)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ होकर 25/08/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 25/12/2024 को प्रारंभ होकर 25/12/2025 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी प्रशासनिक क्षमता उत्तम होगी, हर काम में सफलता मिलेगी। धनार्जन उत्तम होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। छाती या हृदय की कोई समस्या हो सकती है। अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न टोटके आजमाएं।

1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।
3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(25/12/2025 - 26/08/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ हुई थी और 25/08/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 25/12/2025 से प्रारंभ होकर 26/08/2027 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

छठे भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके मातहतों, सहकर्मियों और कर्मचारियों से संबंध बिगड़ सकते हैं। कार्यालय में कुव्यवस्था फैल सकती है, कर्ज़ बढ़ सकता है।

शरीर में दुर्बलता महसूस होगी। आवेश में आकर गलत काम कर सकते हैं जिससे हानि और पछतावा हो सकता है। खानपान में संयम बरतें वर्ना जिगर की व्याधि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप

करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध, चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(26/08/2027 - 25/10/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ होकर 25/08/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 26/08/2027 को प्रारंभ होकर 25/10/2028 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। मंगल ऊर्जा का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप क्रोधी और विचलित हो सकते हैं। किसी को धोखा न दें। कंजूसी और मष्तिष्क में दुर्बलता बढ़ सकती है। संतान और जीवनसाथी के लिए भी समय अशुभ हो सकता है। विवेकशक्ति में कमी होगी; जल्दबाजी के कार्यो से बाद में पछताना पड़ेगा।

आपका दिल दिमाग पर हावी रहेगा, भावुकता बढ़ेगी, अच्छी सलाह को अनसुनी कर देंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा सोने या तांबे की अंगूठी में मंगलवार के दिन प्रातःकाल दूध से धोकर, हनुमान या गणेश या शिव जी के पूजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(25/10/2028 - 26/10/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ होकर 25/08/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 25/10/2028 को प्रारंभ होकर 26/10/2031 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

तृतीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय पर स्वतंत्र विचार होंगे, इससे आपके

आलोचकों की संख्या बढ़ेगी। मूल निवास से दूर जा सकते हैं। यात्राएं खूब होंगी। आपके भाई-बहनों को कुछ कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(26/10/2031 - 26/06/2034)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/08/2021 को आरंभ हुई थी और 25/08/2041 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 26/10/2031 को प्रारंभ होकर 26/06/2034 को समाप्त होगी।

एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं का और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके धन, बुद्धि, ज्ञान और साहस में वृद्धि होगी। बहुत से मित्र होंगे, प्रसिद्धि मिलेगी। विद्वानों और धार्मिक संस्थाओं से जुड़ेंगे, उनकी सेवा करेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी; जरुरतमंदों की मदद करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(26/06/2034 - 25/08/2037)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ हुई थी और वद 25/08/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 26/06/2034 को प्रारंभ होकर 25/08/2037 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

पारिवारिक मामलों में यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। रिश्तेदार और मित्र आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। एकाकी जीवन आपको अच्छा लगेगा। वात और बलगम का कोई रोग हो

सकता है। सुस्ती और संवेदनशीलता से त्रस्त हो सकते हैं। मन में नकारात्मक विचार आएंगे। मन को प्रसन्न रखना लाभदायक रहेगा।

- शिवजी की उपासना प्रतिदिन करें।
- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(25/08/2037 - 25/06/2040)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ हुई थी और वद 25/08/2041 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 25/08/2037 जो आपके लिए 25/06/2040 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

छठे भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है जिससे शत्रुता बढ़ेगी। झगड़ालू होने के बावजूद समाज में सम्मान बढ़ेगा। अधिक उत्तेजना से स्नायुरोग हो सकता है अतः वाणी मृदु बनायें। आलस्य के कारण पढ़ाई में बाधा आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(25/06/2040 - 25/08/2041)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/08/2021 को प्रारंभ हुई थी और 25/08/2041 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 25/06/2040 को प्रारंभ होकर 25/08/2041 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

केतु अशुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 3वें भाव पर

महादशा :- सूर्य
(25/08/2041 - 26/08/2047)

सूर्य की महादशा 25/08/2041 को आरम्भ होगी 6 वर्षों के बाद 26/08/2047 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य षष्ठम भाव में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, ओज, साहस, पराक्रम और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है जबकि षष्ठम भाव स्वास्थ्य, सेवा, मता की ओर के सम्बन्धों, प्रतिद्वद्वियों और ऋण का सूचक है। अतः इस दशा में आपको प्रतिद्वंद्वियों पर विजय, ऋण से मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपको उत्तम ओजस्विता और उत्साह की प्राप्ति होगी। इस दशा में आप सभी बड़े रोगों से मुक्त होंगे। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अपने उत्तम स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने के लिये आपको सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आपको हर क्षेत्र में अतिशयता का परित्याग करना चाहिए। आपको सरदर्द, प्रदाह आदि हो सकते हैं। आपकी उपेक्षा के कारण आँख तथा हृदय से संबंधित रोग हो सकते हैं।

अर्थ :

इस दशा में आप नौकरी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको मुकदमें में सफलता मिलेगी। आप ऋण से मुक्त होंगे। साझेदारों से धन की प्राप्ति का संकेत भी है। आप स्वभाव से उदार हैं, आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन होगा। मातृ-पक्ष से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। अगर फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करें तो आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा।

व्यवसाय :

आपको प्रतिद्वंद्वियों और प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके लिये नौकरी उत्तम है। स्वतंत्र व्यवसाय कम लाभदायक होगा। आप एक अच्छे नेता हैं ओर किसी संस्था, निगम या बड़े संगठन के प्रधान हो सकते हैं। सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाएं आपकी जीवन-वृत्ति के लिये उपयुक्त हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अन्न तथा उपकरणों से सम्बन्धित व्यापार लाभदायक हो सकता है। क्रीड़ा सामग्री के व्यवसायियों को लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिये यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान मान-सम्मान तथा आमदनी में वृद्धि होगी और डच्चाधिकारिओं का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसायियों व्यापारियों का भाग्योदय होगा, आमदनी अच्छी होगी और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। लाभ के संकेत हैं। जीवन-वृत्ति, व्यवसाय और व्यापार में प्रगति के लिये यह दशा

उत्तम है।

परिवार (कुटुम्ब) :

अगर आप अपनी हठधर्मिता और आक्रामकता पर नियंत्रण रखें तो परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। बच्चों तथा जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। धैर्य तथा सतर्कता की आवश्यकता है। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी और उन्हें सुख और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। अप्रत्याशित प्रगति होगी और अकस्मात लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आपको अपने प्रतिद्वंद्वियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय प्राप्त होगी। आपकी भौतिकी, कला, विधि तथा प्रशासकीय सेवाओं में रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(25/08/2041 - 13/12/2041)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2041 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 13/12/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किसी भी कार्य को करने के लिए पर्याप्त शक्ति और ऊर्जा आप में रहेगी। बीमारियों और संक्रमण से बचने के लिए प्रतिरोधक शक्ति भी रहेगी। आप उच्चपद पर रहेंगे। साख अच्छी होगी। शत्रु परास्त होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी तथा अपने अधिकांश वायदों को पूर्ण करने में सफल रहेंगे। दिया गया धन वापस प्राप्त हो जाएगा। वांछित कर्ज मिल सकेगा।

मामा के परिवारगण इस अंतर्दशा में समृद्धि प्राप्त करेंगे। आपके उनके साथ संबंध मधुर रहेंगे। खेती या किराये से अच्छी आय होगी। मुकद्दमे में जीत होगी। छात्र खेल-कूद में रुचि लेंगे। परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। जायदाद की वृद्धि के लिए समय शुभ है।

मामूली स्वास्थ्य समस्याओं जैसे सिरदर्द, बुखार आदि से बचाव करें। इसके लिए सूर्य मंत्र का जाप करें और ध्यान का अभ्यास करें।

ऊँ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(13/12/2041 - 13/06/2042)

आपकी सूर्य की महादशा 25/08/2041 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 13/06/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कभी-कभी बेचैनी का अनुभव हो सकता है, मगर थोड़ी सावधानी से इसे समाप्त कर सकते हैं। समाजकार्य और महिलाओं से संबंधित कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। मातहतों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

संतान से लाभ प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी या भागीदार किसी लंबी यात्रा पर जा सकते हैं। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है। रसायन, द्रव पदार्थ आदि का आयात-निर्यात लाभप्रद रहेगा। सेवारत जातक सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आपके छोटे भाई-बहन खेती की जमीन आदि क्रय कर सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। माता का जीवन सुखी रहेगा। जायदाद से लाभ, किराया आदि संतोषप्रद रहेंगे। आप लंबी यात्रा पर जा सकते हैं।

ज्वर, मामूली चोट आदि के विरुद्ध सावधानी बरतें। चिंता से बचें क्योंकि यह रोगों

को जन्म दे सकती है। शुभत्व वर्धन हेतु चंद्र गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(13/06/2042 - 19/10/2042)

आपकी सूर्य की महादशा 25/08/2041 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 19/10/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में नौकरी में परिवर्तन हो सकता है। आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के लिए आर्थिक रूप से समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी धर्म या अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। मामापक्ष के लोगों को धनहानि हो सकती है। आपको जायदाद से लाभ बढ़ सकता है।

आपके पिता को किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। वे वर्तमान मकान में कुछ परिवर्तन कर सकते हैं। माता जायदाद क्रय कर सकती हैं। छोटे भाई-बहनों को व्यवसाय में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना चाहिए। बड़े भाई-बहनों के परिवार में तनाव हो सकता है।

आपको आर्थिक लाभ होगा। कुछ अतिरिक्त खर्चे हो सकते हैं। व्यापारियों को अतिरिक्त निवेश करना पड़ सकता है। सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है पर सावधानी आवश्यक है। निवेश से पूर्व विस्तृत विश्लेषण करना ठीक रहेगा।

उदर और हृदय से संबंधित रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, गुड़ और लाल दाल का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(19/10/2042 - 13/09/2043)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2041 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 19/10/2042 को प्रारंभ होकर 13/09/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

यह अवधि आपके लिए भाग्यशाली रहेगी। आपका स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति उत्तम होंगे; बहुत से मित्र होंगे। शत्रु और विरोधी परास्त होंगे क्योंकि आप साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ हैं। संचार साधन, लेखन, प्रकाशन आदि लाभदायक रहेंगे। पड़ौसी और बांधवों से लाभ होगा।

आपके पिता के व्यापार में वृद्धि होगी। आपके उनसे संबंध मधुर रहेंगे। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शत्रुओं पर विजय होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी और निवेश से लाभ होगा। आपकी संतान का समय उत्तम होगा; वे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके बहुत से मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में व्यस्त रहेंगे। परामर्शदाताओं को प्रतिस्पर्धी परेशान कर सकते हैं। व्यापारी लाभ कमाएंगे। यह समय भाग्यशाली रहेगा। गले या कान की मामूली समस्याओं से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान जी की पूजा और पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(13/09/2043 - 01/07/2044)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 13/09/2043 को प्रारंभ होकर 01/07/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आप धन, प्रसिद्धि और सम्मान के भागी होंगे। आपको सट्टेबाजी और पहले किये निवेश से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा या शिशु का जन्म हो सकता है। सर्जनात्मक ऊर्जा बढ़ेगी। आपका मन पुराणों के अध्ययन और धर्म में लगेगा। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। लाभकारी यात्रा के योग हैं। जीवन के प्रति दृष्टिकोण विस्तृत होगा।

जीवनसाथी को सट्टे, निवेश से लाभ होगा, संतान से सुख मिलेगा। आपके पिता को लेखन, पड़ौसियों और मामूली जान-पहचान वालों से लाभ होगा। माता के धन में वृद्धि होगी, अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। आपके भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी, लंबी यात्राएं होंगी और परिवार के सदस्यों से संबंध मधुर होंगे। आपके बच्चों की शिक्षा उत्तम होगी। उनमें से एक का विवाह हो सकता है या कैरियर अच्छा बनेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो बेहतरी हेतु कुछ स्पर्धा होगी। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी सफल और व्यस्त रहेंगे।

कान और पेट के रोग हो सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(01/07/2044 - 13/06/2045)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 01/07/2044 को प्रारंभ होगी और 13/06/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। माता-पिता से लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। जमीन-जायदाद से युक्त रहेंगे। सरकार से सहयोग मिलेगा। रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। मामा या ममेरे भाइयों से लाभ होगा। उत्तम स्वास्थ्य, उच्चपद और लोकप्रियता के योग हैं।

आपके जीवनसाथी को लाभ होगा और कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपको ससुराल

से लाभ होगा। माता की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और वे अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के लिए उच्चपद और रोगनिरोधक क्षमता का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में उत्तम अंक लाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। इस मामले में उनसे आपका विवाद हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कठोर परिश्रम और धन का योग है। परामर्शदाता सफलता और धन अर्जित करेंगे। व्यापारीगण उत्साह से भरपूर रहेंगे, लाभ कमाएंगे।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ – 2025

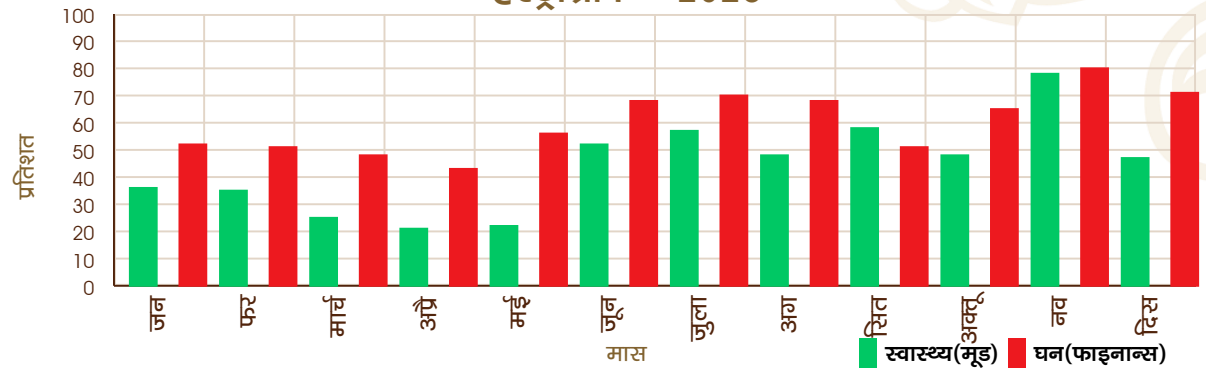

एस्ट्रोग्राफ – 2026

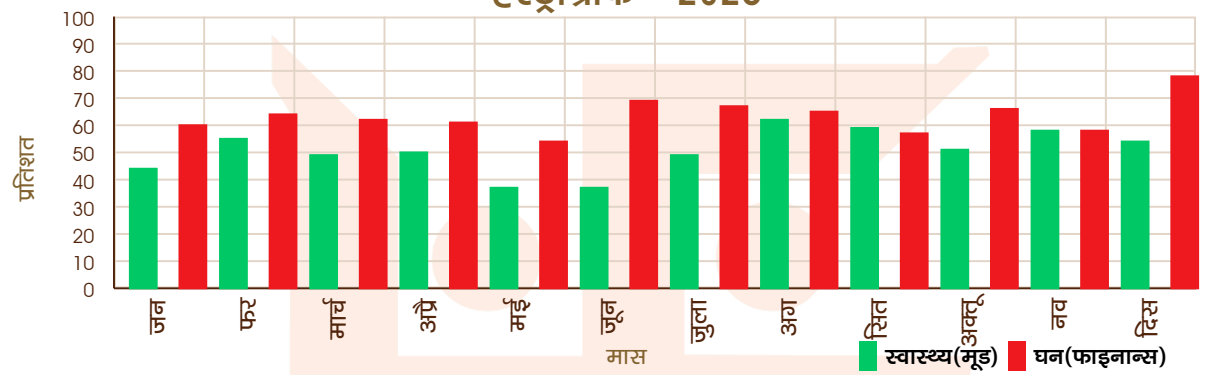

एस्ट्रोग्राफ – 2027

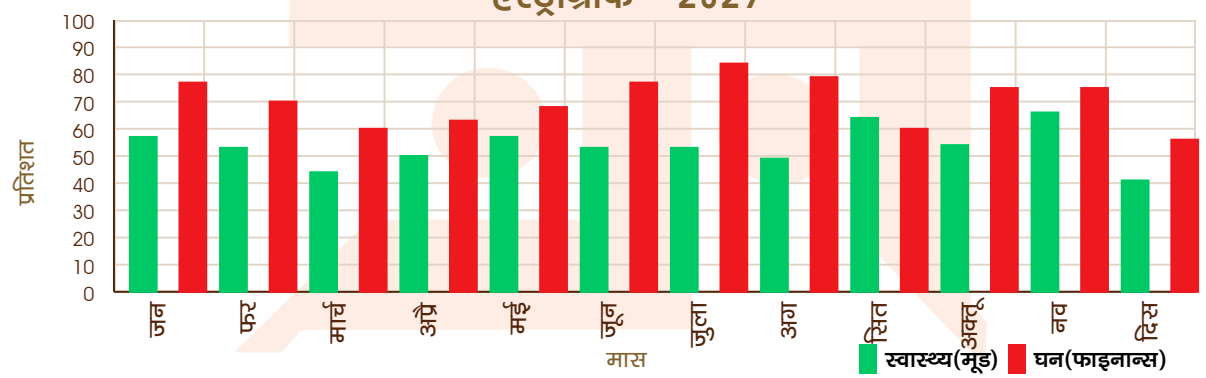

एस्ट्रोग्राफ – 2028

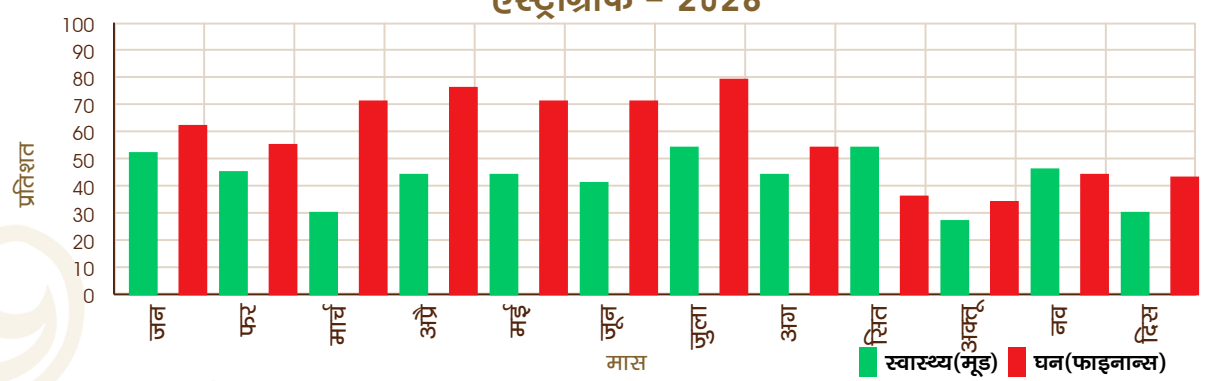

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ – 2029

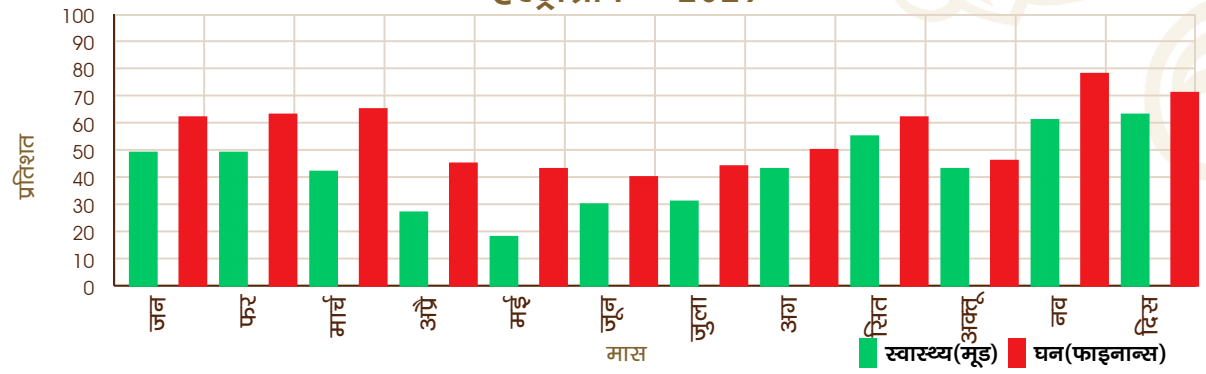

एस्ट्रोग्राफ – 2030

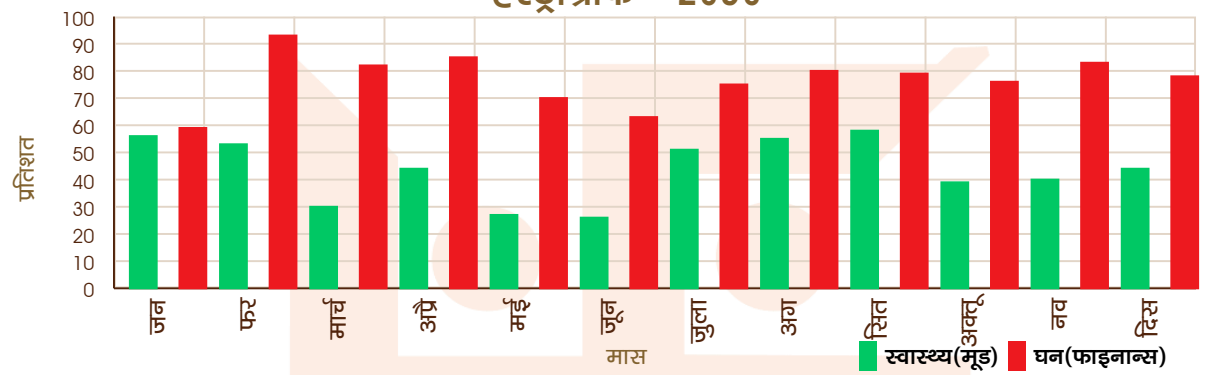

एस्ट्रोग्राफ – 2031

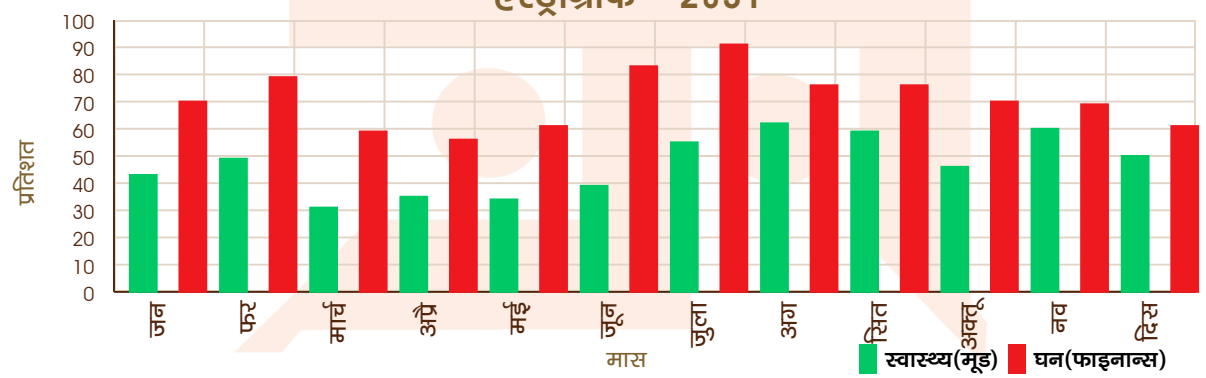

एस्ट्रोग्राफ – 2032

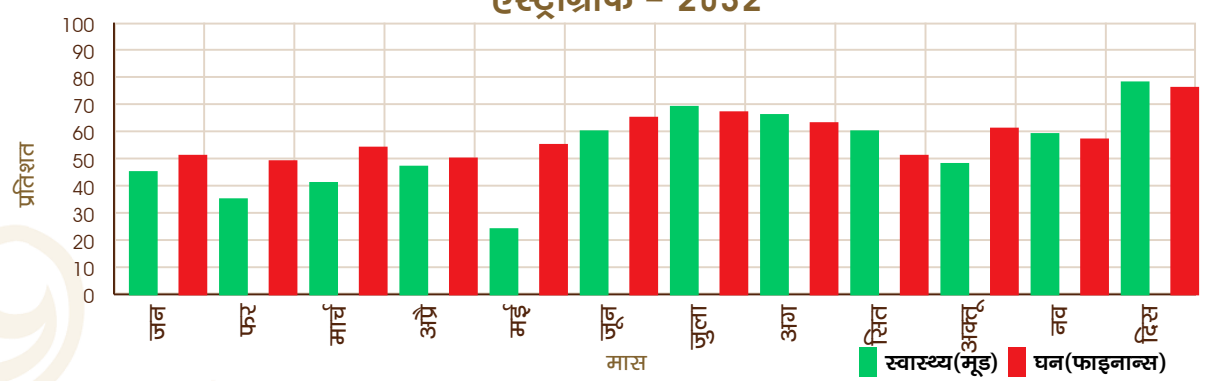

एस्ट्रोग्राफ – 2033

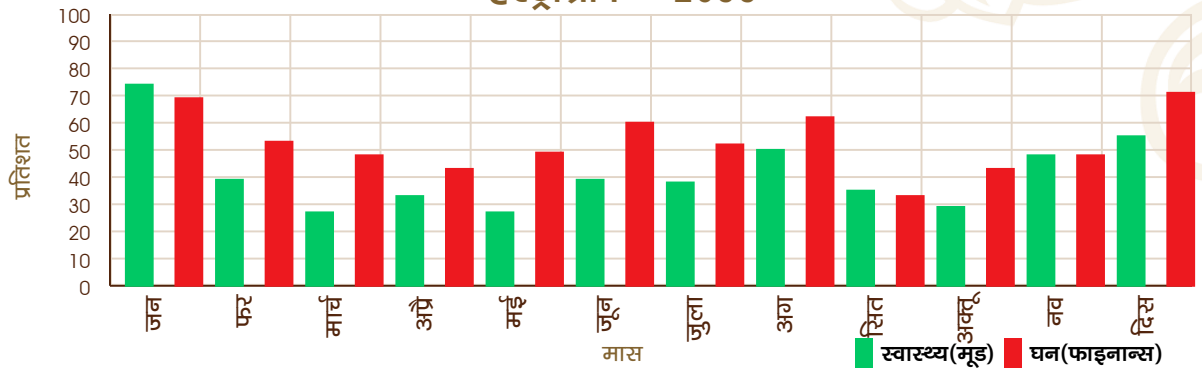

एस्ट्रोग्राफ – 2034

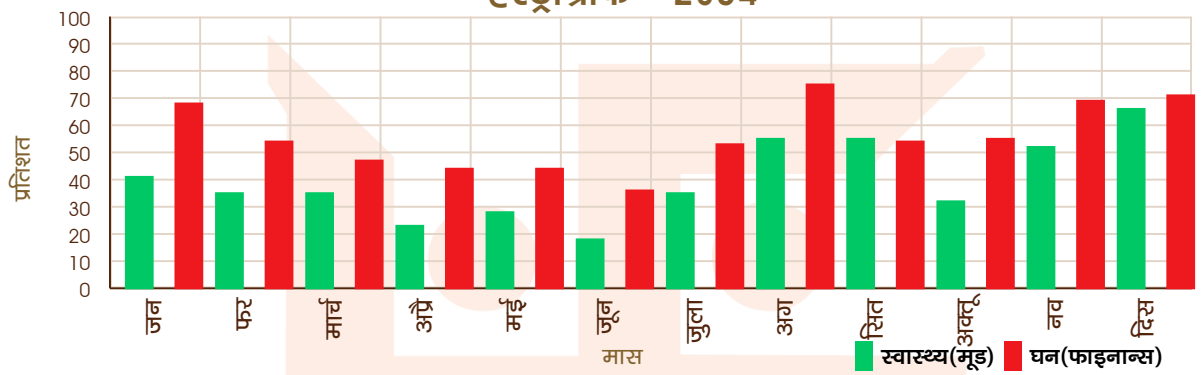

एस्ट्रोग्राफ – 2035

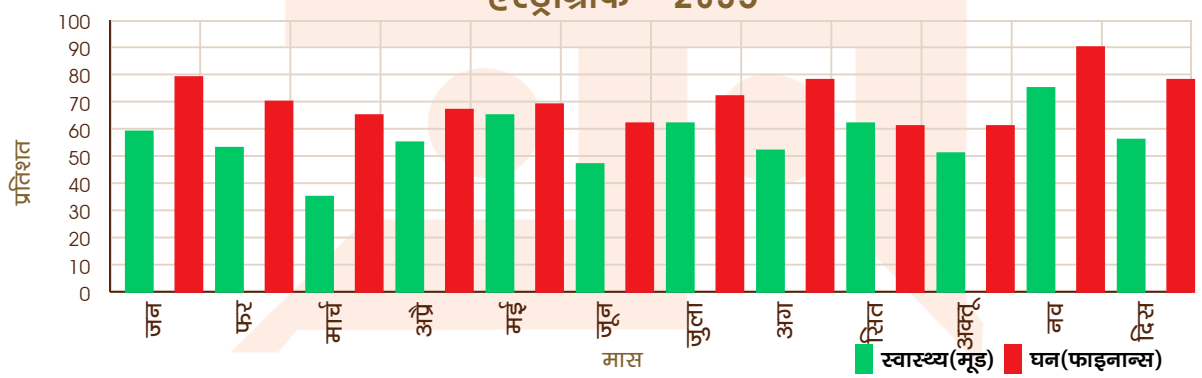

एस्ट्रोग्राफ – 2036

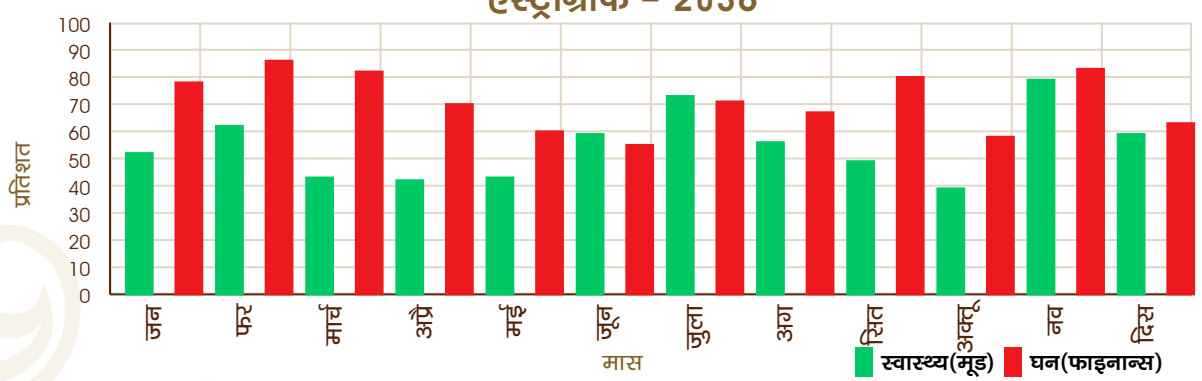

एस्ट्रोग्राफ – 2037

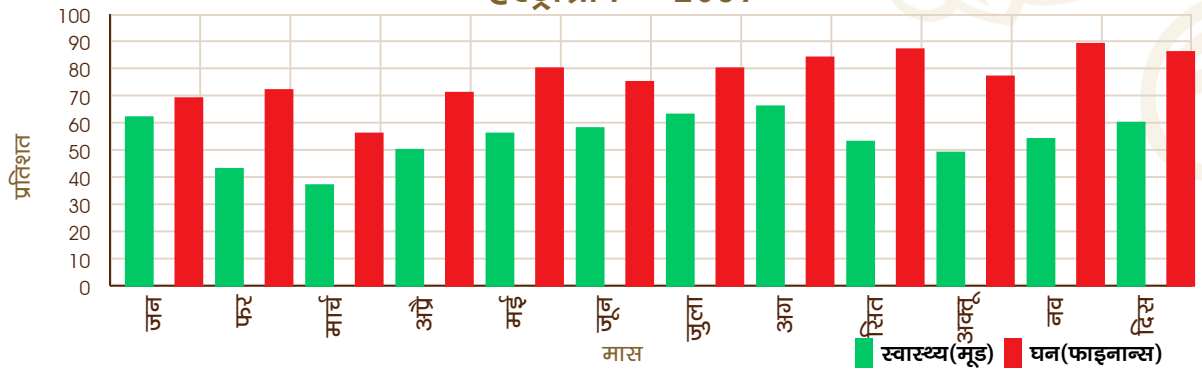

एस्ट्रोग्राफ – 2038

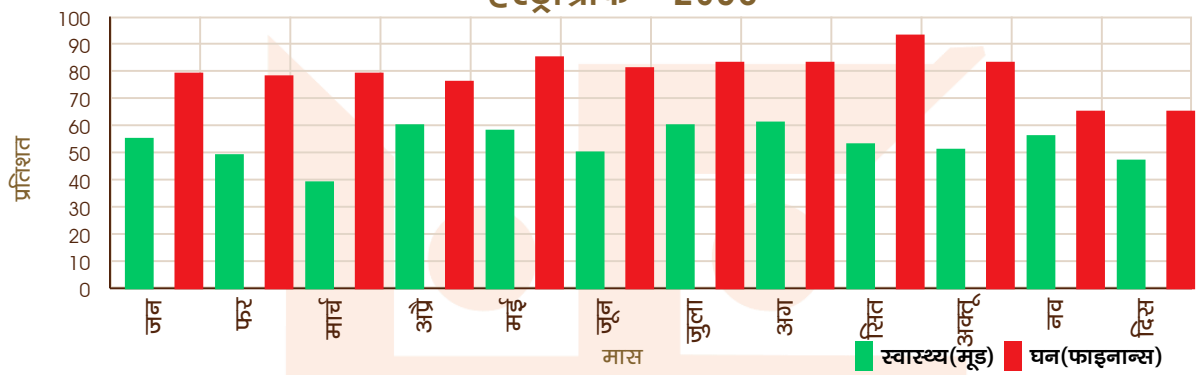

एस्ट्रोग्राफ – 2039

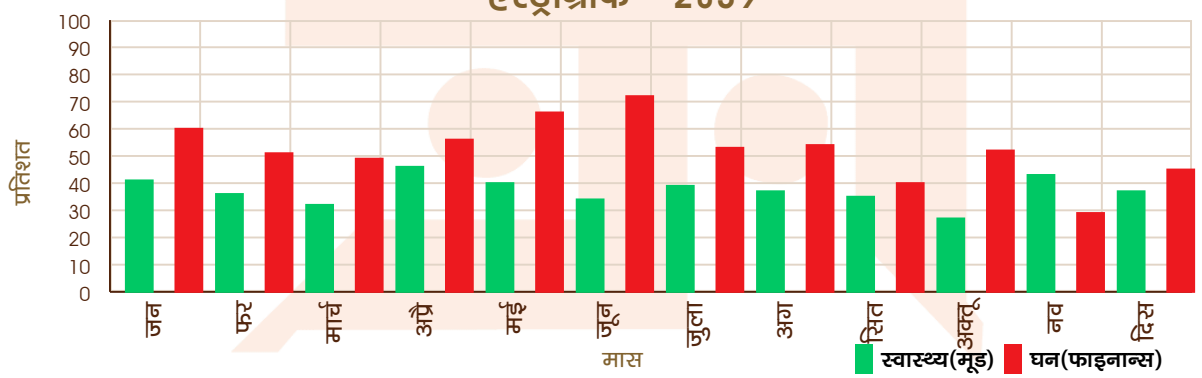

एस्ट्रोग्राफ – 2040

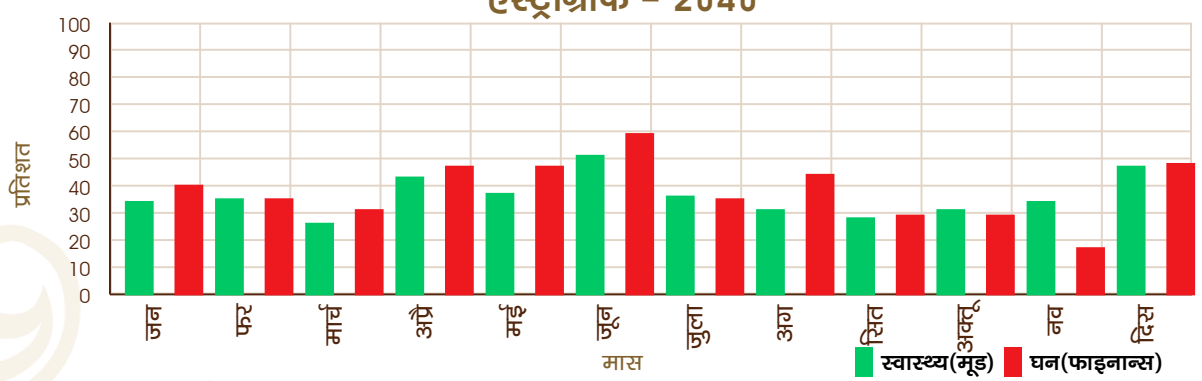

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ – 2041

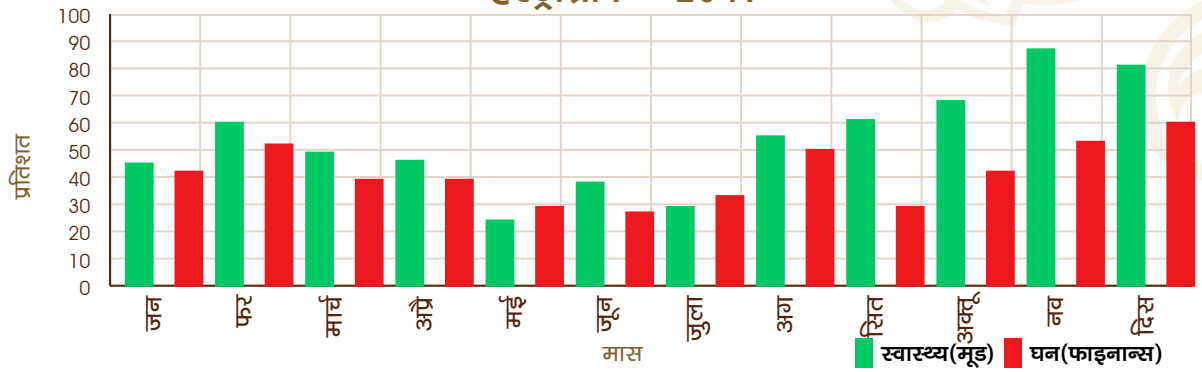

एस्ट्रोग्राफ – 2042

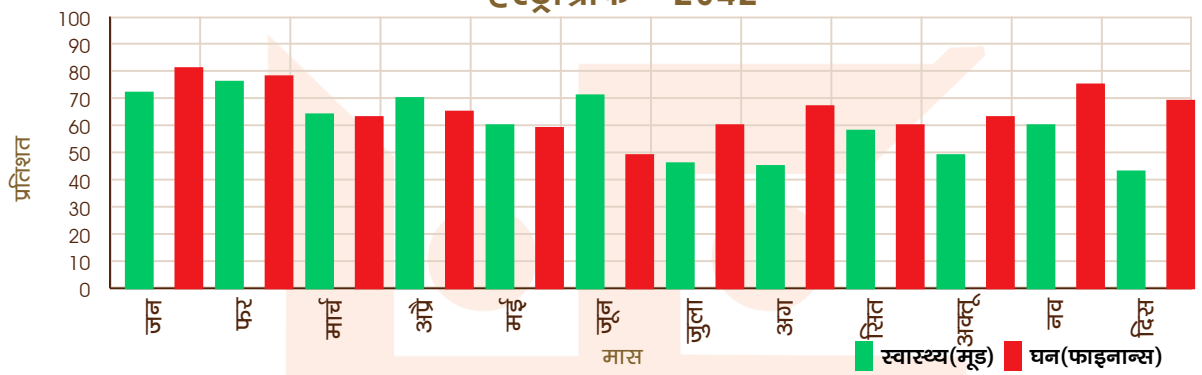

एस्ट्रोग्राफ – 2043

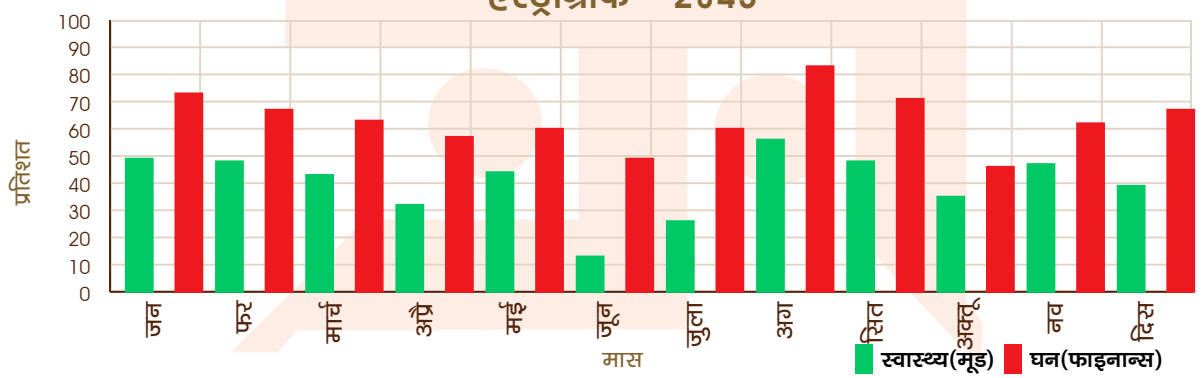

एस्ट्रोग्राफ – 2044

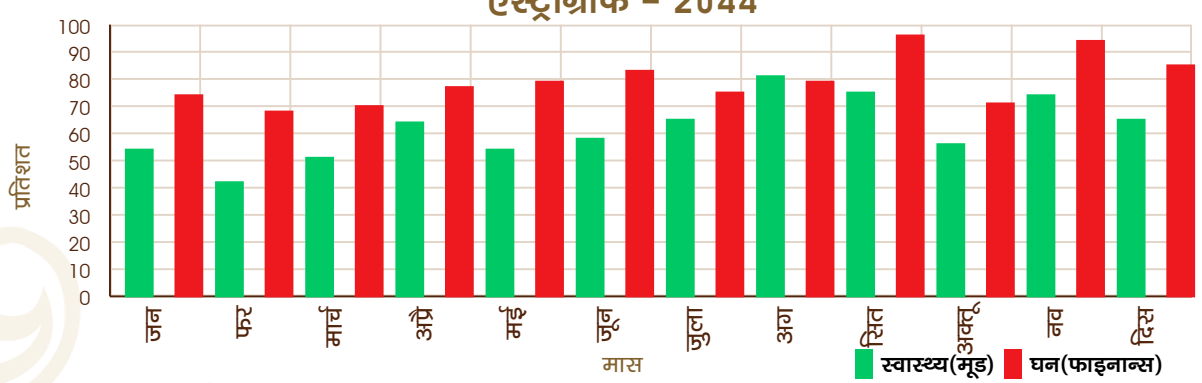

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

योग

शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठेऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः।।
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ।।
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-
बीणोपमाःखलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9, 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है। सेनाओं को एकत्रित (इक्ट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

वसुमनयोग

चन्द्राद्वा वसुमांस्तथोपचयगैर्लग्नात्समस्तैः शुभैः ।
तिष्ठेयुः स्वगृहे सदा वसुमति द्रव्याण्यनल्पान्यपि।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि सभी शुभ ग्रह लग्न से अथवा चन्द्रमा से गिनने पर तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश इन स्थानों में हो तो वसुमन योग होता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक सदैव घर में निवास करेगा और उसके पास बहुत द्रव्य होगा। पूर्व में परदेश में निवास करना कष्ट का लक्षण और अपने घर में रहना सुख का ल क्षण समझा जाता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 81 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, सुखी और भाग्यवान होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।

।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,राहु,केतु योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।

पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोऽथवा ।

।। फलदीपिका ।। अ.-10/श्लो.-2 ।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश संतान भाव में स्थित हो तो पत्नी या पुत्र मर जाता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी मर सकता है अथवा आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा संभाव्य है।

द्विभार्या योग

षष्ठेंगपे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश षष्ठ भाव में चला गया हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,बुध योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।